Namo Sakyamuni Buddha

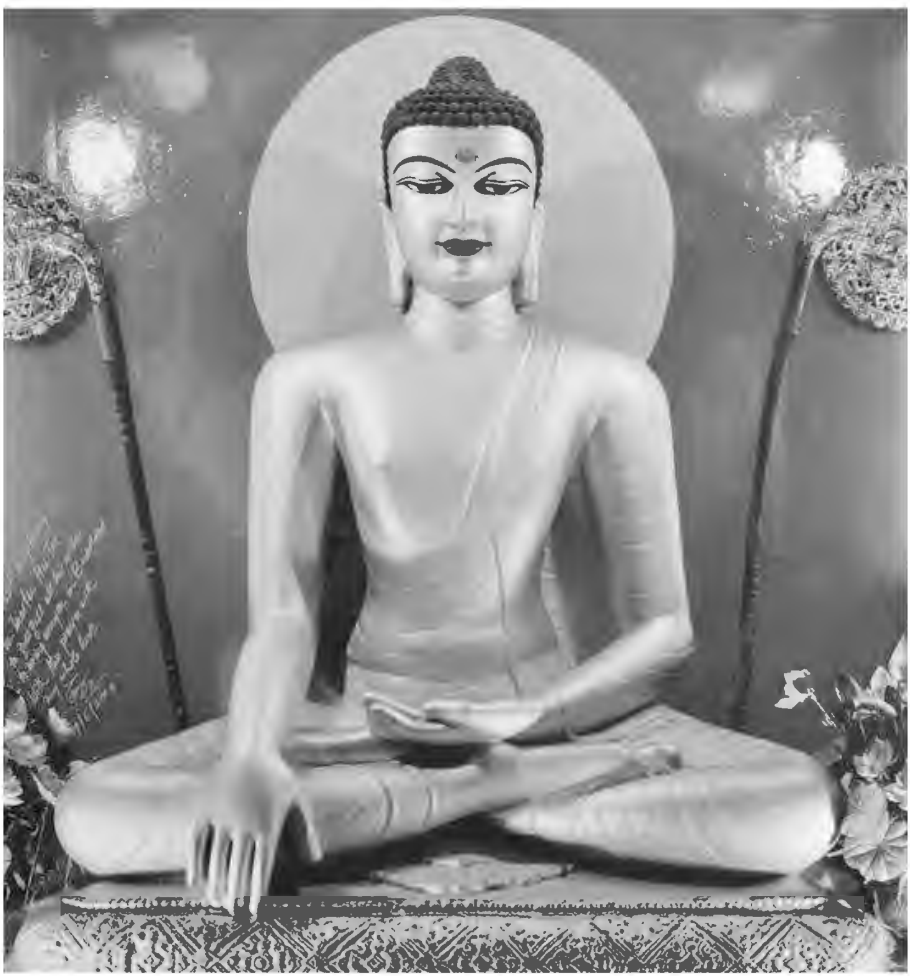

एशिया के रोशनी

(लाइट ऑफ एशिया)

मूल लेखक : सर एडविन आर्नाल्ड

संस्कारक : हृषीकेश शरण

एशिया के रोशनी

(लाइट ऑफ एशिया)

एशिया के रोशनी

(लाइट ऑफ एशिया)

मूल लेखक : सर एडविन आर्नाल्ड

संस्कारक : हृषीकेश शरण

@ हृषीकेश शरण

प्रथम संस्करण : 2013

प्रकाशक

हृषीकेश शरण

इस्ट ऐंड अपार्टमेन्ट्स,

ब्लॉक – 6, फ्लैट नं 103,

मयूर विहार फेज – 1 एक्सटेन्शन,

दिल्ली - 110096

मोबाईल : +919871212294

ई-मेल : hsharan@hotmail.com

Printed and donated for free distribution by
The Corporate Body of the Buddha Educational Foundation
11F, 55 Hang Chow South Road Sec 1, Taipei,
Taiwan, R.O.C.
Tel: 886-2-23951198, Fax : 886-2-23913415
Email: overseas@budaedu.org
Website: http//www.budaedu.org
This book is for free distribution, it is not for sale.
यह ग्रंथ निःशुल्क वितरण के लिए है बिक्री के लिए नही
Printed in Taiwan

ई किताब सादर समर्पित बा
हमार परम पूजनीय
दादीजी अउर दादाजी
नानीजी अउर नानाजी
माताजी अउर पिताजी
तथा
समस्त पूर्वज लोगन के

* * *

जिनकर कृपा के बिना ई संभव ना रहे ।

विषय–सूची

पृष्ठ संख्या

मूल लेखक के प्राक्कथन	i
आमुख	vi
दो शब्द	ix
प्रस्तावना	xii

पहिलका सर्ग :

जनम के पहिले के कथा	1
महारानी के सपना	2
जनम	3
आनन्दोत्सव	4
संत असित के आगमन	5
शिक्षा	7
देवदत्त अउर हंस के कथा	10
पिता के साथ नगर दर्शन	12
ध्यान के पहिला–पाठ	14

दूसरका सर्गः

राजा के चिंता	18
प्रेम	23
व्याध–पुत्र के कथा	24
बियाह के प्रस्ताव	25
शस्त्र परीक्षा	27
बियाह	30
कनक जड़ल साड़ी के रहस्य	31
रंगभवन विहार	32

तिसरका सर्गः

राजकुमार के अदृश्य संदेश	37
उद्‌बोधन	40
वृद्धावस्था	42
राजा के सपना	44
राजकुमार के पुनर्वहिर्गमण	47
व्याधिग्रस्त के देखल	49
मृत्यु के साँच	51

चउथा सर्गः

महाप्रयाण के घड़ी	54
यशोधरा के दुःस्वप्न	57
महाभिनिष्क्रमण	61

पाँचवां सर्ग :

प्रव्रज्या	73
हठ्योगियन से संवाद	76
किसा गोतमी	81
यज्ञ–बलि–दरशन	83
ब्राह्मण के शरीर–दान	87

छठवाँ सर्ग :

तपश्चर्या	91
तपश्चर्या–त्याग	93
सुजाता	95
बोधिवृक्ष	102
अभिसंबोधन	109

सातवाँ सर्ग :

यशोधरा के सुसंवाद	119

कपिलवस्तु आगमन 127
राम-लक्ष्मी के कथा 132

आठवाँ सर्ग :
धर्म-प्रवचन 139
ऊँ अमितायु ! 143
ओं मणिपद्मे हुं 152
आर्य सत्य 154
परिनिर्वाण 165

मूल लेखक के प्राक्कथन

नीचे लिखल काव्य में हम एगो काल्पनिक बौद्ध भिक्षु कवि के माध्यम से भारतवर्ष के उदारचेता वीर ओजस्वी नायक अउर सुधारक राजकुमार गौतम के जीवन चरित अउर उनकर दर्शन के चित्रित करे के कोशिश कइले बानी जे कि बौद्ध धरम के स्थापना कइलन ।

एक पीढ़ी पहिले ले यूरोप में एशिया के एह महान आस्था के बारे में नाम मात्र भा नाहीं के बराबर ज्ञान रहे हालाँकि एकर अस्तित्व चौबीस सौ बरस से रहल बा अउर आज एकर अनुयाइयन के संख्या अउर प्रभाव दोसर कवनों मत से ढेर महान बा । संसार के 47 करोड़ अनुयायी बुद्ध के शिक्षा के अनुपालन करत जीयेलें-मरेलें अउर एह प्राचीन आचार्य के आध्यात्मिक प्रभाव क्षेत्र आज के दिन नेपाल से श्रीलंका ले, पूरा पूर्वी प्रायद्वीप, चीन, जापान, तिब्बत, मध्य एशिया, साइबेरिया अउर इहाँ तक कि सुदूर स्वीडन के लैपलैंड तक ले मौजूद बा । हिन्दुस्तानो के नाम आस्था के एह विशाल साम्राज्य में जोड़ल उचिते होई हालाँकि बौद्ध धरम के अनुपालन जादेतर एकरा जन्मभूमिएँ से लुप्त हो गइल बा, बाकिर गौतम के उत्कृष्ट शिक्षा के अमिट छाप आधुनिक ब्राह्मणवाद पर देखल जा सकेला अउर हिन्दू लोग के अधिकांश विशिष्ट लक्षण, स्वभाव अउर उनकर दृढ़ मान्यता आ विश्वास मुख्य रुप से बुद्ध के हितैषी शिक्षा के ही परिणाम बा । एह तरह से एक तिहाई से जादे मानव जाति के नैतिक अउर धार्मिक सोच के श्रेय एह महान प्रदीप्तमान राजकुमार के जाता जिनकर व्यक्तित्व हालाँकि उपलब्ध जानकारी के आधार पर पूरा तरह से उपलब्ध नइखे तेहू पर इ उच्चतम श्रेणी के पूर्ण भद्रता, श्रेष्ठता अउर पूर्ण पवित्रता के प्रतिमूर्ति ओ महान मंगलकारी बा, जे कि चिंतन के इतिहास में एगो अपवाद के रुप में देखाई पड़त बाटे । पहिले के व्यौरन में विसंगति, बेमेल दुःखद विकृति के बोझ, शोध अउर भ्रांति के कारण भइल विचार के

भिन्नता के बावजूद, पूरा बुद्ध साहित्य एगो बिंदु पर सर्वसम्मत बा कि अइसन कहीं भी, कुछो लिखित उपलब्ध नइखे-एको करम या शब्द-जे हिन्दुस्तान के एह शिक्षक के पूर्ण पवित्रता अउर उनकर उदारता के ओछा देखावत होखे, जे कि सचमुच राजपरिवार के गुण, एगो ऋषि के प्रज्ञा अउर एगो शहीद के तीव्र, उत्कट भक्ति के समन्वय के प्रतिमूर्ति रहलें ।

इहाँ तक कि एम0 बार्थलेमी संत हिलारे, जे कि पूरा तरह से बौद्ध धरम के कई बिंदु के हमेशा गलत समझले बाड़े, उनकरो के उद्धत करत प्रो० मैक्समूलर राजकुमार सिद्धार्थ के विषय में कहले बाड़े "राजकुमार सिद्धार्थ के जिनगी बिलकुल निष्कलंक बा । उनकरा अंदर व्याप्त अनवरत दृढता उनकर जीवन दर्शन के प्रतीक बा । ऊ जे धरम सिद्धान्त के प्रसार कइले बाड़े भलहीं ओपर सवाल उठावल जा सकेला, बाकिर उनकर दीहल व्यक्तिगत जीवन शैली निर्विवाद बा । उनकर दीहल धरमोपदेश के ऊ खुदे जीवंत उदाहरण बाड़ें ।

उनकर समर्पण, उदारता अउरी दैवीय निश्छलता के एको छन खातिर नजरन्दाज ना कइल जा सकेला । छह साल के एकांत चिंतन-मनन के उपरांत ऊ आपन धरमसिद्धांत के प्रसन्नरुप से प्रतिपादित करत गइलें अउर पाँच दशक से भी जादे समय ले अटूट विश्वास के साथ आपन देव-वाणी द्वारा ओकर प्रसार करत गइलें । एगो अइसन महान संत जे जिनगी भर सद्कर्म कइलें अउर आखिरी सत्य के साक्षात्कार कइला के बादो लोक के भलाई खातिर तब तक काम करत गइलें जब तक आपन शिष्य लोग के बाँह में परिनिर्वाण के प्राप्त ना हो गइलें । नतीजतन गौतमे के मानवता के एह विस्मयकारक विजय के श्रेय जाला अउर हालाँकि ऊ करमकांड अउर धार्मिक अनुष्ठान के भर्त्सना कइले ; इहाँ तक कि निर्वाण के दुआरी पर खड़ा रहलो पर घोषणा कइलें कि ऊ उहे बाड़ें जे सभे बन सकेला ; तेहु पर प्रेम अउर सरधा का चलते एशिया के भक्तगण उनका आज्ञा के उल्लंघन कर के उत्साह से भरल उनकर पूजा अउर

आराधना करे लें । रोजे जंगल के जंगल मात्रा में फूल उनकर निष्कलंक पवित्र तीर्थ-मंदिर सब में चढ़ावल जाला, अउर लाखों अनगिनत मुँह बौद्ध मंत्र के जाप करत ना अघालें : "बुद्धं शरणं गच्छामि ।"

एह कविता काव्य के बुद्ध के अस्तित्व के बारे में कवनों शंका ना होखे के चाहीं कि वस्तुतः उनकर अस्तित्व रहे । उनकर जनम ईसा पूर्व 620 ईसवी में नेपाल सीमा पर आउर देहावसान 543 ईसा पहिले अवध राज्य के कुशीनगर में भइल । एह तरह से उमिर के आधार पर अधिकांश दूसर मत-संप्रदाय एह वन्दनीय महान धरम के तुलना में अबहियों किशोरे से अवस्था में बाड़ें , जेकरा में सर्वव्यापक आशा के शाश्वत, असीम प्रेम के अमरता, अंततः अनश्वर कल्याण के आस्था तत्व अउर मानव मुक्ति खातिर कबहुओं व्यक्त सर्वाधिक स्वाभिमानी सशक्त अभिकथन - ई सब समाहित बा । बौद्ध साहित्य अउर एह धरम के अनुपालन में जौन मर्यादाहीनता के कलंक लउक जाला ऊ, एह धरम के अपरिहार्य पतन के वजह भइल बा जे कि आमतौर पर पुजारी-प्रपंच का चलते हमेशा उनकर दिहल विचार अउर शिक्षा में छेड़छाड़ के चलते पैदा होला । गौतम के मूल सिद्धान्त के शक्ति अउर महत्ता के आकलन ओकरा प्रभाव के आधार पर होखे के चाहीं, नाकि उनकर दुभाषिया द्वारा अउर ना त ओह अबोध बाकिर आलसी अउर धार्मिक रस्म के आधार पर, जे कि बौद्ध धरम के भ्रातृत्व यानी 'संघ' का चलते पैदा हो गइल बा ।

हम अपना कविता के एगो बौद्ध भिक्षु के मुखारबिंद के माध्यम से प्रस्तुत कइले बानी काहेंकि एशिया के विचारधारा के आत्मा के अनुशंसा खातिर उनका के पूरब के दृष्टिकोण से ही देखल जाए के चाहीं । नाहीं त पुस्तक में वर्णित चमत्कार अउर ना एमें समाविष्ट दरशन के वृतांत ही स्वाभाविक अउर सहज ढंग से परोसल जा सकत रहे । उदाहरण खातिर पुनर्जन्म के सिद्धान्त, जे कि

आधुनिक मानसिकता के चौंका देला, बौद्ध काल में पूर्णतः स्थापित तथा हिन्दूलोग द्वारा स्वीकृत हो चुकल रहे ; ओह समय में जब कि नेबूचडनेजार जेरुसलम पर अधिकार जमावे जात रहलें अउर जब नीनेवे के मेडीस के हाथ से पतन होत रहे अउर जब फोनेशियन मरसीलिज के स्थापना कइलें । इहाँ प्रतिपादित अति पुरातन काल के वृत्तांत जरुर आधा-अधूरा रहल स्वाभाविक बा, काहेंकि कविता कला के आज्ञा के अनुपालन करे में अनेक दार्शनिकता के दृष्टिकोण से अति महत्वपूर्ण विषयन पर अउर गौतम के लंबा कार्यकाल पर भी मात्र सरसरी ढंग से ही प्रकाश डालल जा सकत रहे । बाकिर ई पवित्र राजकुमार के स्वर्णिम उदात्त चरित्र के अवधारणा के बारे में बताके, अउर उनकर शिक्षा के सामान्य अभिप्राय के प्रतिपादित कर के, हमार उद्देश्य के पूर्ति हो गइल बा । एह परवर्ती विषय पर सुशिक्षित पंडितन के बीच आश्चर्यजनक वाद-विवाद उठ खड़ा भइल बा जे संभवतः जानत होइहें कि हम अपूर्ण बौद्ध उद्धरण के सहारा लेहलें बानी, जइसन स्पेन्सर हार्डी के रचना में मिल जाला, अउर प्राप्त आख्यान में एक से अधिक उद्धरण के संशोधितो कइले बानीं। बाकिर इहाँ पर 'निर्वाण', 'धरम', 'करम' अउर बौद्ध धरम के अनेक विषयन पर दृष्टिकोण कम से कम विचारशील गहरा अध्ययन के प्रतिफल बा, अउर ई सुनिश्चित दृढ़ सोच के परिणाम बा कि एक तिहाई मानव जाति के ना त शून्य, कोरी परिकल्पना में विश्वास दिलावल जा सकेला, अउर ना ही निराकार अउर प्राणी सब के शीर्ष विजेता में आस्था ही जगावल जा सकेला ।

अंततः ई 'लाइट आफ एशिया' के लब्ध प्रतिष्ठित प्रवर्तक के प्रति श्रद्धावश अउर अनेक ज्ञानी श्रेष्ठ विद्वानन के श्रद्धांजलि के रूप में, जे उनकर स्मृति में योग्य श्रम समर्पित कइले बाड़ें, जेकरा समान आत्मसंयम अउर योग्यता दूनों के हमरा में अभाव बा, हमार प्रार्थना बा कि अति शीघ्रता में कइल अध्ययन से उठल कमी खातिर हमरा के क्षमा करब । ई रचना बिना कउनों अवकाश के समय के छोटा-छोटा अन्तराल में लिखल गइल बा, बाकिर ई हमार प्राच्य अउर

पाश्चात्य के आपस के ज्ञान अउर बेहतर समझदारी के दृढ़ अभिलाषा से प्रेरित बा । संभवतः ऊ समय आई, हम आशा कर तानी, जब ई पुस्तक अउर हमार "इंडियन सांग ऑफ सांग्स" अउरी "इंडियन इडिल्स" ओह व्यक्ति के याद के बनवले राखी जे भारत अउर भारत के लोग से प्यार करत रहे।

एडविन आर्नाल्ड

आमुख

शाक्य मुनि बुद्ध के बौद्ध धर्म में 'विश्व-ज्योति' कहके संबोधित कइल गइल बा । सर एडविन आर्नाल्ड बुद्ध के जीवन से प्रेरणा ले पूरा विश्व के उनकर सारगर्भित संदेश से अवगत करावे खातिर 'लाइट ऑफ एशिया' काव्य ग्रंथ के रचना कइलें । ऊ सिद्धार्थ बुद्ध के 'लाइट ऑफ एशिया' के रूप में काहें प्रस्तुत कइलें एकर उल्लेख कहीं ना मिलेला । शायद ए खातिर कि सिद्धार्थ के जनम एशिया महाद्वीप में भइल रहे तथा ए खातिर भी कि 'लाइट ऑफ एशिया' ग्रन्थ के रचना करत समय महाकरूणामय बुद्ध के संदेश एशिया महाद्वीप तक ले सीमित रहे । संभवतः एही दू कारणन से 'लाइट ऑफ एशिया' नामकरण भइल होई । बाकिर हमार अनुमान बा यदि ओह समय लेखक ए ग्रंथ के नाम 'लाइट ऑफ एशिया' ना दिहले रहिते त शायद ई एतना लोकप्रिय ना होइत । पश्चिमी देशन के लोग एशिया के संस्कृति के बारे में आजो खोज करत बाड़े काहे कि इहाँ के संस्कृति अउर दरशन उनकरा खातिर आजो रहस्य के विषय बा । एह के कई गो कारण बा-रामचरितमानस के नायक मर्यादा पुरूषोत्तम राम, महाभारत के कृष्ण, चाणक्य, कन्फ्यूसियस जइसन महादार्शनिक के उद्भव एशिये में भइल बा । वेद-वेदान्त में सांसारिक दर्शन एवं जीवन दर्शन के साथे साथे धरम दर्शन के उल्लेख भी बड़ा गंभीरता से कइल बा । सनातन धरम के दर्शन एतना गंभीर बा कि एकरा के जाने-समझे खातिर पश्चिमी देशन के विद्वानन में हमेशे उत्सुकता बनल रहेला ।

सिद्धार्थ बोधिसत्व के रूप में सारा संख्य, कल्पलक्ष तक दान, शील, प्रज्ञा, नैरासक्म्य, सत्य आदि पारमिता ए खातिर प्राप्त कइलन ताकि दुखीजन के सुखिता-मुदिता के नया मार्ग देखा के दुख आ निराशा से भरल संसार से मुक्ति दिया सकस ।

ए भौतिक संसार में बुद्ध के जनम राजकुमार सिद्धार्थ के रूप में एगो सनातन परिवार में भइल रहे । ओ राजपरिवार में उनकरा कउनों भौतिक सुख-सामग्री भा सांसारिक सुख के कमी ना रहे, बाकिर संसार के दुःख के कारण व निवारण जाने खातिर ऊ महाभिनिष्क्रमण कइलें । महाभिनिष्क्रमण के बाद सिद्धार्थ ओह समय के जम्बूद्वीप के प्रसिद्ध ऋषिमुनि जइसे आलार कलाम, उद्धक रामपुत्र के पास जाके आध्यात्मिक दीप जलावे के मार्ग के बारे में विचार आ चिंतन-मनन कइलें । उनकरा साथ विचार-मंथन एवं ध्यान-भावना के बादो भी तपस्वी सिद्धार्थ के अभिलाषा पूरा ना हो सकल । तत्कालीन भारतवर्ष में जेतना सम्मानित ऋषि-मुनि रहलें ओ सबसे सम्पर्क कइलें अउर जौन भी आध्यात्मिक ज्ञान ग्रहण हो सकत रहल ओकरा के ग्रहण कइलें । तबो तपस्वी सिद्धार्थ के मनोरथ पूरा ना हो सकल । तब ऊ कामसुख्खलिकानुयोग अउर अन्तकिलमतानयोग दूनों के त्यगलें । फिर गयाशीर्ष में एगो विशाल पीपल के पेड़ (बोधिवृक्ष) के नीचे बइठ के दशबिंबसार सेना के पराजित कइलें । ओकरा बाद सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प आदि आठ अंगन से परिपूर्ण मध्यम मार्ग के माध्यम से बुद्ध-ज्ञान-लाभ (बुद्धत्व) प्राप्त कइलें । बुद्धत्व प्राप्ति का बाद सिद्धार्थ 'महाकारुणिक बुद्ध' के नाम से जानल गइलें ।

'लाइट ऑफ एशिया' के विश्व के कई भाषा में अनुवाद हो चुकल बा अउर एकर कई संस्करण अनेको बार प्रकाशित हो चुकल बा । प्रस्तुत कृति 'एशिया के ज्योति' भोजपुरी भाषा में एगो नूतन प्रयास बा । एडविन आर्नाल्ड के मूल पाठ कविता के रूप में बा । अब भोजपुरी पाठक खातिर इ कृति सरल, सुगम भोजपुरी गद्य में प्रस्तुत करे का दिसा ई एगो प्रयास बा । अवकाश प्राप्त मुख्य आयुक्त हृषीकेश शरण भोजपुरी के धरमप्रिय पाठकन का सम्मुख ई रचना के प्रस्तुत करके एगो महान कार्य कइले बाड़े ।

ए महान कार्य में योगदान दिहला खातिर श्री हृषीकेश शरण के महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया का ओर से त्रिरतन (बुद्ध, धरम, संघ) के आशीर्वाद खातिर प्रार्थना कर तानी ।

भवतु सव्व मंगलम

डॉ॰ डी॰ रेवत् थेरो
महासचिव
कोलकाता **महाबोधि सोसायटी ऑफ इंडिया**

दो शब्द

भोजपुरी के साहित्य-भंडार में एगो अनुपम आ कालजयी अवदान का रूप में प्रस्तुत बा ई विशिष्ट ग्रंथ 'एशिया के रोशनी' जे कि विश्व-प्रसिद्ध ग्रंथ 'लाइट ऑफ एशिया' के भोजपुरी अनुवाद ह । एकर अनुवादक हईं भारत सरकार के सीमा एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के सेवानिवृत महानिदेशक श्री हृषीकेश शरण जी । एह गौरव ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद भी उहाँ का पहिले प्रस्तुत कर चुकल बानीं । भोजपुरी वाड्मय खातिर त ई गौरव के बात बा कि अइसन विश्व-प्रसिद्ध आ कालजयी ग्रंथ के भोजपुरी में भी अनुवाद सुलभ हो गइल, जवना खातिर अनुवादक श्री हृषीकेश शरण जी भोजपुरी-भाषी लोगन का ओर से साधुवाद के पात्र बानीं । जवना शीर्ष पद पर उहाँ का प्रतिष्ठित रहनीं, ओकरे समतुल्य उहाँ के ई काम हो गइल, जे कि भोजपुरी साहित्य खातिर अनमोल निधि हो गइल बा ।

मूल अंग्रेजी में एह विशिष्ट ग्रंथ के साठ संस्करण इंग्लैण्ड में आउर अस्सी संस्करण अमेरिका में हो चुकल बा । आ आजो दुनिया के अनेक भाषा में छप रहल बा । भोजपुरी खातिर ई गौरव के बात बा कि एकर रूपान्तरण भोजपुरी में भी हो गइल, जवना के श्रेय श्री हृषीकेश शरण जी के बाटे ।

आज अधिकांश जननायक, विद्वान, चिन्तक सन्त-महात्मा आउर आर्य पुरूष महात्मा बुद्ध के उद्धृत करेलें, बाकिर सप्रसंग व्याख्या जवन धम्मपद के माध्यम से कथा-दर-कथा पहिले पाली में आ ओकरा बाद हिन्दी में, आ अन्त में जातक कथा के श्रृंखला में प्रासंगिक व्याख्या-विश्लेषण कइल गइल बा ऊ अप्रतिम बा, जवनाकि 'न भूतो न भविष्यति' माने के होई ।

जहाँ तक राजकुमार सिद्धार्थ के जीवन के प्रश्न बा, प्रो0 मैक्समूलर के ई कथन चिरस्मरणीय रही कि राजकुमार सिद्धार्थ के जीवन सर्वथा

निष्कलंक रहल । उनका भीतर के अविरल दृढ़ता उनकर जीवन–दर्शन के प्रतीक ह । जौन धर्म–सिद्धान्त के प्रसारित कइल गइल, ओहपर भलहीं प्रश्न उठावल जा सकेला, बाकिर उनकर व्यक्तिगत जीवन–शैली निर्विवाद ह । ऊ जे धर्मोपदेश कहले ओकर जीवन्त उदाहरण ऊ खुदे रहल बाड़े । कबीर के जइसन जे देखले, से ही कहले । कबीर के बानी ह :–

(I) तू कहता कागज की लेखी ।
मैं कहता आँखिन की देखी ।।

(II) लिखा–लिखी की है नहीं, देखा–देखी बात,
दुल्हा–दुल्हिन मिलि गये, फीकी पड़ी बरात ।

कवनो सृजनात्मक रचना गढ़े खातिर जबतक हृदय में झंझावात ना उठी, तब तक रचना उत्तम आ मौलिक ना बन सकेला, खासकर तब जबकि विषय गूढ़ आ आध्यात्मिक रहस्य से सम्बन्धित होखे । महात्मा बुद्ध के जीवन आ शिक्षा के चित्रण सर एडविन आर्नाल्ड अपना 'लाईट ऑफ एशिया' में कइले बाड़े ओकर सफल अवतरण श्री हृषीकेश शरण जी के भोजपुरी अनुवाद में भइल बा, जे कि भोजपुरी–साहित्य के अनुपम धरोहर हो चुकल बा ।

'लाइट ऑफ एशिया' एगो कालजयी कृति का रूप में समाहत हो चुकल बा । अब ई विशिष्ट कृति भोजपुरी साहित्य के भी श्रीवृद्धि कर रहल बा ।

जहाँ तक एह विशिष्ट ग्रंथ के भोजपुरी में प्रस्तुति के प्रश्न बा, भोजपुरी माई का गोदी में जनमल श्री हृषीकेश शरण जी भारत सरकार के सीमा एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के महानिदेशक के शीर्षस्थ पद पर रहते हुए एतना गहन आ गूढ़ विषय से संदर्भित कृति के भोजपुरी में अवतरण कइले बाड़े, ई भोजपुरी माटी के एह अनुपम सन्तान से ही सम्भव हो सकेला । एह विशिष्ट अवदान

खातिर ना सिर्फ भोजपुरी के साहित्यकार लोग बलुक समस्त भोजपुरी-भाषी जनता श्री हृषीकेश शरण जी के प्रति कृतज्ञ रही ।

इहाँ सोचे के एगो बात ई जरूर उठेला कि जवना गौतम बुद्ध के जनम ईसा के छौ सौ बीस बरिस पहिले नेपाल के सीमा पर लुम्बिनी में भइल, आ देहावसान भी कुशीनगर में 543 ईसवी पूर्व में भइल, जिनकर कार्यक्षेत्र भी मुख्यतः आर्यावर्त रहल, ओही बुद्ध के बौद्ध धर्म भारते से काहे निष्कासित हो गइल ।

एह महत्वपूर्ण ग्रंथ के भोजपुरी में प्रस्तुतीकरण के औचित्य एह से भी बा कि बुद्ध के जनम आ कार्यक्षेत्र मुख्य रूप मे भोजपुरी क्षेत्र रहल बा । एह से एह ग्रंथ के भोजपुरी में अनुवाद के सर्वथा औचित्य बा; आ हम एकर हार्दिक स्वागत करत बानीं ।

इति शुभम् !

पटना

पाण्डेय कपिल

प्रस्तावना

सन् 1879 में कवि सर एडविन आर्नाल्ड के कालजयी रचना "लाइट ऑफ एशिया" पहिल बेर इंगलैण्ड में प्रकाशित भइल । उनकर ई महाकाव्य शाक्य-मुनि गौतम बुद्ध के जीवन पर आधारित रहे । प्रकाशित होतहीं ई पुस्तक पाश्चात्य जगत में महात्मा बुद्ध के महानता के अपार धूम मचा देहलस । पश्चिमी जगत एह राजकुमार महात्मा के चरित्र से एतना ज्यादे प्रभावित भइल कि इंगलैण्ड में एकर 60 अउर अमेरिका में 80 सस्करण छपल अउर तब से एह पुस्तक के संस्करण छपते चलल जा रहल बा । संसार के अनेक भाषा में एकर अनुवाद हो चुकल बा ।

बुद्ध के जनम लुम्बनी में भारत नेपाल सीमा पर भइल रहे। उनका बोधगया में पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान के प्राप्ति भइल । सबसे पहले आपन पाँच शिष्य लोग के सारनाथ में शिक्षा देलें अउर फिर गोरखपुर के पास कुशीनगर में महापरिनिर्वाण प्राप्त कइलें । एह तरह से उनकर कर्मभूमि में संपूर्ण भोजपुरी क्षेत्र समाहित रहे । एसे एह क्षेत्र के लोग के पहिला अधिकार बा कि ऊ लोग आपन मातृभाषा में महानायक बुद्ध के शिक्षा से लाभान्वित होखस ।

एसे विचार में आइल कि काहे ना "लाइट ऑफ एशिया" के भोजपुरी में अनुवाद कर देहल जाव । अउर अब तथागत के आशीर्वाद से ई कृति अपने सभन के सामने परोसल जा रहल बा ।

एडविन आर्नाल्ड "लाइट ऑफ एशिया" के प्रस्तावना में लिखले बाड़न कि संसार-भर के समूचा बौद्ध साहित्य कम से कम एगो बिंदु पर पूर्णतः एक मत बा ; विभिन्न धारा में मतैक्य बा कि

एह महान शिक्षक के दयामय, करूणामय अउर परम पवित्रता से परिपूर्ण चरित्र में एको दोष नइखे दीखल । मानव के अंदर विद्यमान चरम सर्वश्रेष्ठतम गुण के एह चरित्र में समावेश देखल गइल बा, अउर एह प्रकार से बुद्ध समस्त मानव जाति के सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि बाड़े ।

बुद्ध हमनी सब जइसन आदमी रहलें अउर बुद्धत्व से पहिले (बोधिसत्व तक) जातक कथा में एकर जिकिर आवेला कि उनकरो अंदर कमजोरी सब रहे, बाकिर ऊ कमजोरियन से शिक्षा ग्रहण कइलें अउर ओकरा के सीढ़ी बना के आगे बढ़त गइलें । जिनगी के सत्य देखलें त ओके नकरलें ना, अउर ईमानदारी से ओकरा शोध में जुट गइलें । हमनियों का सैकड़न बीमार, बूढ़ अउर मूअल के देखेनीं बाकिर जनम–जरा–मृत्यु के समस्या से मुँह मोड़ लेनीं काहेकि हमनी सब के तत्काले सांसारिक वस्तु फेर से शाश्वत लागे लागेला । एही वजह से हमनीं के जीवन भर अउर एक जीवन से दूसर जीवन में आपन सांसारिक परिधि में ही घूमत रह जानीं । सिद्धार्थ खातिर समस्या के गंभीरता देखे ला एगो मुअल पर्याप्त रहे जइसे उबलल चाउर के एके दाना से पता चल जाला कि चाउर पाक गइल बा कि ना । ऊ ओह समस्या के पकड़ले रखलें, ओसे जूझत गइलें, अंत तक ओकरा के ना छोड़ले । आखिर निराश होके समस्या के आपन स्वरूप देखावे के पड़ल, आपन रहस्य खोले के पड़ल । उ 'गौतम' से 'गौतम बुद्ध' अउर 'मानव' से 'महामानव' हो गइलें ।

बुद्ध के चरित्र एतना सशक्त आ दमकत बा कि कवनो समर्पित पाठक ओकरा से प्रभावित भइले बिना ना रह सकेला । तथागत के जिनगी से प्रेरणा ले के हमनीं सब त्रिरत्न (बुद्ध, धरम अउर संघ) में स्थापित होखीं, जीवन के उद्देश्य के समझ सकीं (जइसे शाक्य मुनि 2600 बरस पूर्व कइलें), हमार शाक्य मुनि से ईहे करबद्ध प्रार्थना बा ।

यद्यपि हम एह पुस्तक के हर प्रकार से शुद्ध राखे के कोशिश कइले बानीं तेहू पर अशुद्धि होखल स्वाभाविक बा काहेकि एह पुस्तक में हम व्याकरण के तुलना में सार अउर भाव पर ज्यादा ध्यान देले बानीं । एह से अगर व्याकरण के कौनों त्रुटि मिले त पाठकगण हमरा के क्षमा करीं । ओह लोग से निहोरा बा कि उहाँ सभन सब त्रुटियन के सूचित करे के कष्ट करीं जेमे भविष्य में उन्हनीं के सुधारल जा सके ।

हम ओह सब लोग के प्रति कृतज्ञ बानीं जेकरा अथक प्रयास अउर मदद से ई कृति अपने के हाथ में पहुँच सकल विशेषकर डॉ॰ के॰ एन॰ पी॰ श्रीवास्तव जी तथा पांडे कपिल जी के प्रति । पांडेजी अगर गहराई मे जाकर एकरा के संशोधित ना करते त ई कृति हिंदी के बोझ से बोझिल हो सकत रहे । ऊ सब लोग त्रिरत्न के आशीर्वाद के पात्र बाड़ें ।

हम मुद्रक बुद्धा एजुकेशनल फाउण्डेशन कारपोरेट बाडी, ताइवान तथा डॉ. डी. रेवत् थेरो, महासचिव, महाबोधि सोसायटी ऑफ इंडिया के भी एह पवित्र कार्य खातिर धन्यवाद दे तानी ।

हृषीकेश शरण

पहिलका सर्ग

जनम के पहिले के कथा

ई कथा संसार के तारणहार भगवान बुद्ध के ह जे ए धरती पर राजकुमार सिद्धार्थ के रूप में आइल रहलें । तीनों लोक में अतुलनीय, परम पूजनीय, करूणानिधान, सर्वबुद्धिमान, सर्वश्रेष्ठ, सबसे दयावान अउर सबसे सम्मानित विद्धानन में सर्वोच्च बुद्ध के दोबारा अवतार ए संसार के भवसागर के पार ले जाये खातिर भइल । धरम चक्र के संस्थापक, निर्वाण के गुरू, मानव मात्र के नश्वरता के बारिकी अउर गहराई से समझे वाला, दयालु बुद्ध भगवान हमेशा सम्यक पथ-प्रदर्शन खातिर उद्यत रहेलें । सबसे उत्तम अउर शुभ ग्रहयोग में मानव जाति के उद्धार अउर दुबारा जागृत करे खातिर फेर से अवतार लिहलें ।

सदियन से ए सुव्यवस्थित संसार में पावन आत्मा सब आपन शरीर छोड़ला के बाद तीस हजार साल तक प्रतीक्षा करे लें तब नया जीवन मिलेला । बुद्ध भी अइसने इंतजारी करत रहलें जब उनकरा जीवन के पाँच चिंह्न परगट भइल । देवता लोगन के एह चिंह्न के ज्ञान रहल । एही खातिर ऊ लोग कहलें, "बुद्ध फेर संसार में लोगन के कल्याण के खातिर शरीर धारन करब ।"

बुद्ध भी एके स्पष्ट कइलें, "हम संसार के मदद खातिर आवतानी । कई बार जा चुकल बानी और अंतिम बार जा तानी । जे भी लोगन के बीच रहके धरम अउर हमार नियम के पालन करी, ऊ सब लोग जनम मरण के झंझट से पार हो जाई । हम हिमालय के दक्खिन में शाक्य वंश में जनम लेब, जहाँ (भारत-नेपाल के मौजूदा सीमा पर स्थित कपिलवस्तु) में एगो न्यायप्रिय राजा शासन करे लन अउर जहाँ धरमनिष्ठ प्रजा रहेले ।

महारानी के सपना

ओही रात शाक्यवंशी महाराजा शुद्धोदन के पत्नी माया सुबह के पहिला पहर एगो अजबे सपना देखली, "गुलाबी किरिन जइसन तारा स्वर्ग से निकलल, जे पहिले छौ दाँत वाला हाथी अउर फेर उज्जर कामधेनु के रूप में बदल गइल अउर फेर दूर आसमान से तेजी से उतर के दाहिना ओर से रानी के कोख में प्रवेश कर गइल । महारानी ओही रात गर्भवती हो गइली । एह आनन्द देवेवाला संयोग के प्रभाव पाताल-लोक तक ले गइल, अइसन लागल जइसे अन्हार के चीर के सूरज के रोशनी बहुते जादे कड़ा हो गइल होखे । रानी जगली त उनका अलौकिक आनन्द के अनुभूति भइल । रानी के खुशी के असर चारों ओर लउके लागल । ब्रह्मवाणी के घोषणा भइल, "बुद्ध के पदार्पण हो गइल बा" जेके सुन के सकल जड़-चेतन, चराचर जगत आनन्दित हो उठल । लहर शांत हो गइल, पर्वत हिल गइल । पूरब दिशा में नवप्रभात के अइसन मनोरम दृश्य लउकल जइसे कि धरती के हरेक कण प्रदीप्तमान हो उठल होखे । दूपहर में खिले वाला फूल भोर के पहर अइसन फूलाये लागल, जइसे दूपहर हो गइल होखे । स्वर्ग के सब हिस्सन में असीम शान्ति छा गइल । नया ताजगी से भरल हवा धरती अउर समुन्दर पर बहे लागल । ज्ञानी साधु समझ गइलन कि संसार में कुछ अनोखा आउर अलौकिक घट चुकल बा ।

भोर भइल कि एगो ज्ञानी सिद्ध स्वप्न-वाचक अइलें आउर राजा से कहलें, "सपना उत्तम बा । कर्क आ सूरूज के उत्तम योग से रानी एगो स्वस्थ, सुन्दर अउर पवित्र बालक के जनम दीहें जे कि बहुते चमत्कारी व विवेकशील होइहें आउर जे लोगन के हित में परोपकारी ज्ञान देके मानव जाति के अज्ञानता के गुलामी से मुक्त करइहें । नाहीं त अगर जो ऊ शासन करे के कृपा करिहें त सारा संसार के सम्राट होके पूरा संसार पर शासन करिहें।

जनम

प्रसव के काल नजदीक आवते महारानी आपन बाबूजी के घरे खातिर निकल गइली । वन से जात समय दूपहरिया हो गइल । महारानी जी ओह घना जंगल में पलाश के पेड़ के डार पकड़ के आराम करे लगली । तब पेड़ के सब डाली झुक के उनकरा के छाया देवे लगलन आ आसमान से बरसत फूल उनका राह में कालीन जइसन बिछ गइल । चट्टान के छाती चीर के झरनन के निर्मल, शीतल जल उनकर प्यास बुझावे ला लालायित हो उठल । अइसन लागत रहे जइसे प्रकृतियो के बुद्ध के आगमन के आभास हो गइल रहे । एह मनोरम दृश्य के रस ले के सारा प्रकृति धन्य हो गइल । ओही मनभावन जगह पर महारानी बिना कौनो कष्ट के राजकुमार सिद्धार्थ के जनम दे दिहलीं । कहल जाला कि ई अदभुत बालक जनम लेते सात डेग चललन अउर जहाँ–जहाँ उनकर चरन पड़ल उहाँ–उहाँ धरती से कमल के फूल निकल आइल । जनम के समय बालक के शरीर पर 32 शुभ लक्षण अंकित रहे । बुद्ध लड़का का रूप में धरती पर ऐसे अवतार लेहलें मानों प्रकृति के गोद में एगो फूल जइसन बालक आपन मुसकान बिखेरत होखे ।

दासन से ई शुभ समाचार सुन के महाराजा महारानी माया आउर नवजात शिशु के ले आवे खातिर एगो सुसज्जित, मृदुल, मनोहारी शाल से बनल, कलाकृति से भरपूर खूब सुन्दर पालकी भेजलन, जेके ढोवे ला धरती के दिशा के प्रतिशासक सुमेर से उतर अइलें । लोगबाग के सब कर्मफल लिखे वाला ई प्रतिशासक लोग ओह नवजात बालक के सामने सिर झुका के खड़ा रहलन । पूरूब दिशा के देवदूत जे मोती जड़ल चाँदी के वस्त्र धारण करें लें, दक्खिन के देवदूत जिनकर घुड़सवार कुंभनदास नीलम के ढाल से लैस नीला घोड़न के सवारी करे लन, ऊ सब लोग आ के खड़ा हो गइलें । पच्छिम के देवदूत मूंगा के लाल रंग के ढाल लेके, जे रक्त के समान घोड़ा पर सवार होखे लन और उत्तर के देवदूत आपन यक्ष से घिरल

ढाल से युक्त सुनहरा घोड़न पर सवार हो के अद्वितीय सज–धज के साथ, बहुते प्रसन्न मन से धरती पर अइलें अउर सामान्य वेश–भुषा धारण करके पालकी के कंधा देवे लगलें । पालकी के ढोवे वाला शक्तिशाली देवलोग लोगन के बीच साधारण भेष में स्वछन्द विचरत रहलें आ ओह लोग के केहू पहचान ना पावल । एह तरह बुद्ध के मरण लोक में दुबारा आगमन से धरती आ स्वर्ग आनन्द में डूब गइल ।

खुद महाराजो ओ समय अपना बेटा के रूप में जनम लेहल बुद्ध के बारे में कुछ ना जान पइलन अउर बुद्ध के ना पहचान पइलन । ओने घटल कुछ अमंगल बात उनकरा के दुखी करत रहे । तब स्वप्न द्रष्टा लोग उनकर चिंता दूर करत बतवलन कि राजकुमार सारा धरती के शासक बनिहन आउर अइसन दक्ष चक्रवर्ती महाराजा हजार बरिस में एके बेर शासन करे आवेलन । राजकुमार सात रतन (प्रतिभा) से विभूषित होइहन । उनकरा प्राप्त होई : पहिला : चक्र–रतन–ईश्वर के दीहल चक्र, दूसराः घोड़ा–रतन–अइसन स्वाभिमानी घोड़ा जौन बादलन पर भी यात्रा कर सकेला, तीसराः हाथी–रतन बरफ के जइसन उज्जर हाथी जौन आदमी के ले के तेज गति से चली, चौथाः जनम से ही धैर्यवान, पाँचवांः नीति ज्ञानी, छठाः दिवाकर के जइसन अजेय एवं सातवाँः स्त्री रतन–जेसे ऊषाकाल से भी ज्यादा सुन्दर, अद्वितीय लावण्यमयी पत्नी प्राप्त होली । सुनतहीं राजा के दिल उल्लास से भर उठल ।

आनन्दोत्सव

ई सब देख के राजा बहुत प्रसन्न भइलन । महाराजा के मन में विचार आइल, “विद्वानन से विचार कइल सुफल होला ।” ई सोच के उहाँ के तुरन्त नगर में सबसे बढिया उत्सव मनावे के आदेश दिहनीं । सारा जनमानस राजा के आदेश पूरा करे में जुट गइल । सड़क साफ होखे लागल अउर ओकरा पर गुलाब के खुशबू

छिड़काइल । पताका टंगाइल आउर दियन के मेला सजावल गइल । प्रसन्न भीड़ आतमविभोर हो के तलवार युद्ध, बाजीगर के कलाबाजी, सम्मोहक जादू, रस्सी पर खेल करत लड़किनियन आदी के करतब देखत रहे अउर गदगद होत रहे । नरतकी सितार लागल लहंगा पहिनके, नोंह से सिर ले श्रृंगार करके, एक ताल आ सुर के गीतन पर नाचत रहली सन । सभे एकर स्वाद लेत रहे । कहीं मदारी भालू आ बानर नचावत रहे त कहीं शिकारी खेल देखा के लोगन के मनोरंजन करत रहलन । तीतर-बटेर के करतब अउर पहलवानन के दंगलो देखावल जात रहे । ढोल-मंजीरा आउर सारंगी के सुर समा बाँध के सब के मन बहलावत रहे । सब लोग मंत्रमुग्ध होके कला आ कलाकारन के रंग में डूबत रहे । व्यापारीलोग दूर-दूर के प्रान्तन से सोना के थाल में बेशकीमती उपहार सजा के ले अइलन । उनकर कुछ सोना जड़ल कपड़ा त एतना बारीक रहे कि बारह तह कर देहलो पर देह दिखाई पड़त रहे । अइसन सोना के सुवसन ऊ लोग थान के थान लाइल रहलन । अनेक लोग चंदन के निरमल आ कीमती चीज भी उपहार में ले आइल । अउर लोग सब मोतियन जड़ल कीमती कमरबन्द ले आइल ।

शुभ मुहूरत में राजकुमार के नामकरण संस्कार भइल और उहाँ के सिद्धार्थ कहल गइल मतलब 'सर्व सिद्ध, सब भाँति समृद्ध' या 'सर्वार्थसिद्ध' अर्थात 'सब के भला करे वाला' । उनकर नाम के अर्थ भी बुद्ध के व्यक्तित्व के जइसन गंभीरता से भरल रहे ।

संत असित के आगमन

अनजान लोगन में सफेद बाल वाला सांसारिकता से निरासक्त आ निर्लिप्त, महाज्ञानी संत असित भी अइनीं। उहाँ के स्वर्गिक भाषाविद रहनीं अर्थात् स्वर्ग से आइल ध्वनि सुन सकत रहनीं और समझ लेत रहनीं । उहाँ के निरमल काया के अद्भुत ज्ञानी व त्यागी रहनीं । उहाँ के एगो पीपल के पेड़ के नीचे बइठल

रहनीं । जब बुद्ध के जनम लेहला पर देवता के मंगल गीत सुनाई पड़ल त ओकरा के सुन के उहाँ के ओह अद्भुत बालक के दरसन खातिर तत्काल चल पड़नी । बालक के देखते उहाँ के मुँह से निकल पड़ल, "लागता कि विश्व के प्रकाशमान करे खातिर हजारों सूरज के सृजन भइल बा । बाकिर हमरा त सुख के साथ-साथ दुःख के आइल भी लउक रहल बा ।" उनकर नजदीक आवते ही राजा-रानी उहाँ के शीश नवँइलन अउर उहाँ के पवित्र चरणन पर श्रद्धावश आपन बालक के आर्शीवाद दिवावे खातिर राखे के चहलन, बाकिर संत तत्काल पैर पीछे खिंचत प्रलाप कइलें, "महारानी जी, रउआ का कर रहल बानी ?" राजा-रानी उहाँ के चकित हो के आँख फाड़-फाड़ के देखे लगलन । महासंत बालक के झुक के साष्टांग प्रणाम कइलें, उनकर पैर के धूल माथा से लगा के कहलन, "हे बालक! हम जेकर पूजा करत रहल बानी, ऊ रउरे हईं । रउए धर्म-नियामक, जगतारक बुद्ध हईंः पैर के तलवा के चिह्न आउर ओसे निकलल गुलाबी किरन देख के हम निहाल होत बानी, स्वास्तिक के होखल, पवित्र 32 शुभ चिह्न, 80 अउर प्रमाण स्पष्ट करता कि अपनेहीं बुद्ध हईं । अपने के दर्शन पाके हम कृतार्थ हो गइल बानी, बाकिर हमरा मन में एक भारी दुःख भी बा कि राउर अमृतवाणी अउर रउआ द्वारा स्थापित पावन धर्म हम सुन ना पाएब काहेंकि हे अवतारी ! ई देह मर्त्य बा और हम ई देह छोड़े वाला बानी, तब राउर अमृतवाणी कइसे सुन पाएब? उहाँ के फिर महाराजा के संबोधित कइनी, "हे आदरणीय राजन! रउओ जान लीं आ आपन बेटा के पहिचान ली । ई अइसन फूल बा जौन हमनीं के मानव पेड़ पर करोड़ साल मे एक बेर खिलेला बाकिर खिलले पर संसार के ज्ञान के सुगंध से भर देवे ला । राजवंश में परम, श्रेष्ठतम आउर अद्भुत बालक के जनम भइल बा । पवित्र महारानी ए संसार मे सिरफ एह महान आत्मा के जनम देवे आइल बानीं अउर ई पवित्र कारज सम्पन्न हो चुकल बा । अब इहाँ के भौतिक शरीर के ए से ज्यादा कष्ट उठावल उचित नइखे । अतः सात दिन के भीतरे इहाँ के भौतिक शरीर के अवसान हो जाई।"

संत के कहनाम साँच भइल आ रानी सतवाँ दिने आनन्दपूर्वक सुतली, अउर फिर कबो ना उठली । ऊ आपन शरीर त्यगली आउर उनकर जनम त्तयस्त्रिंशस-लोक में हो गइल जहाँ असंख्य देवता लोग उहाँके प्रार्थना करेला आउर ओह दीप्तिमय मातृत्व के सेवा कर रहल बा । एह तरह से महारानी महामाया के 'भव पाश' खुल गइल । एहर शिशु के लालन-पालन महारानी के बहिन और दूसर रानी महाप्रजापति करे लगली । उहाँ के संसार का मंगल करे वाला कंठ के आपन पवित्र दूध पिआके बड़ा करे लगलीं।

शिक्षा

सिद्धार्थ के बचपन मे खेलौना से बहुत लगाव ना रहे । ऊ कबो-कबो खेलौना छोड़ के ध्यान में बइठ जात रहलन । राजा-रानी के बालक के ई दशा देखके चिंता हो जात रहे । आठ बरस बीतला पर राजा अपना बेटा के राजधर्म के शिक्षा देवे के सोचलन । राजा पिछला भविष्यवाणी स्वीकार ना कर पावत रहलन आ पुत्र के करूणावान बुद्ध ना बने देहल चाहत रहलन । अइसन सोच के मंत्रीमंडल से पुछलन, "जगत में सबसे ज्ञानी पुरूष के बा जे हमरा पुत्र के शिक्षा दे पाई ? सब में तेजस्वी, पराक्रमी पुरूष के बा? मसलन के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक होई ?"

प्रत्युत्तर में तत्काल एके सुर में आवाज आइल, " राजन! विश्वामित्र सबसे ज्ञानी बाड़न। शास्त्र के श्रेष्ठतम ज्ञाता, वैज्ञानिक एवं महाधनुर्धर बाड़न आउर इहाँ के शिक्षा, शारीरिक कला आ विधा के भी ज्ञान बा ।" इ सुनला के बाद राजा सिद्धार्थ के सब विधा के शिक्षा देवे खातिर विश्वामित्र के बोलवलन । राजा के निमंत्रण मिलला पर विश्वामित्र अइनी और राजा के आदेश सुननी । शुभ दिन निकाल के राजकुमार विद्याध्ययन खातिर गुरू-गृह भेजल गइलन । राजकुमार के गुरू-गृह जाके अध्ययन कइल ओइसने रहे जइसे

नदी जल के शिखर के ओर उल्टा बह चलल । सिद्धार्थ रतनजड़ल चंदन के लकड़ी से बनल दामी स्लेट अउर पेंसिल लिहलन अउर ऋषि के सम्मुख प्रस्तुत भइलन । ऋषि कहनी "बचवा, ई मंत्र लिखऽ ।" फिर उहाँ के गायत्री मंत्र के उच्चारण कइनी, जेके खाली उच्च वर्ण का लोग उच्चारित करत रहलन अउर उहे लोग सुनलो के अधिकारी रहलन ।

"ऊँ भुर्भूवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।"

राजकुमार विनम्र भाव से उत्तर देहलन, "आचार्य, अभी लिखतानी ।" फिर ऊ तुरन्त स्लेट पर लिख देहलनः एक लिपि में नाहीं बल्कि कई लिपि मेंः मगधी एवं दक्षिणी, ब्राह्मी, उग्र, देव, माँगल्य, अंग, दरद, खास्य, मध्याचार, बंग, स्वराष्ट्री, यक्ष, नाग, किन्नर अउर फिर सागर । एह तरह ऊ सब लिपि में अक्षर-अक्षर लिख डललन । चित्रलिपि से लागल आदिम मानव का लिपि तक, धरती का नीचे विराजल आ नाग-पूजा का लिपि में भी लिख देहलन । तब गुरू कहनी, "एतना पर्याप्त बा ।"

फिर उहाँ के गिनती करे के कहनी, "एक से लिहले लाख तक गिनऽ ।" बालक एक, दू, तीन, चार, दस, सौ, हजार, लाख तक गिनला के बाद बिना रूकले करोड़, अरब, खरब, पदम एवं महापदम तक सुना डललन । सिद्धार्थ रात में तारा गिनला के विधि बतवलन और कइसे समुद्र के बूँद गिनल जा सकेला, कइसे गंगा के बालू के कण के गिनल जाला । अगर दस हजार बरस तक बिना रूकल बर्षा होत रहे त ओ बर्षा के बूँद गिनला के विधि भी बता देहलन । गिनती सुनला के बाद गुरूवर चकित हो गइलन अउर मने मन कहलन हमार लाडला राजकुमार सच में ज्ञानी बाड़न । फिर सिद्धार्थ के कहलन, "अब आव तोहके जगत के सब परिमाण का विषय में बताई ।" ई सुन के राजकुमार कहलन,"सुनी हे गुरूवर !

एकरा के हम आपन जानकारी से स्पष्ट कर तानी । फिर बालक जगत का ओह सब रहस्य के स्पष्ट कइल आरम्भ कइलन जेके उनकर गुरू जानत तक ना रहलन । ई सब सुन आ देखके महाज्ञानी गुरू विश्वामित्र, बालक सिद्धार्थ का सम्मुख नतमस्तक हो गइलन अउर उनकरा के प्रणाम करत कहलन, "तू शिक्षकन के शिक्षक बाड़ऽ! तू समस्त जगत का गुरूवन के गुरू बाड़ऽ! निश्चय ही, हम तोहार ना, तू हमार गुरू हव । हम तोहके साष्टांग प्रणाम करऽ तानी । हम तोहसे प्रार्थना कर तानी । तू हमरा शरण में खाली इ दर्शावे अइलऽ ह कि तोहके सब कुछ पुस्तक बिना आवेला आउर ओ पर भी तोहरा मन में गुरू का प्रति अपार श्रद्धा बा । हम जान गइल बानी कि तू सकल तत्व के ज्ञाता बाड़ अउर तोहरा के पहचान गइल बानी । काहे से तू गुरू के सम्मान कईल जान तारऽ ।" फिर हाथ-जोड़ के गुरू कहे लगलन, "तू परम ज्ञान-निधान विनीत वचन भी कहे ल । तोहार मुख पर राजतेज विद्यमान बा तेहू पर तोहार व्यवहार मृदुल बा । तू शूरवीर, तेजस्वी बाकिर सुशील बाड़ अउर तोहार हृदय नवनीत जइसन बा ।"

इहे श्रद्धा भाव राजकुमार अपना आश्रम का सब मित्रन का प्रति भी रखलन । अब उनकरा अन्दर अद्‌भुत गुण प्रकट होखे लागल । जब भी मित्रगण आखेट खातिर राजकुमार के संगे ले गइलन, कउनो घुड़सवार उनकरा आगे ना निकल पइलन । जब कभी राजभवन का निकट रथ-चालन के जोग बनल, ओहू में उनकरा से केहू जीत ना पावल । बाकिर जीत के करीब अइला पर ऊ ठिठक जात रहलन काहें कि उनकरा अपना पराजित मित्रन के दुख सहन ना होत रहल । समय का अन्तराल के साथ उन कर ई दया भाव गहिरात गइल । ऊ जब आखेट खातिर जास तब मृग पर बाण ना मारस अउर ऊ भाग जाये । दौड़त-दौड़त थकला पर हाँफत घोड़ा देखके ऊ रूक जास आउर ओके सुहरा-थपथपा के प्यार करे लागस।

देवदत्त अउर हंस के कथा

एही बीचे एक दिन एगो घटना घट गइल । शाही बगीचा में एगो विचित्र बात हो गइल । बसंत ऋतु में राजा के उद्यान के ऊपर से हंसन के झुंड गुजरत रहे । चमकदार उज्जर पाँख वाला ई सब हंस एक दूसरा से प्रेम के वश में, हिमालय परबत के ओर बनल अपना घोंसला के तरफ उड़त जात रहलन । तबे राजकुमार के चचेरा भाई देवदत्त सधल निशाना से सबसे आगे वाला हंस पर आपन धनुष से तीर छोड़लन । बाण हंस के बड़का पंख में गहिर चुभ गहल । ऊ हंस घायल होखते सुनसान जमीन पर तड़पत गिर गइल । ओकर चमकदार सफेद पंख खून से लाल हो गइल । अइसन लागत रहल मानों क्षण भर में ओकर प्राण पखेरू उड़ जाई । राजकुमार सिद्धार्थ दया के वशीभूत होके ओकरा के तुरन्त उठइलन, पद्मासन के मुद्रा में बइठ के ओके अपना गोद में रख लेहलन । फिर दयाधर ओके सहला, दुलार के अपना कोमल स्पर्श से ओह जंगली जीव के डर दूर करे लगलन जइसे कि ओकरा में नया जान फूँकत रहलन । पक्षी के दुःख से दुःखी राजकुमार बाँया हाथ से पक्षी के पकड़ के दहिना हाथ के सहारे तीर के धीरे से निकाल फेंकलन । फिर अपना हाथ के मधुर स्पर्श से ओकर पीड़ा मिटावे के परयास करे लगलन । उनकर दयाभाव से ओ खग के पीड़ा धीरे-धीरे कम होखे लागल । ऊ कोमल हाथन व दया से भींजल आंखन के जल से मौत के नजदीक आइल मराल (हंस) के प्राण लौटत जान पड़ल । राजकुमार ओकरा घाव पर आराम पहुँवावे वाला पत्ता अउर घाव भरे वाला मधु लगइलन और उपचार कइलन । पक्षी के पीड़ा के गहराई से समझे खातिर ऊ तीर के नुकीला भाग अपना कलाई में धँसइलन और ओकरा टीस से उनकर तन-मन काँप गइल । उनकर नैनन से अश्रुधारा बह उठल । प्रेम से पुचकारत करूणाधार दोबारा पक्षी के सहलावे लगलन । तबे पीछै से कौनो सेवक आइल और कहलस "हमार राजकुमार एगो हंस मरले बाड़न । ऊ एहीं जा आ के गिरल ह । हमार कुँवर ओकरा लावे के

हमरा के भेजले बाड़न ।" पक्षी के सिद्धार्थ के गोद में देख, ऊ शीश झुकाके राजकुमार से आग्रह कइलस, "कृपा करके ई खग हमरा के दे दीं ।" "नाहीं!" सिद्धार्थ ढिठाई से कहलन, "अगर पक्षी मर गइल रहित त एकरा के बधिक के दिहल उचित होइत बाकिर ई हंस जीयत बा । मारे वाला हंस के मालिक हो सकेला, बाकिर जीअत हंस पर ओकर कौनो अधिकार ना हो सकेला, हमार भाई ईश्वर का विधान के बाधित करे के प्रयास कइले बाड़न । ऊ एह पक्षी के प्राण हरे के दुस्साहस कइले बाड़न, एह खातिर उनकर एह हंस पर अधिकार ना हो सकेला ।" एतने में देवदत्त आके कुँवर से कहलन, "जंगली चीज, जीअत या मरल ओकर होला जे ओकर शिकार कइले होखे । बादल में उड़त समय ई पक्षी केहु के ना रहल बाकिर ई हमरा तीर से गिरल ह, एह खातिर अब हमार बा । एहसे एकरा के हमरा के दे द । तोहार हठ अकारण बा अउर अधिकार भी निराधार बा ।"

तब सिद्धार्थ हंस के गरदन आपन चिकना गाल से लगावत गंभीरता से कहलन, "अइसन मत कहऽ भाई ! जे कुछ भी तूं कहत बाड़ऽ ऊ उचित नइखे । हम अब एकरा के तोहरा के ना देब, काहेकि अब ई हमार बा । सब जीवन के प्रति दया अउर प्रेम के अधिकार खातिर ई हमार बा । हमरा एह जगत के सब जीवन के दुख महसूस हो चुकल बा । अब हम लोगन के दया के शिक्षा देब । अभिशापित दुःख के बाढ़ कम करब, खाली मनुष्यन के ही ना वरन पूरा सृष्टि के पीड़ा हरब । विकल जीव में नया जीवन भरब । संसार में बढ़ल भयानक भव-ताप रोक देब । बाकिर राजकुमार अगर रउआ ए तरह हमार बात ना मानब अउर विवाद करब त हम एह मामला के विद्वान लोगन के पास ले जा तानी अउर उहे लोग निर्णय कर ली ।"

अइसने भइल । राजा के दरबार में ए विषय पर वाद-विवाद होखे लागल । गहन से गहनतर विचार-विमर्श भइल ।

कबो लागल कि सभे राजकुमार सिद्धार्थ का पक्ष में बा त कबो देवदत्त का पक्ष में । ओ ही समय एगो अज्ञात पुजारी उठलन अउर कहलन, "प्राण एगो बहुमूल्य वस्तु बा, अतः एकरा विषय में विवेके से काम लिहल जाव । अगर प्राण बचल बा त बचावे वाला का जीवित वस्तु पर अधिकार ढेर बा, ओकर अधिकार कदापि नइखे जे प्रहार कर ओकर प्राण के हत्या कइल चहले बा । बधिक त नाश कर देहल चाहेला पर रखवाला ओके बचावेला । रक्षक जीवन प्रदान करे लन, अतः ई पक्षी राजकुमार सिद्धार्थ के सउँपल जाव जे एकर जीवन बचवले बाड़न ।" ई निर्णय समग्र सभा जन का उचित बुझाइल अउर पक्षी राजकुमार सिद्धार्थ का सउँपा गइल । जब राजा ओ मुनि का समानित करे के सेवक भेज के बोलइलन त पता चलल कि उहाँके चल गइल रहनी । जहाँ उहाँके अर्न्तध्यान भइल रहनी ओइजा एक छत्र वाला साँप देखल गइल । देवता लोग जब-तब एही तरह आवत-जात रहे लन ।

एह तरह से बुद्ध बालपन से आपन व्यापक दयामय कार्य का शुभारम्भ कइलन । उपचार पाके उ खग स्वस्थ होके उड़ गइल, अउर अपना दल में जा मिलल । बाकिर कुछे पल में राजकुमार सिद्धार्थ के पीड़ा के परिचय दे देहलस ।

समय बीतल लेकिन समय का बीतला से भी सिद्धार्थ दुःख का विषय में अधिक ना जान पइलन, ओ पक्षी के घायल भइला के दुःख के अलावा, जौन भला-चंगा होके अपना झुँड में खुशी-खुशी उड़के जा मिलल ।

पिता के साथ नगर दर्शन

महाराज शुद्धोदन राजकुमार सिद्धार्थ के राज-काज के शिक्षा प्रदान कइल चाहत रहलन । उनकरा अंदर दया-भाव से ऊ तनी संशकित भी रहलन । ऊ उनकरा के राजधरम के शिक्षा देहल चाहत

रहलन अउर उनकर प्रबल इच्छा रहल कि उनकर पुत्र एगो महान चक्रवर्ती सम्राट बनस । राज-काज में उनकर रूचि पैदा करे खातिर, राजधरम के शिक्षा देवे खातिर, अपना राज्य के विशालता, धन-धान व विशाल राजकोष का भरे के विधि बतावे तथा अन्य राज-काज से परिचय करावे खातिर राजा सुहाना वसंत ऋतु चुनलन । फिर एक दिन सिद्धार्थ से कहलन, "आव, प्यारे बेटा ! आनन्दमय वसन्त में सुन्दर सजल ए प्रकृति के देखऽ ! कइसे कोयल अपना मीठा आवाज में मधुर गीत गाव तीया ! ए मनभावन समय में हमनीं के नगर द्वार से निकल के बाहर भ्रमण करे के चाहीं ।"

सुहाना मौसम में सुसज्जित रथ पर सवार महाराज अपना पुत्र के साथ लिहले धन-धान्य से भरल अपना साम्राज्य के भ्रमण पर निकल गइलन । राजकुमार के पाकल अन्न व फसल अउर सुनहला माटी में हरा-ताजा सब्जी के उगल देखावे लगलन । सुहाना मौसम में पेड़न पर नया चमकदार हरा-हरा पत्ता लागल रहे । हरियर-हरियर घास पर रंग-बिरंगा फूल आपन छटा बिखरावत रहल । कुँआ अउर बगीचा से गुजरल ठंडा बयार तन-मन में ताजगी भरत रहल । बगीचा में मोर के नाच अउर पक्षीयन के कलरब अलगे समा बाँधत रहल । रंग-बिरंगी तितली उड़त रहली सन, गिलहरी आपस में दौड़त रहली सन, मैना आउर तोता झुंड का झुंड उड़त रहल । कउआ भैंस का पीठ पर सवारी करत रहलन । चमगादड़ गोल-गोल चक्कर लगावत रहलन । चमकत मंदिर के ऊपर मोर बैठल रहलें अउर तेजी से उड़के वृक्षन पर बइठत रहलें । नीलकंठ पंख फैला के दूर-दूर तक उड़त रहलन । सब जगह शांति आ सम्पन्नता लउकत रहल । राजकुमार ई सब देख के प्रसन्न होत रहलन । सुदूर गाँवन में विवाह समारोह में बाजत रहल मीठा ध्वनि भी सुनाई पड़त रहल । अइसन आनन्ददायी मौसम में महाराजा सिद्धार्थ के राज-काज के विषय में समझावत राज-कोष भरला के उपाय बतवलन आ कहलन, "जब अग्नि के लपट हमरा के आपन

बाँह में लपेटी, त ई सब राज-काज तोहार होई । एह से, एह साम्राज्य के चलावे खातिर राज-काज के विद्या अच्छा से समझ ल ।"

शुरू में राजकुमार भी ई सब देख के प्रसन्न रहलन । बाकिर जब ऊ बारीकी से देखल शुरू कइलन त पइलन कि कौना प्रकार से प्रकृति चालाकी से गुलाब का संग काँटा भी बनवले बा । के तरह धूप में तपत किसान आपन मजदूरी खातिर पसीना से लथपथ मेहनत करे लन । अपना जीवन के रक्षा खातिर ओकर इ श्रम आ तेज धूप में काम करत निरीह बैलन पर पड़त डंडा के चोट देखके उनकर हृदय द्रवित हो गइल । ऊ इहो देखलन कि कवना तरह छिपकली चींटी के आ साँप छिपकली के अउर फिर मोर ओह साँप के निगल जाला । के तरह बाज मछली और बुलबुल तितली के शिकार करे ले । मछली छोटा जीवन के खा तिया अउर नर-नारी मछली के खात बाड़न । एगो बधिक दोसरा बधिक के वध करके आपन क्षुधा शांत करत बा । ए गो मरत बा बाकिर ओकरा कारण दूसर जीवन पावता । हर जगह उनका एक-दूसरा के हत्या के आतुर जीव देखाई पड़ल । जीवन जीयत रहल, मृत्यु के कारण । राजकुमार ई मनोरंजक सुखदायी दृश्यन के पीछे छिपल बर्बर, निर्दयी षडयंत्र देख लेहलन । खाली मनुष्य नाहीं बल्कि कीट, पक्षी सभे भ्रमित बा । किसान भूखा दुर्बल बैल के नाथ घुमावत बा, ओकर कंधा छिलत बा बाकिर ओके एकर ध्यान नइखे । जीये के चाह के धधकत ज्वाला में सब प्राणी जलता अउर परस्पर लड़ रहल बा ।

ध्यान के पहिला-पाठ

ई सब देख के राजकुमार सिद्धार्थ के हृदय व्यथा से भर गइल । उनकर आँख लोर से भर उठल आउर ऊ आह भरत पूछलन, "का इहे जीवन कहल जाला? का इहे ऊ सुखी संसार ह, जेके रउआ देखावे हमरा के ले आइल रहनी हँ? कइसे मानी कि संसार सुहावन बा, सुन्दर बा? बाहर से भले इहाँ मुस्कान लउकत

बा, बाकिर इहाँ त दुखे दुख बा । का हमरा के खाली इ देखावे अइनी हँ कि ई सारा संसार कइसे दुःख के सृजन करे में प्रयत्नशील बा? कइसे किसान के रोटी में ओकर पसीना से निकलल नमक भी मिलल बा? केतना कठिन बा-किसान अउर बैलन से लेहल सेवा? धरा पर सबल अउर निर्बल के समर केतना प्रचंड बा! जल-थल-नभ सब जगह युद्ध चल रहल बा अउर कहीं भी केहू के बचला के उम्मीद नइखे । ऊ एकता भाव कहाँ चल गइल जवन सबका में बसत रहल ।

तब सिद्धार्थ तटस्थ होके एकाग्र भाव से जगत के देखे लगलन । ई संसार कइसन बा? का जीवन के इहे लेखा-जोखा बा? इ सोचत दया के सागर सिद्धार्थ एगो विशाल जामुन के गाछ के नीचे जाके पद्मासन के मुद्रा में बइठ गइलन । ऊ संसार के एह भयानक बीमारी पर चिंतन करे लगलन कि ई भयानक बीमारी के मूल कहाँ बा अउर फिर एकर उपचार का होई? उनकरा में संसार के समस्त जीव खातिर असीम प्रेम अउर करूणा के भाव उमड़े लागल आउर दुख निवारण का ओर ध्यान केन्द्रित हो उठल । कुछ समय पश्चात् उनकरा अंदर एतना अधिक करूणा व्याप्त हो गइल कि ऊ सुध-बुध खोके समाधि अवस्था में चल गइलन । ऊ समझ से परे आ संसार से ऊपर उठके ध्यान मगन हो गइलन । एह प्रकार ध्यानस्थ होके ऊ ध्यान-मारग के पहिला पाठ पूरा कर लेहलन।

ओही समय आकाश मारग से पाँच देवतागण जात रहलन । जामुन का वृक्ष के ऊपर से गुजरत समय देवता लोग के पंख लड़खड़ाये लागल । चकित होके ऊ आपस में चर्चा कइलन कि कौन अलौकिक शक्ति हमनीं के मारग से हटा के धरा पर खींच रहल बा? तब उनकर दृष्टि पेड़ का नीचे बइठल, ध्यान में निमग्न सिद्धार्थ पर गइल जिनकर लालिमा से भरल ललाट प्रकाशमान होत रहे अउर जे लोक कल्याण के खातिर ध्यान में निमग्न रहलन । तबे देवतागण

आकाशवाणी सुनलन, "ऋषिवर ! ई ऊ दयानिधान बाड़न जे संसार के मदद करिहन । उतरीं अउर वंदना करीं ।"

ऋषिगण धरती पर उतर अइलन और सिद्धार्थ के सम्मुख आके स्तुति गावे लगलन । देवतोगण जान गइलन कि एह धरा पर जमल अज्ञानता के अंधकार समाप्त करे खातिर ज्ञान के सूरज उग चुकल बा । अइसन आभास होखे लागल कि जल्दिए लोक-कल्याण के सुमन प्रस्फुटित होई । राजकुमार सिद्धार्थ के श्रद्धापूर्वक नमन करके देवगण देवलोक में ई शुभ समाचार देवे खातिर प्रस्थान कर गइलन ।

ओही समय महाराजा के एगो दूत उहाँ अइलन । तीसरा पहर के समाप्ति होत रहल, सूरज देवता भी अस्ताचल के ओर प्रस्थान करत रहलन, बाकिर सिद्धार्थ के ध्यान भंग ना भइल, अउर नाहीं जामुन वृक्ष के छाया तनिको खिसकल । छाया भी सिद्धार्थ के समान स्थिर हो गइल रहल जेमे उनकरा सिर पर तृणमात्र भी धूप न आवे । ऊ दूत ई चमत्कार देखके ठगा जइसन खड़ा रह गइलन । तबे ओह वृक्ष से निकलल आवाज सुनाइल, "आप निश्चिंत रहीं ! जब तक इहाँ के ध्यानावस्था समाप्त ना होता, तब तक हमार छाया इहाँ पर विद्यमान रही ।" राजा के दूत ई दृश्य देखके स्तब्ध रह गइलन ।

काफी विलंब भइला पर राजा भी उहाँ आ गइलन अउर राजकुमार के गहन ध्यान में डूबल देख के चिंतित हो उठलन । सूरज तेजी से पच्छिम तरफ पहाड़ी ओर जात रहल आ ओकर छाया खिसकत रहल बाकिर जम्बू वृक्ष के छाया सिद्धार्थ के छाया देत एके तरफ रूकल रहे अउर उनकरा पावन शरीर के तिरछा होत किरणन से बचावत रहे । महाराज भी ई सब देख के स्तब्ध हो गइलन । ऊ समझ गइलन कि जेकर रक्षा प्रकृति कर रहल बा ऊ कौनो सामान्य व्यक्ति ना हो सकेला । तब गुलाब के बगीचा का पीछे से आवाज

आइल, “रउआ निश्चिंत रहीं महाराज! जब तक राजकुमार के हृदय से छाया (दुःख के सही–सही कारण अउर विश्लेषण) निकल नाहीं जाई तब तक हमार छाया इहाँ पर बनल रही ।”

दूसरका सर्ग
राजा के चिंता

राजकुमार सिद्धार्थ के वयस्क हो गइला पर राजा अपना बेटा खातिर कइएक सपना देखे लगलें । पुत्र के मन प्रसन्न राखे खातिर उनका मन में बड़हन, सुन्नर अउर मन हरे वाला राजमहल बनावे के इच्छा होखे लागल ।

उनका कल्पना के मुताबिक महल में नवयुवती नचनियाँ लगातार नाचत रहिहें जेकरा से राजकुमार के चित्त हमेशे खुश रही, दुनियाबी चीझन के ओर लिप्त रही अउर मन में कबो वैराग्य के भाव ना आई । एही सुखद स्वप्निल चाह के साथ राजा आपन मंत्री के ओही समय सुनहरा सुन्दरता से चमकत बड़हन अउर सुन्दर महल बनावे के आदेश देहलें, " महल अइसन सुन्दर, मनमोहक आ मन के मोहेवाला होखे, जइसे मन के खुश राखे वाली ठंडी हवा । महल के देखे के चाह हमेशे बनल रहे, आ लगातार देखत रहे के चाह हर छन बढ़त रहे । मंत्रीवर! ए महल में कलाकारन के कला से लता, झरना अउर कमल के फूल एतना सुन्दर बनावल जाए कि ओकरा के देखके विश्वकर्मो बेचैन हो उठस । भवन एतना अलौकिक अउर बड़हन होखे कि अइसन लागे जइसे ईश्वर एकरा के स्वर्ग से धरती पर ले आइल होखस । राजकुमार के आत्मा एह महल से पूरी तरह बँध जाए । महल दरवाजा के कला अनुपम, अनुठा अउर बेजोड़ होखे । सिद्धार्थ खाली हमार बेटा ना हउअन, बलुक पुरूषोत्तम बाड़ें । इ अमृत के भंडार के तरह सुन्दर अउर निश्चल बाड़ें ।" राजा आगे मंत्री परिषद से कहलन, "तीनों लोकन के सारा सुविधा इनकरा पास उपलब्ध रहे के चाहीं अउर जबो ई सूत के उठस, इनकरा चारों तरफ सुख अउर समृद्धि ही दिखलाई पड़े के चाहीं ।" राजा के ई इच्छा रहे कि दुःख, जर्जरता अउर निर्बलता राजकुमार के लगे कहीं भी फटके ना पावे । मंत्रियों लोग इहे कामना करीं कि राजकुमार के

कबो दुख के सामना ना करे के पड़े । उनकरा सब तरह के सुख–सुविधा प्राप्त होखे तथा उनकर भूत अउर भविष्य, रात अउर दिन सब मंगलमय होखे ।”

राजा के आदेश के मोताबिक राजकुमार के प्रसन्न करे खातिर मंत्री लोग के सलाह से तीन गो बड़हन अउर मनोरम भवन बनावल गइल । पहिला भवन वर्गाकार आकृति में देवदार के बनावल गइल जे ठंढियों के मौसम में गरम रहे अउर जेकरा में हमेशा सोहावन गरम हवा बहत रहे । दोसर भवन सफेद संगमरमर के बनावल गइल जेमें गर्मियों में जाड़ा महसूस होखे । तीसर भवन ईटा से बनल जे पावसो ऋतु में चंपक फूल के तरह लुभावन अउर मनोरम लागे ।

एह भवनन के नाम क्रमशः शुभम, रम्य अउर सुरम्य रखल गइल । ई तीनों भवन एतना सुन्दर अउर मनोरम रहे कि इन्हनीं के देख के अइसन लागे जइसे सब सुख–साधन से भरल नीड़ धरती पर उतर गइल होखे । एह भवनन के चारों ओर उद्यान अइसन परतीत होत रहे जइसे माई के आँचर में सुख से सूतल ओकर शिशु! तीनों भवन पूरा राज्य में बेजोड़ आ अनुपम रहे । अइसन सुखकर अउर आनंद देबे वाला भवन साइद देवतो लोग के भाग्य में ना रहे । सब प्रकार के मनोरंजन अउर सुविधा से भरल एह भवनन में पशु–पक्षी बिना कवनो बाधा के आपन खेला करत रहस । इनकरा के देख के राजा मने मन अत्यंत हरखित रहस । सब मरदे–मेहरारू प्रसन्न अउर विमुग्ध रहलें । प्रकृति के शोभा भी बेजोड़ आ अद्वितीय रहे । राजा–रानी राजकुमार पर मोहित हो जास । परिवार के सब लोग हर्षोल्लास में मगन होके आनंद अउर खुशी मनावत रहलें । बाकिर कबो–कबो राजा के चिन्ता रूपी ज्वाला व्यग्र कर देवे । ऊ सोचे लागस कि कहीं ज्योतिष अउर भविष्यवक्ता के कहल बात साँच ना हो जाय? उनकरा डर लागे कि कहीं भास्कर के सामने करिआ बादर अंधकार बन के ना छा जाए । उनका भय सतावत रहे कि ए

होनी-अनहोनी में उनकर बेटा कहीं घर छोड़ के चल ना जास अउर उनकर भविष्य अंधकारमय ना हो जाय आ उनका खुशियन पर ओला ना पड़ जाय । एह चिंता से आतंकित अउर भयभीत नरेश एतना व्यग्र हो उठ्लें कि उनकरा लागल कि कहीं राजकुमार के खो के उनकर समूचे स्वप्निल कल्पना छिन्न-भिन्न ना हो जाये । एह से ऊ अपना कुशल अउर सबसे बढ़िया सचिवन के बोला के मंत्रणा कइलन अउर ओ लोगन से कहलें कि ऋषि लोग के कहल अउर भविष्यवक्ता के भविष्यवाणी उनकरा खातिर लगातार चिंता के विषय बनल रहे । "हमरा समझ में नइखे आवत कि हमार बेटा विश्व विजयी होके हमार सपना, हमार अभिलाषा पूरा करी आ कि दैनिक दू:ख-दर्द अउर दीनता के संन्यास धारण कर ली? हमार हार्दिक अभिलाषा बा कि राजकुँवर चक्रवर्ती सम्राट बनस अउर विश्व विजयी बन के जगत विजेता कहलावस । शत्रु इनकरा सामने सिर झुकाके खड़ा रहस, थर-थर काँपस तथा भय से इनकर पूजा करस । इनकरा सामने काल भी घबरा जाए ।" राजा फेरू कहले, "मंत्री महोदय! कुछ अइसन करे के चाहीं कि इनका मन में सपनों में संन्यास लेवे के भाव ना जागे आ भुलाइयों के दीन-दुखी लोग इनका सामने ना आवस । नगर के लोग हमेशे सज-सँवर के इनकरा सामने आवें । चारों तरफ के दृश्य मन के मोहे वाला होखे जेकरा के देख के मन आनंद से भर जाय । राजकुमार के मन हमेशे भोग-विलास में बँधल रहे; इनका चित्त के आकर्षित करे खातिर लगातार कोशिश चलत रहे । एह दुनियां के जीते के इच्छा उनका मन में लगातार बनल रहे आउर विश्वविजयी बने के साकार करे खातिर राजकुमार हर छन चिंतन-मनन करत रहस । सारा संसार उनका के सम्राट कह के पुकारे । दिग्पाल हमेशे उनकर गुण-गान करत रहस आ उनकर हर पल यश देवे वाला होखे । अगर जो उनकर मन में गलतियो से कहीं वैराग्य जाग गइल त उनकर जिनगी अउर जीये के महत्वे बदल जाई अउर पता ना ओकर नतीजा का होई । संन्यास के राह काँटा भरल, बड़ा कठोर अउर निर्दयी होला आउर ओकरा में दुःख आ परेशानी के सिवाय अउर

कुछ ना मिलेला । ओह विपत काल में के केकर सहायता करी? एह मार्ग में सफलता पावे में पूरा जीवन लाग जाला, काहेंकि एह धरती पर शांति सहज रूप में ना मिलेला । अइसन कल्पना हमरा के हमेशा भयभीत करत रहेला । सचिव गण, रउआ सभे हमेशे एह प्रयास में लागल रहीं कि एह धरती पर कबो भी अइसन ना होखे कि राजकुमार संन्यास के बारे में सोचस । अगर जो पता चले कि राजकुमार संन्यास के राह पर बढ़ रहल बाड़ें त एकर सूचना हमरा के तत्काल देहल जाय ।"

सब विद्वान मंत्रीगण आपस में मंत्रणा कइलें अउर फेरू राजा से विनम्र भाव से कहलें, "राजन! प्रेम एगो अइसन रोग ह जे राजकुँवर के संन्यास पथ पर ले गइला से रोक सकेला । राजकुमार के बियाह एगो मनमोहिनी कन्या से कर देहल जाव त ऊ उनका के अपना सम्मोहन पाश में जकड़ लिहें । उनकर रूप-लावण्य आ सुन्दरता के जाल में फँस के राजकुँवर कबो दुःख के अनुभव ना करिहें । ऊ अबहीं रूप-लावण्य के आनंद, आँखन के चंचलता अउर होठन के अमृत-रस से अनजान बाड़ें । उनकर जीवन संगिनी अत्यंत सुन्दर अउर चन्द्रमुखी तथा मन के मोहे वाली होखस मानों ऊ ब्रह्मा के अद्वितीय कलाकृति होखस । रूप-रंग के साहचर्य मदमस्त करे वाला होला । भोग में लिप्त आदमी खातिर संसार सुंदर अउर रूचिकर हो जाला । हे राजन! अपने के ई अमोघ मंत्र के अपनाईं अउर फिर देखीं कि वैराग्य के भावना उनकरा के कइसे जकड़ता? लोहा के कपाट जेके ना रोक पावेला ऊ व्यक्ति सुंदरी के केश जाल में अइसन उलझेला कि ओकरा बंधन से कबो मुक्त ना हो पावेला अउर ना कहीं जा पावेला । आदमी स्वभावे से रूप आ सुन्दरता के भुखाइल होला ।"

राजा के मंत्रियन के ई उकित बड़ा भावल, अर्थपूर्ण लागल अउर मन में राजकुँवर के बियाह के भावना घर कर गइल । ऊ मंत्रियन के आदेश देहलें कि अइसन योग्य राजकुमारी खोजीं जे

अत्यंत कमनीय, बिजली के तरह तेज, मृगनयनी अउर सुमधुर होखस । बाकिर राजा इहो चिंता व्यक्त कइलें कि यदि राजकुमार के रूप वाटिका से मनमोहक नवयुवती के चुने के कहल जाई त ऊ मुस्करा के एह बात के टाल जइहें अउर हमार ई युक्ति धइल के धइल रह जाई । तब दोसर सचिव राजा के मंत्रणा देहलें कि कवनो ना कवनो सुंदरी राजकुमार के अपना रूप-जाल में जरूरे फँसा लिहें काहेकि मिरगा तबले हीं कुँलाचा भरेला जब तकले कि ऊ बाण से घायल ना हो जाला । ऊषा जइसन कउनों रूपवती राजकुमार के जरूरे भा जइहें अउरी उनकरा हृदय में समा के प्रेम अउर आसक्ति जरूरे पैदा कर दिहें ।" मंत्रियन के सुझाव पर राजा उनका के सात दिन के अंदर 'अशोक उत्सव' आयोजित करे के आदेश देहलें । "एह उत्सव में राज्य के सौम्य, सुंदर, चित्ताकर्षक सोरह बरिस के उमिर वाली सब कुमारी-राजकुमारी के आमंत्रित कइल जाए । राजकुँवर प्रसन्न हो सभे के पुरस्कार वितरित करिहें । जे तरह से सूरज बरफ के पहाड़ के पिघला के सब नदियन के जल से भर देला ओही तरह से जब राजकुमार अपना आँख से एह राजकुमारी लोग के रूप-लावण्य के देखिहन त जरूरे केहू ना केहू त उनका अच्छा लागी । प्रबुद्ध नर-नारी छुपके राजकुमारी के उपहार ले आवत-जात देखत रहस । राजकुमार कवना राजकुमारी पर आपन दृष्टि गड़ाव ताड़ें एकरा के सावधानी से देखस-कवना राजकुमारी के आँख से इनकर आँख मिलता अउर आँख रूपी भँवर मदमस्त हो जाता? प्रेमी के आँख आपन प्रेमिका के चुनाव कर लेला जेह तरह से भँवरा के संगीत कमल जइसन बड़ काने सुन सकेला ।"

सब मंत्रियन के राजा के ई युक्ति अच्छा लागल । आनंद उत्सव खातिर ढिंढोरा पिटवावल गइल अउरी राज्य के सब सौम्य, सुंदर अउर सोरह बरिस के उमिर वाली कुमारियन के राजमहल में एकट्ठा होखे के कहल गइल । "राजकुमार हरेक राजकुमारी के अनुपम, बेशकिमती अउरी अत्यन्त मनमोहक उपहार दिहें । एमें जे अत्यंत सुन्दर होई ओके सर्वश्रेष्ठ उपहार मिली ।"

प्रेम

अशोक उत्सव के दिन राजभवन में सतरंगी सुन्दरता छाइल रहे । अद्वितीय रूप सौंदर्य वाली नवयुवती हृदय के सम्मोहित कर जाए । सुनहरी अउर गोर रूपरंग वाली सुसज्जित कन्या मन के हर्षित करत रहलीं । राजमहल में पूरा संसार के सुन्दरता समा गइल रहे अउर उनकर चहल-पहल से मन हरखित होत रहे । कहीं मदमस्त करे वाली आँख से मधु टपकत रहे त कहीं होंठ के सुन्दरता सोमरस के तरह प्रभाव डालत रहे । करघनीं के मधुर-मधुर आवाज अउरी गायन हृदय के लुभावत रहे । उहाँ चौसंठो कला आउर सोरहो श्रृंगार से भरल परिवेश रहे । हरेक सुन्दरी आँख के आकर्षित करत रहे अउरी हर सुन्दरी सुन्दरता के पराकाष्ठा के प्रतिमूर्ति रहली मानों नीला कक्ष में हजारों फूल खिलल होखे । प्रत्येक हृदय में उत्सुकता समाइल रहे । सभे राजकुमार के एक टक देखे के चाहत रहे ।

एक-एक कर के हरेक सुन्दरी सिंहासन के सामने अइली अउरी राजकुमार के देख सकुचा गइली, सहम गइली । राजकुमार के तेज अउर दिव्य सुन्दरता विष्णु जइसन लागत रहे । हर राजकुमारी उनकर रूप-लावण्य के देख आश्चर्य से भर गइली अउर उनकर छवि आपन आँख में बसा लेवे के चाहत रहली । हर सुन्दरी आपन उपहार लेके आगे बढ़ जास आउर उनका जगह पर दूसर कन्या उनकरा सामने आ जास ।

एही क्रम में ऊ अनुपम क्षण भी आइल जेकरा खातिर सभे इन्तजारी करत रहे । ईश्वर के माया के श्रेष्ठतम सुन्दरता राजकुमार के सामने हाजिर रहे । कुँवर के आँख जब यशोधरा पर पड़ल त ऊ मुग्ध होके अपलक निहारे लगलें अउर उनकर विशाल हृदय अमृत रस से तृप्त हो गइल । यशोधरा सुन्दरता के पराकाष्ठा रहली । मुग्ध कुँवर के दृष्टि हटइलो पर ना हटल, काहेकि उनकर आँख

अतृप्त रह गइल रहे । जइसे वर्षा ऋतु में बिजली अउरी बदरी उलझल रहेलें, ओही तरह कुँवर अउर यशोधरा के आँख आपस में उलझ गइल । थोड़ा समय बीतला पर सहम के यशोधरा पूछली कि ऊ रूकस कि जास, "हमरा खातिर कउनों उपहार बचल बा? अगर हँ त ऊ हमरा मिले, नाहीं त हम जातानी ।" स्वीकृति में कुँवर मधुरता से कहलें, "तोहरा लायक कौनो उपहार नइखे बाचल ।" अइसन कहके तुरंत अपना गला से हार निकाल के यशोधरा के गला में डाल के उनका के सुशोभित कइलें । कुँवर के हाथ से हार पहिर के ऊ अइसन संकुचइली मानों ऊ लाज के प्रतिमूर्ति होखस । ऊ कुँवर के आँख में समा गइली आ कुँवर से कंठहार पाके बदला में ऊ उनकरा के आपन हृदय हार दे बैठली । आँख चार भइल, अधर मुस्कुरइलें, दूनो हृदय एक हो गइलें ।

व्याध – पुत्र के कथा

बरिसन बाद जब कुँवर बुद्धत्व प्राप्त कर लेलें तब एक दिन उनकर श्रेष्ठ शिष्य उनकरा से सरलता से पूछ लेहलें, "अपने जइसन वीतरागी के हृदय में यशोधरा के प्रति एतना अनुराग कइसे जागल?" तब बुद्ध प्रसन्न मन से उत्तर देलें कि ऊ दूनों एक दूसरा से अपरिचित ना रहलें, बल्कि उनकर संबंध कई जनम से रहे अउर ऊ दूनों एक दूसरा से बँधल रहलें । फिर बुद्ध कई जनम पहले के कथा सुनवलें : "ओ जनम में हम एगो व्याध के बेटा रहनीं अउर जंगल में विचरण करत रहनीं । एक दिन नन्दा देवी के शिखर के बगल में यमुना तीरे हम वन कन्या सब के संग खेल खेलत रहनीं । शुद्ध सात्विक मन से हमनीं के खेल चलत रहे । ओ खेल में हम पंच बनल रहनीं अउर सब कन्या हमरा के पहिले छुए के होड़ करत रहली । ऊ देवदार के पेड़न के तले रूपवती कन्या हिरणी जइसन दउड़ली । हम उनकरा के पुष्प के हार दे कृतार्थ करत रहनीं । केहू के वन जुही के फूल से मस्तक सजइनीं त केहू के केश में नीलकंठ के पंख लगवनी । केहू के गला में गेंदा के माला डलनीं, त केहू में

देवदार के फूल माला । यशोधरा सबसे पीछे दउड़ली, बाकिर सबसे आगे अइली अउर हमरा के देख के लज्जा से लाल हो गइली । फिर हमनीं का बहुत दिन ले साथे रहनीं । प्रेम के बंधन में बँध के साथे-साथ जीयनी अउर फिर साथहीं साथ मर गइनीं । जे तरह से धरती में बीया सुप्तावस्था में पड़ल रहेला अउर वर्षा के जल पाके फूट पड़ेला ओही तरह से पिछला जनमन के राग-द्वेष, सुख-दुख के समेट के बीज समान पड़ल रहेला । उचित अवसर पा ऊ फेर प्रस्फुटित हो जाला । क्रमानुसार ओकर शाखा पर मीठा, कड़वा फल लागत रहेला । हम उहे शिकारी बालक बानीं अउर यशोधरा उहे वन कन्या । एह प्रकार जनम-मरण के चक्र चलत जाला जेकरा में अभिशाप अउर वरदान दूनो ही मिलत रहेला ।"

सब मंत्री सारा घटना क्रम गुप्त रूप से देखत रहलें अउर दउड़ के राजा के पास पहुँचले । उत्सव में राजकुमार पर दृष्टि रखे वाला मंत्रीलोग अक्षरशः वृतान्त सुनइलस कि के प्रकार जबले सुप्रबुद्ध के कन्या यशोधरा उनकरा सामने ना अइली, राजकुमार निर्लिप्त बइठल रहलें बाकिर जइसहीं ऊ उनकरा सामने अइली, दूनों के आँख मिलल अउरी प्यार के सागर उमड़ पड़ल । ऊ लोग इहो बतइलस कि कइसे राजकुमार अपना गला के हार यशोधरा के पहनइलें अउर फिर कइसे प्रेम के नदी में दूनों बह गइलें ।

मंत्रीगण राजा के ई शुभ संदेश देके कृतार्थ भइलें तथा राजा से मनोवांछित उपहार प्राप्त कइलें । वृतांत सुन के राजा बहुत प्रसन्न भइले अउर मने मन ईश्वर से प्रार्थना कइलें, "हे भगवान! हमार धरोहर बच गइल जेकर भविष्य के हाथ लुटला के भय रहे ।"

बियाह के प्रस्ताव

राजा हरखित होके बोललें कि अशोक उत्सव के सहायता से ऊ कुँवर के बचा लेहलें, अउर इहे उनकर उद्देश्यो रहे । फिर ऊ दूत

से कहलें कि तूं राजा सुप्रबुद्ध के पास जा अउर उनका से बात करके राजकुमार खातिर उनकर बेटी के हाथ मांगऽ ।

उत्तर में सुप्रबुद्ध दूत से कहलें, "शाक्य वंश के परंपरा के अनुरूप उनकर कन्या के श्रेष्ठतम पुरूष ही प्राप्त कर सकेला । उनका शस्त्र कला में आपन हाथ के पराक्रम दिखा के कन्या के प्राप्त करे के पड़ी । शाक्य वंशी राजा एह परंपरा के विपरीत ना जा सकेलें । सैकड़ों राजकुमार यशोधरा के पावे के चाहत बाड़ें, बाकिर जे सर्वोत्तम होई ओकरे से आपन कन्या के बियाह करब । अगर सिद्धार्थ अस्त्र-शस्त्र चालन अउर घुड़सवारी में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हो जइहें त उनकरा से अच्छा वर कहाँ मिली, बाकिर उनकर सुस्ती अउर विरक्ति के देख ई कइसे उमेद कइल जा सकेला कि सब कुछ मन के चाहल होइए जाई ?"

ई बात के सुनके राजा चिंतित अउर उदास हो गइलें । सुप्रबुद्ध के शर्त राजा के चिंता-अग्नि में घीव के काम कइलस । राजकुमारो आपन पिता से यशोधरा से विवाह के तीव्र इच्छा व्यक्त कइलें, अउर उदास रहे लगलें । दुःख से कातर राजा सोचे लगलें कि का राजकुमार के यशोधरा के प्राप्त कइल संभव बा काहेकि देवदत्त जइसन धनुर्धर, अर्जुन जइसन घुड़सवार के उनकर क्षेत्र में हरावल असंभव बा । नन्द के तलवार चलइला के कला में परास्त कइल असंभव बा । ई सोच-सोचके राजा अत्यंत उदास हो गइलें । पिता के उदासी के कारण जान के राजकुँवर हँसत बोललें कि ऊहो ई कला के सीखले बाड़न । "रउरा चिंतित मत होई । जे हमरा से भिड़े के चाहे, ऊ भिड़े । पहिलहीं से हम आपन पराजय मान के राजकुमारी के हाथ से ना जाए देब । निश्चये उनका पर केहू के अधिकार ना होखे देब ।"

राजकुमार के हुकुम के मोताबिक रणकौशल में चातुर्य के चुनौती के घोषणा भइल । घोषणा कइल गइल कि यशोधरा के

खातिर जे चाहे राजकुमार से प्रतिस्पर्द्धा लगा ले अउर जीत के उनकरा से बियाह कर ले ।

शस्त्र परीक्षा

विशाल रणभूमि दूर-दूर तक फइलल रहे । सब शाक्यवंशी कुमार रणकौशल के मद से भरल भरपूर चुनौती देवे के उद्देश्य से पहुँच गइलें । सोलहों श्रृंगार से सुसज्जित राजकुमारी यशोधरा के सखी लोग मंगल गीत गावत ले अइली । राजकुमारी से बियहे के चाह से राजवंश के देवदत्त भी उहाँ पहुँच गइलन । परम कुलीन वंश के नन्द अउर अर्जुन दूनों अइलें । सब राजकुमार युद्धकला में परम कुशल अउर शीर्ष पर रहलें । आपन द्रुतमान अश्व कंटक पर सवार होके सिद्धार्थो अति उमंग के साथ उहाँ पधरलें । अनजानी भीड़ देख उनकर घोड़ा हिनहिनाये लागल । फेर, उहाँ मौजूद स्त्री लोग मधुर स्वर में मंगल-गान गावे लगली । सौन्दर्यमयी यशोधरा के ओर देख के राजकुमार छन भर रूकलें अउर हँस के घोड़ा के रेशमी लगाम खींच डललें । कंटक से कूद के सभे के ओर देखत दूनों भुजा उठा के कहलें, "ई सब प्रतियोगी जे श्रेष्ठ रतन समान राजकुमारी के बियहे आइल बाड़ें, उनकरा में जे सर्वश्रेष्ठ बा उहो इनकरा योग्य नइखन । राजकुमारी के साथ पावन-परिणय के अभिलाषा करके लोग दुस्साहस के परिचय देहले बा । एह से, सभे प्रतिपक्षीगण आपन पराक्रम सिद्ध करे ।" तब नन्द धनुष परीक्षा खातिर ललकारत अपना लक्ष्य के छः गो दूर रखवा देहलें । लेकिन राजकुमार आपन लक्ष्य के दस गो दूर रखववले कि ऊ दर्शक के कौड़ी के आकार के दिखाई देत रहे । शर संभाल के नन्द लक्ष्य भेद देहलन अउर वाण मार अर्जुन भी लक्ष्य भेदला में सफल हो गइलें । देवदत्त भी लक्ष्य के सटीक भेद देलें जेकरा देख के दर्शकगण आश्चर्य से भर गइलें । यशोधरा चाहत रहली कि उनकर प्राण देवता राजकुमार आपन लक्ष्य भेदला में असफल ना होखस बाकिर उनकरा विश्वास ना रहे कि राजकुमार सफल होइहन । एह से ऊ अन्यमनस्क होके आँखन के

आँचल से ढाँक के निराश भाव से सारा दृश्य देखत रहली । राजकुमार रखल धनुष के उठा लेहलें जेकर ताँत चाँदी के दृढ़बद्ध तार से कसल रहे । ऊ धनुष के डोरी खाली उहे वीर चार अंगुल तक तान सकत रहे जे अति बलशाली, गंभीर बुद्धि वाला अउर धीर होखे । धनुष के डोर चढ़ा के अउर फिर धनुष के दूनों छोर चढ़ा के कुँवर ओकरा के तोड़ देहलन । धनुष तोड़ला पर राजकुमार पूछलें कि का उनकरा ई धनुष खेले खातिर देहल गइल बा? अइसन कह के ऊ ओकरा के दूर फेंक देहलें । दोबारा ऊ कहलें कि ई धनुष प्रेम के योग्यता परखे खातिर उपयुक्त नइखे । का प्रणेता राजकुमार के योग्य धनुष ना मिली? ई सुन एगो दर्शक उत्तर देहलें कि राजमंदिर में हनु धनुष बहुत दिन से पड़ल बा जेकर प्रत्यंचा अब तक केहू भी नइखे चढ़ा सकल अउर संधान करे के कोशिश करत-करत हर वीर थक चुकल बा । राजकुँवर विहंस के बोललें कि ऊ धनुष के तुरंत लावल जाव । लोग प्राचीन मंदिर से ऊ धनुष के उठा के ले आइल । धनुष के अपना घुटना पर रख के, चाप चढ़ा के राजकुमार ओकर मजबूती के भाँप लेहलें । फिर ऊ अपनापन के साथ मधुर वचन बोललें, "जे केहू भी लक्ष्य भेदे के चाहे ऊ एह धनुष से भेद दे ।" लेकिन उहाँ पर धनुष के झुकावे वाला भी केहु ना रहे । तब राजकुमार झुक के ऊ धनुष के आसानी से उठा लेहलें आउर प्रत्यंचा चढ़ा देलें । फेर डोरी खिंच के धनुष के टंकार कइलें । हवा थर्रा गइल अउर टंकार के ध्वनि नगर से बहुत दूर कोसन तक सुनाई दिहल । निर्बल पूछलें कि ई कौन चीज के आवाज ह । लागत बा सिंहनु के धनुष के टंकार से ही शांति भंग भइल बा । दर्शकन के सामने राजकुँवर संधान साध के भेदे खातिर तीर चलइलन । तीर लक्ष्य भेदे खातिर पवन के चीरत चलल अउर लक्ष्य के भेद देलस । तब देवदत्त तलवार चलइला के प्रतियोगिता शुरू कइलें अउर दस अंगुल मोटा ताड़ के विशाल पेड़ काट गिरइलें । अर्जुन बारह अंगुल अउर नन्द पंद्रह अंगुल मोटा पेड़ गिरा देलें । उहें पर ताल के दूगो पेड़ खड़ा रहे । ओकरा के राजकुँवर एके वार में काट देहलें । लेकिन दूनों पेड़ बिना सहारा के कहार के तरह जस के तस खड़ा

रहे । तब नन्द हर्षित हो आवाज लगइलें, "राजकुमार के धार बहक गइल ।" हार के ई बात सुन के यशोधरा काँप गइली । पवन ओ क्षण के अउर राजकुमार के चकित हो देखत रहे । ऊ तुरंत हवा के दक्खिन दिशा से बहवइलस । तत्काल दूनों हरा-भरा सुंदर ताल धरती पर भरभरात गिर गइल ।

फिर चारों लोग घोड़ा दउड़इलें अउर मैदान के तीन चक्कर लगइलें । एह दौड़ में कंटक सबसे आगे निकल गइल, अउर दोसर-दोसर घोड़न के मुँह से झाग निकले लागल । तब नन्द चिल्ला के कहलें कि अगर उनको कंटक जइसन घोड़ा मिले त उहो निश्चये जीत जइहें । यदि पालतू घोड़ा के जगह जंगली घोड़ा लावल जाये तब देखल जाव कि ओकरा के के बस में करता । तबे सिकड़ से बँधल एगो भयानक, विशाल, काला अश्व लाइल गइल, जेकर आँख बड़-बड़ रहे । ऊ दूनों नथुनन से फुँफकारत रहे मानों चुनौती देत होखे कि केहु ओकरा पर चढ़ के देखावे । कौनो तरह नन्द अपना शरीर के संभाल के घोड़ा पर चढ़ले । परंतु दूनों पैर पर खड़ा होके घोड़ा उनकरा के गिरा देलस । अर्जुन कुछ क्षण तक घोड़ा के पीठ पर जमल रहलें अउर चाबुक से झटका दे घोड़ा के पीठ पर दे मरलें । किन्तु घोड़ा अचानक भड़क गइल अउर पैर मारे लागल । अर्जुन ऐंड़ लगइलें अउर घोड़ा के पीठ पर से धम्म से गिर गइलें । तबे उहाँ अनेक अश्वपाल आ गइलें अउर ऊ घोड़ा के चालाकी से लोहा के सिक्कड़ में बाँध देलें । पागल के तरह व्यवहार कर रहल ओह जंगली घोड़ा के देख के लोग कुँवर से कहल शुरू कर देलस कि राजकुँवर अश्व के मत छेड़स काहेकि ओकरा में तूफान बा, ओकर क्रोध अग्नि के समान बा अउर सभे के कुँवर के जान प्यारा बा । बाकिर कुँवर आदेश देहलें कि एह घोड़ा के सिकड़ तुरंत खोलल जाव । राजकुमार सिकड़ पकड़ के ओकरा नजदीक गइलें अउर घोड़ा के सिर पर प्यार से दाहिना हाथ फेरत लगाम थाम के प्रेममय मधुर वचन बोललें । फिर घोड़ा के नेत्र अउर गला पर हाथ फेरत ओकरा पीठ पर ले गइलें । ई देख के सब लोग चकित रहे । घोड़ा शीश

झुका के उनकर आज्ञा मानत रहल । अइसन लागत रहे कि मानों कउनों ज्ञानी पुरूष अपना गुरू के वंदना कर रहल होखें । कुमार घोड़ा पर सवार भइलें तबो ऊ शांत रहल । ऊ कुँवर के आज्ञानुसार चलत रहल अउर ओकर हाव-भाव पूरा तरह बदल चुकल रहे । जन गण पुकार के कहे लागल कि राजकुँवर ही सर्वश्रेष्ठ बाड़ें । एकरा में कउनों संशय नइखे ।

बियाह

राजा सुप्रबुद्ध राजकुमार के सारा कला-कौशल देख के आश्चर्य से भरल अउर प्रसन्न रहलें । ऊ कहलें कि राजकुमार ही सबकर प्रिय रहल बाड़े अउर सबकर इहे कामना रहे कि ऊ सर्वश्रेष्ठ रहस । लेकिन अपने के शक्ति देख के के आश्चर्य से ना भर जाई? सब लोग कहेलें कि अपने के अपने आप में ही खोवल रहेनीं अउर सपना देखत रहेनीं । युद्धक्षेत्र में, वन में शिकार के समय, सांसारिक व्यवहार कुशलता में अउर कुशल लोगन का बीच रउरा सबसे भिन्न बानीं । बाकिर रउरा सब प्रतिद्वन्द्वी के जीत लेहनीं । ई पुरूषार्थ अपने कहाँ से प्राप्त कइनी? कइसे प्राप्त कइनीं? राउर पुरूषार्थ से ई पृथ्वी, नगरी अउर जनम-भूमि कपिलवस्तु धन्य हो गइल बा ।

पिता के निर्देश पाके राजकुमारी सोना से सुसज्जित काला धारी युक्त साड़ी में आपन दूनों हाथ से जयमाल उठइली । घूँघट में ऊ मंद-मंद मुस्करात रहली । जनसामान्य के बीच से होके ऊ कुँवर सिद्धार्थ के सामने तीव्रता से पहुँचली मानों ऊ उन कर दिव्य छटा होखस । कुँवर के पासे ऊ पागल अश्व गर्दन झुकइले नम्रता से चुपचाप खड़ा रहे ।

राजकुमारी कुँवर के नियरा गइली अउर आपन चंद्रमुख उठइली । उनकर प्रेम रस से भरल आँख के सपना पूरा भइल ।

राजकुमार के गला में वरमाला डलली । जयगान के पद गा के राजकुँवर के चरण स्पर्श कइली अउर पुलकित होके, हृदय में प्रेम के भाव भरके कहली, "हे प्रियतम ! रउरा हमरा के देखीं । हम सब विधि से अपने के पत्नी बन गइल बानीं ।" सभे लोग उनकरा के देख के हरखित रहे अउर ओह दूनों पर फूल बरसावत रहे ।

कनक जड़ल साड़ी के रहस्य

बहुत दिन बाद, जब सिद्धार्थ बुद्ध हो गइलें तब शिष्य लोग विनयपूर्वक ए कथा के मरम जानल चहलें कि यशोधरा जयमाल के समय कनक जड़ल साड़ी काहे पहिनले रहली, अउर उनकर हृदय गर्व आ अनुराग से काहे भरल रहे ?

बुद्ध कहलें, "हमरा याद आवता । लाखों बरस पहिले के जनम के बात ह । हम कउनों जनम में हिमगिरि के सघन वन के बाघ रहनीं अउर आपन भूखल मित्रन के साथ वन में दउड़त रहीं अउर झाड़ियन में छिप के शिकार करत रहीं । तारन से आच्छादित आसमान के नीचे हम शिकार खोजत आदमी अउर हिरन के गंध सूँघ के अउर ओकरा के पहचान के, ओकरा पर प्रहार करीं । जइसहीं गाय चकित हो आपन करिआ आँख उठावे, हम समझ जाईं कि ओकर मृत्यु नजदीक आ गइल बा । वन में चाहे नदी के किनारे, हमरा जे भी साथी मिललें ओमें एगो खूब सुन्दर बाघिन रहे अउर ओकरा के प्राप्त करे खातिर सब बाघ आपस में लड़ पड़लें । ओ बाघिन के चमड़ी पीला रहे अउर ओकरा पर काला लंबा धारी खिंचल रहे जइसन कंचन जड़ल साड़ी यशोधरा पहिनले रहली । ओकरा के पावे खातिर जंगल में घमासान युद्ध भइल अउर सब बाघ दाँत अउर नख के घाव से कराहत रहलें । ऊ सुंदर बाघिन इ क्रूरतम लड़ाई के चुपचाप, धैर्यपूर्वक देखत रहली । जब हम ओ भीषण युद्ध में विजयी भइनीं तब ऊ कूद के हमरा पास अइली अउर प्रेम से हमार घायल शरीर के चाटे लगली । युद्ध में हारल

बाघन के बीच ऊ गरजत हमरा के अपना साथे ले गइली । प्रेम अउर गर्व के साथ ऊ बाघिन हमरा संगे रहली । एह तरह जनम-मरण के पहिआ घूमत जाला अउर पिछला जनम के अनुराग अगला जनम में प्रगट होत जाला।"

यशोधरा के पाके कुँवर अति आनन्दित भइलें । सूरज जब मेष लगन में आइल त उत्तम घड़ी देख सुप्रबुद्ध के घरे बड़ा धूम-धाम से बियाह के तैयारी कइल गइल । विवाह मंडप दिव्य रहल अउर तोरण द्वार अनेक रंग से सजल रहे । मंगल गीत गावत नारी अउर गाजा-बाजा के साथ भीड़ अइसन प्रतीत होत रहे मानों बहुरंगी फूलन के कियारी होखे । सुन्दर मेहरारू अट्टालिका से फूल के बरसा करत रहलीं अउर द्वारचारी मधुर गीत गावत रहलीं ।

वर-वधू प्रसन्न मुद्रा में बियाह के आसन पर बइठलें । मधु पर्व, कंगन, ग्रन्थिबंधन, भाँवरी अउर सब बंधन के रीतिपूर्वक पालन कइल गइल । बियाह में ऋषिगण मंत्र पढ़लें अउर ब्राह्मण वर-वधू के आशीष देहलें । बियाह समाप्त भइला पर राजा सुप्रबुद्ध आँसू भरल आँख से अउर वात्सल्य मुस्कान के साथ यशोधरा के पास आके राजकुँवर से कहलें, "यशोधरा अपने के पत्नी हो गइली । इनका पर दया करके इनकरा के मानपूर्वक रखेब ।" एह तरह यशोधरा आपन पिता के घर छोड़ के राजकुँवर के साथे अपना ससुराल, राजमहल खातिर विदा हो गइली ।

रंगभवन विहार

नवदंपति प्रेमरस से भरल रहलें लेकिन राजा के उनकरा प्रेम पर पूरा विश्वास ना रहे । एह खातिर ऊ एगो मनोहर, रमणीय अद्वितीय अउर विशाल प्रेमालय बनावे के आज्ञा देहलें । कुँवर के प्रेमागार एतना सुन्दर अउर निराला बनावल गइल कि ऊ धरती पर अद्वितीय रहे । ओकरा सीमा पर हरा-भरा पहाड़ ओकर शोभा बढावे

अउर पास में निर्मल अउर धवल रोहिणी नदी के धारा बहत रहे । भौंरा के गुंजार जइसन कल-कल के सुमधुर ध्वनि कर हिमचट्टान से उतर के रोहिणी के जल गंगा के धारा में मिल जाये । प्रेमागार के दक्खिन दिशा में विशाल अउर सघन वट, शाल अउर आम के पेड़ फइलल रहे जे पर फूलन से लदल मालती लता पसरल रहे । ई प्रेमागार कोलाहल भरल राजनगर से दूर बनावल गइल । ओह महल के उत्तर दिशा में शुद्ध, सफेद हिमालय खड़ा रहे । बरफ से ढँकल हिम शिखा विषद अउर विशाल रहे । हिमाच्छादित चट्टान हरियाली भरल ढाल थमले खड़ा रहे । ऊपर नीला आसमान अउर नीचे परबत के मालाकार श्रेणी फइलल रहे । ऊ अद्भुत दृश्य मनुष्य के कल्पना के उड़ान भरवा के ओह देवालय के अमरधाम (स्वर्ग) में रमा देत रहे । चोटियन के नीचे घना वन रहे जेमे झरना बहे । ओमें चीर, अर्जुन, देवदार के असंख्य पेड़ रहे जेमें बाघ के गर्जल अउर हिरण के दल के चीत्कार सुनाई पड़े । कहीं चट्टान पर खड़ा होके भेड़ मिमियात रहे त कहीं गरूड़ किलकारी मारत गगन में विचरण करे । नीचे हरा-भरा धरती अइसन दिखाई देवे मानों देवता के दल आसन बिछा के सुख अउर शांति के रचना कर रहल होखस । ऊ पहाड़ी अउर वन के सामने एगो छोट समतल पहाड़ी पर स्थापक अनेक दिव्य मंडप बनवलें । ओह मंडपन में पौराणिक गाथा चित्रित कइल गइल रहे जेमें राध-कृष्ण अउर गोपियन के रास-लीला दर्शावल गइल रहे । कहीं पर दुःसाशन द्रौपदी के चीर हरत देखात रहे त कहीं हनुमान जी सीताजी के प्रिय राम के संदेश देत देखात रहले । कहीं पर ऐश्वर्य अउर बुद्धि के दाता गणेशजी तोरण द्वार पर विराजत दरशावल गइल रहले । उपवन अउर प्रांगण के बीच रस्ता के बाद भीतर में एगो दुआर रहल जेकर चौखट भारी नीला संगमरमर पत्थर के बनल रहे, जेमे चंदन के विशाल किवाड़ रहे जे विचित्र चित्रन से सजल रहे । दुआर के भीतर विशाल मंडप शीतल लता से घिरल रहे अउर ओमें सीढ़ी अउर सुंदर जाली बनल रहे । भवन में अनेक स्तंभ रहे अउर उन्हनीं के ऊपर सुन्दर चित्रन से सजल छत रहे । कहीं मनोहर फुहारा से निरंतर झरना के धार निकलत रहे, त कहीं

बहुरंगी कमल खिलल रहे अउर मछली तालाब में बिहरत रहे । इन्द्रधनुषी रंग के अनेक पक्षी ताड़ पर फड़फड़ास अउर सुन्दर सुरक्षित घोंसला बना के ओमें रहस । सुन्दर शिलाखण्ड पर मोर पंख पसार घूमे अउर सफेद बगुला उनकरा के देखत रहे । तोता एगो फल से उड़ के दूसर फल पर जाये, चिड़िया चहचहाये अउर फूल भी आपस में खेलत रहलें । कउआ के आवाज पर बंदर किलकारी मारे । सब जीवधारी ओ शांतिधाम में आनंदपूर्वक रहत रहे । रसभरल प्रेमधाम हमेशा प्रेमभाव से भरल रहे । एह तरह विश्राम भवन के छटा सुखद अउर रमणीय रहे । उहाँ सब लोग मधुर वचन बोले अउर हमेशा सेवा भाव में लीन रहे । नित्य नया-नया रूचिकर साज सजावल अउर बजावल जाय । कुँवर के खुशी से सभे प्रसन्न रहे अउर गर्व के साथ उनकर आज्ञा के पालन करे । एह प्रकार से कुँवर के जीवन नाना सुख-सुविधा के बीच हास-परिहास से युक्त व्यतीत होत रहे । भवन के भीतर गुप्त गृह रहे जेकर कलाकारी हृदय के मोहे अउर मस्त करे वाला रहे । पहिले संगमरमर लागल सुंदर क्षेत्र रहे जेकरा ऊपर नीला आसमान अउर बीच में तालाब रहे । संगमरमर के चित्रन से सजल अउर पच्चीकारी कइल सीढ़ी हृदय के मुग्ध कर देवे । ग्रीष्म के गर्मी अइसन लागे मानों स्वच्छ ठंडा ओस के बूँदन पर पैर रखल गइल होखे । सूरज के किरण पेड़न के बीच से निकल के स्वर्णिम प्रकाश फइलावत रहे । जब-जब राजकुँवर महल के अंदर प्रवेश करस, प्रखर दिन प्रेममय संध्या में बदल जाय । रंगभवन के भीतरी द्वार के सुन्दरता पूरा जगत के आश्चर्यचकित करे वाला रहे । अगरबत्ती के सुगंध मन के मोह लेवे । दीया के रोशनी अउर कमरा के झरोखा से निकले वाला चाँदनी नक्काशी पर मनोहारी चमक देवे । गद्देदार बिस्तरन पर स्वर्णिम चादर बिछावल जाये । दुआरन पर सोना जड़ल परदा लटकल रहे । धवल, मृदुल भोर साँझ के तरह लागत रहे, रात दिन के तरह आ दिन रात के तरह लउकत रहे । कड़ाही में छान के तरह-तरह के पकवान बनावल जाये अउर डालियन में कंदमूल तथा चुन-चुन के फल ले आवल जाये । शीतल, मधुर अउर रसभरल ठंडई तथा कठिनता से तैयार

कइल गइल मिठाई वर-वधू खातिर ले आवल जाये । सुदंरी आपन भव-भंगिमा अउर घुंघरू के झंकार से हमेशा सेवा में उपस्थित रहत रहलीं अउर मृदंग, वीणा सजा के साज लगावस । अइसन सुन्दर परिवेश में भला केहू कइसे उदास अउर अशांत रह सकत रहे ?

नाच करत गोड़ के ताल पर ध्यान आवते बेचैन मन पल भर में शांत हो जायें । राजकुँवर दुखियन के दुःख देख उदास ना हो जास एह खातिर बीमारी, दुख, तकलीफ , डर से ग्रस्त आदमी कबो उनकरा सामने उपस्थित ना हो सकत रहलें । एह बात के भी खास इंतजाम कइल गइल रहे कि कहीं भी रोअल सुनाई ना देवे अउर ना कहीं चिंता के आग दिखाई दे । एह से हमेशा मीठा गीत गूँजत रहे अउर नचनिया लोग अपना साज पर नाचत रहे । अगर कवनो भी दाई के केश में एको उजर बाल दिखाई दे जाय या नाच करत-करत ओकर पैर थकल सा लागे त उनका के तुरंत राजकुमार के सेवा से हटा देहल जाय । मुरझाइल फूल के तुरंत ट्हनी से तूड़ देहल जात रहे अउर पीयर, सुखल पत्तन के छिपावल जाय । राजा के चेतावनी रहे कि खराब अउर उदास करे वाला दृश्य के हमेशा राजकुमार से छिपावल जाय । “उदास करे वाला दृश्यन के उनकरा सामने मत आवे द अउरी अइसन इंतजाम कर द कि तरह-तरह सुख के राज हमेशा राजकुमार के आँख में बसल रहे । एह तरह से विधि के विधान मिट जाई अउर राजकुमार जरूर चक्रवर्ती सम्राट बन जइहें ।” राजा कुँवर के भूपेश रूप में देखल चाहत रहलें, जेमें बेटा के जरिए सब जगह अपने के व्याप्त होखत देख सकस । प्रेम अउर यौवन के बंधन में बाँध के उनकर हर पहर रखवाली कइल जात रहे जइसे जेल में कैदियन के रखवाली कइल जाला । आधा कोस से भी यदि केहू के चिचिआइल सुनाई देवे त चिचियाये वाला आदमी के तुरंत पिटाई कइल जाय । ओह महल के फाटक बहुत मजबूत रहे अउर बाहर जाए खातिर तीन दरवाजा के पार करे के पड़े । हर फाटक मजबूत सिक्कड़ से बँधल रहे अउर चौकिदारी के बढिया आ मजबूत इंतजाम रहे । राजा सिपाही लोग के चेतइलें रहलें कि कौनो

गलत घटना भइला पर ओह लोग के आपन जान खतरा में आ जाई । कौनों भी आदमी के दरवाजा के बाहर आइल गइल ना देहल जाये चाहे ऊ कुँवर खुद काहे ना होखस । राजा के एह आज्ञा के दिन-रात पालन होत रहे ।

तिसरका सर्ग
राजकुमार के अदृश्य संदेश

राजकुमार सिद्धार्थ सब सुख से घिरल स्थान पर अपना पत्नी यशोधरा के साथे सुखपूर्वक रहत रहलें । बुढ़ापा, मउअल, दुःख, रोग आउर क्लेश के बारे में उनकरा लेश मात्र भी जानकारी ना रहे हालाँकि जब-तब संदर्भित विषय के उनकरा आभास मिल जात रहे । फेरू सुख के नींद में सूत ऊ सब कुछ भुला जास । कबो-कबो ऊ सपना में गुम हो जात रहलें अउर उठला पर बोझिल मन से फिर ओकर अनुमान लगावे लागस । कबो-कबो जब पत्नी यशोधरा के छाती पर सिर रखके कुमार सुतस अउर यशोधरा प्रसन्न मन से आपन कोमल हाथ से धीरे-धीरे पंखा हाँकस तब अकेले में सहसा कबो-कबो "हे जन! हे व्याकुल जन!" के उच्चारण करत कुँवर घबरा के उठ बइठस, "सब बात सुनऽ तानीं, सब चीजन के जानऽतानी, आ रहल बानी! भाई!" ओह समय उनकर दिव्य मुख तेज-ज्योति से देदीप्यमान हो जाए । उनकर चेहरा पर करूणा के कोमल परछाई देखाई देवे लागे । यशोधरा शंका में पड़के, लोर भरल आंखिन से पति के भलाई खातिर पूछ बैठस, "हे प्राणनाथ ! रउरा पर कवन कष्ट भा संकट आ गइल बा, हम जान नइखीं पावत ।" कुँवर उठके यशोधरा के उदास चेहरा देखे लागस अउर फेरू उनकर लोर सुखावे के खातिर हँसे लागस । संकेत पाके संगीतकार वीणा के तार छेड़स । खिड़की के पास एगो पुरान वीणा रखल रहे । हवा के झोंका से ओकर तार आपस में टकरा के झुनझुना जाय अउर ऊ अपने आप बज उठे । ओसे अटपटा-सा धुन निकले लागे । जे ओह वीणा के मरम जाने, उहे ओके सुन पावे । सिद्धार्थ देवन के वाणी अच्छी तरह समझत रहलें । उनकरा कान में जब-तब सुमधुर संगीत सुनाई पड़ जाय "हम ऊ वाणी हईं, बयार हईं जौन रोज विचरण करत रहेली । थोड़ा सा विश्राम खातिर हमनी के तरसत बानीं । इहाँ जीवन प्राणियन के हाहाकार, आह अउर झंझावात के दायरा में सिमट के रह जाला । तोहार इहाँ आवे के का कारण बा?

कहाँ जाएके बा? हम इहो नइखीं जानत । ई नाशवान जिनगी कहाँ ले जाई, समझ नइखीं पावत । तोहरे तरह हमनीं जइसन जीउअन के भी इहाँ अवतरण भइल बा । परिवर्तन से जुड़ल दुःख के बीच सुख के अनुभूति के पइले बा? दुःख के परिवर्तनशील समय में तूं भी सुखी नइखऽ । सुअवसर अइला पर कबो-कबो ही सुख के अनुभूति होला । जीवन अउर पवन दूनों के दशा एके जइसन बा।

हे गुरूजी! सारा पृथ्वी के भ्रमण करत हमनीं का ग्रह-नक्षत्र पर आपन क्रोध निकालेनीं । एह ब्रह्मांड में ना जाने केतना बाधा अउर विपदा बा जेकरा के सहन करत हमनीं का पछतानी अउर आँख हमेशा नम हो जाला । आपन जीवन के जेकर एक ना एक दिन अंत होवे ही के बा, अतिप्रिय मान के उपहासपूर्ण क्रंदन कइल हमार ध्येय बन गइल बा । ए दुःख से मुक्ति पावल ठीक ओही जइसन बा जइसे कि आसमान के उंगली देखावल भा बहत धार के रोके खातिर आपन हथेलियन के प्रयोग कइल । ए पृथ्वी पर तोहार अवतरण मुक्ति दिलाये के उद्देश्य से भइल बा । पाप से डँसल लोग आपन मुक्ति खातिर तोहार राह देख रहल बाड़ें । लोग झूठा जीवन के भँवर में फँसल बाड़ें । एह से, हे माया पुत्र ! उठऽअउर इनकरा के एह कष्ट से मुक्ति दिलावऽ । हम आकाशवाणी के संप्रेषक हईं । हम कहीं एह भँवर जाल मे अउर ना फँस जाईं । उठ! अउर चल! कुँवर! अब एह संसार में कुछ खोजऽ । प्रेम जाल से मुक्त होके अब दुःख के आपन बना ल, संसार में व्याप्त वैभव के छोड़ द अउर दुःख के अंगीकार कर संसार के सुखमय बनाव । वीणा के तार से उदास होके अब हम दुःख विलाप करे लागल बानीं काहेकि तू नइख जानत कि हमनीं का अपना साथे केतना दुःख ढोवतानी । तनिक ध्यान द, हमनी का उपहास उड़ावेनीं अउर तूं ऊ दुःख के छाया में भुलाइल जइसन बइठल बाड़ ।"

साँझ भइल । यशोधरा के साथ लेके, उनकर हाथ पकड़ के राजकुमार अपना मित्र मंडली के साथे अपना आसन पर जा बइठलें।

एगो दासी गधबेर के समय बितावे के उद्देश्य से एगो पुरान कहानी सुनावे लगली जेमे प्रेम के आउर उड़त जादुई घोड़ा के चर्चा रहे । ऊ दूर-दूर देश के रंग-रंग के बात बतावे लगली, जहाँ पीयर वर्ण के लोग निवास करेला अउर सूरज रात के दर्शन कर सागर में डूब जाला । चित्रा से पवन गीत अउर कथा सुन के, कुँवर यशोधरा से कहलें "तूं एकरा के आपन मुक्ताहार दे द अउर हमरा के बताव कि का सचमुच ई धरती एतना सुन्दर अउर विशाल बा? का अइसनों देश बा जहाँ सूरज सागर में डुबकी लगावे ला, इहाँ पर रहे वाला जीव के तरह का उहों करोड़ों-करोड़ों जीव रहत होइहन? उहों एह संसारे के जइसन कष्ट अउर दुःख के बीच लोग रहत होइहें? अगर हमरा कोशिश कइला से उनकर पुकार सुन लेहल जाई त हम उनकर जरूर सहायता करब । कबो-कबो हम पूरब दिशा से सूरज के निकल के लगातार स्वर्णिम मार्ग पर बढ़त देख के आश्चर्यचकित हो उठेनीं । हम सोच में डूब जानी कि ऊ प्राणी कइसन होइहें जे उगत सूरज के किरन देख के ओकर अगवानी करत होइहें । चित्रे! तू अनगिनत देश के बात सुना देलू बाकिर उड़े वाला ऊ घोड़ा कहीं नइखे लउकत । अगर हम ओकरा के पा जाईं त एह भवन के छोड़ देब अउर दिन रात एह पृथ्वी के विस्तार देखत फिरब ! गरूड़ पक्षियन के फइलल आ विशाल राज्य केतना मनोहारी बा जेमें ऊ पंख पसार के आसमान के छुए खातिर उड़त रहेलें । जहाँ भी मन जाला ओही जगह घूम आवेलें । हमरो अगर पंख मिलित त हमहूँ विचरत फिरतीं । उड़-उड़ के हिमगिरि के ऊँच चोटी छान मरतीं जे पर सूरज के रक्त समान लाल किरण हमेशा पड़त रहेला अउर उहें बइठल-बइठल आँख पसार के चारों ओर सारा संसार देखतीं । हम अबले एह विस्तृत भूखंड के देखे के प्रयास काहे नइखीं कइलें ? द्वार के बाहर का-का बा, ओकरा जाने के चेष्टा काहे ना कइनीं?" तब एक दासी उत्तर देहली, "पहिले आपन नगर बा जेमे ऊँचा ऊँचा मंदिर, बाग, तड़ाग तथा आम के पेड़ बा । ओकरा आगे सुंदर अउर समतल खेत बा अउर फेरू नाला, नदी, मैदान अउर कोसों दूर तक जंगले जंगल । कुँवर वर! ओकरा आगे राजा बिंबिसार के राज्य बा

। ई धरा बहुते विशाल बा जेमें करोड़ो-करोड़ो लोग निवास करे लें ।" कुँवर आदेश देहलन, "छन्दक से कहऽ, ऊ बिहान रथ लेके आवे अउर हमरा के रथ में बइठा के नगर के दर्शन करावे ।"

उद्‌बोधन

दूत राजा के पास जाके सारा बात कहलस, "हे राजन ! कुँवर के इच्छा बा कि ऊ राजमहल से बाहर जास । ऊ बाहर के प्राणियन के दुखी मन बहलावल चाहतारन आउर ए खातिर ऊ काल्ह दुपहर के बेरा रथ जोत ले आवे के आदेश देले बाड़ें ।" कुछ छन विचार कइला के बाद राजा कहलें, "ई अच्छा मौका बा, बाकिर आज पूरा नगर में डौंडी पिटवा द कि हाट-बाट सब सुन्दर सजे अउर कहीं भी, कुछु कुरूप भा बदसूरत ना देखाई पड़े । कुँवर जवना समय गुजरिहें ओह घड़ी कवनो बूढ़ा, लंगड़ा, रोगी भा अन्धा अपना घर से बाहर ना निकले । नगर साफ, स्वच्छ, सुसज्जित अउर सुंदर देखाई पड़े । सारा रास्ता जल से धो देहल जाए अउर अपना-अपना दरवाजा पर औरत लोग कुँवर के सम्मान खातिर थाली में दूब, रोली, दही आदि सजा के रखें । हर घर में फूल-पत्ता से सजल-सजावल झालर लटकल हो जेमें मनोरम दृश्य देखात हो । साथ-साथ दीवारन पर बहुते देखनऊक अउर बेजोड़ चटकीला तस्वीर बनावल होखे । पेड़ के टहनीं पर रंग-बिरंगा झंडा अइसे फहरावल जाव कि लागे कि कुँवर के अइला के खुशी में मस्त होके झूम रहल होखें । मंदिर अउर मठो वगैरह सतरंगी रंग में रँगल जाय आ ओकर सिंगार, रूचिकर ढंग से कइल जाय । सूरज वगैरह देवता के मूर्ति के उनका अनुसार सजा के अनूठा दृश्य खड़ा कइल जाव । आज एह नगर के सजावट अइसन कइल जाव कि देखला पर ऊ इन्द्र के नगर जइसन लागे ।" उद्‌घोषणा करे वाला पूरा नगर में ढिंढोरा पीट के लोग के सामने घोषणा कइलस -"सुनीं नगरवासी, सुनीं । नगर नरेश ई हुकुम देहले बाड़ें कि आज नगर में कवनो अमंगलकारी दृश्य कुँवर के सामने ना आवे के चाहीं । अंधा, लुला,

दूबला अउर बूढ़ा अपना घर से मत निकल । अगर आज केहू के मउअत हो जाय त ओकर लाश दाह-संस्कार खातिर रात तक ना निकालल जाव । ई राजा के हुकुम ह, एके सब लोग-बाग ध्यान से सुनऽ ।"

सब घर सजावल गइल । पूरा नगर सजल अउर सारा रस्ता भी सजावल गइल । कपिलवस्तु के दृश्य सँजल-सँवरल अउर चित्रित, मनोरम तथा मनोहारी रहे । राजकुमार भी आपन सुंदर, नक्काशी कइल रंगीन रथ पर सवार होके नगर भ्रमण खातिर निकल पड़ले । जौना रथ पर राजकुमार बइठल रहलें ओके बर्फ के समान दू गो सफेद घोड़ा खींचत रहे । रथ मंडप पर तेज किरिन पड़त रहल रहे । नगरवासी लोग के खुशी देखते बनत रहे । ऊ लोग कुँवर के सम्मान में हाथ जोड़ले अभिवादन करत रहलें अउर राजकुमार नगरवासियन के देख के अति प्रसन्न होत रहलें । सभे के एह प्रकार हँसत-मुस्करात देख के कुँवर के लागल कि मानों जिनिगी बहुते सुखमय बा । राजकुमार कहलें, "जन मानस हमरा के बहुत चाहता । राज नरेश सदाचारी अउर सरल बाड़े । तबे त सब जन उनकरा पर मोहित बाड़ें । हमरा नइखे पता कि हम कबो इनकर कौन सा उपकार कइनीं भा बहिनन के कौन सेवा कइनीं ? मन करता कि ऊ बालक जे हमरा पर मुग्ध होके फूल के हार फेंकलस अउर कली बरसवलस, ओकरा के रथ पर साथे बइठा के गलियन से गुजरत ओकरा के नगर के शोभा देखाईं । अइसन देश अउर सुसमृद्ध जन समाज पा के राज-पाट कइल केतना सुखद बा ? ओह! केतना आनन्द के ई बात बा? हमरा के देख के सब भाई मने मन प्रफुल्लित अउर हरखित बाड़ें । बहुत सारा चीज बा जेकर हम अपेक्षा ना कइले रहनीं कि जेके जनमानस हृदय में पाके सतुष्ट होइहें ।" राजकुमार छंदक से कहलें ,"रथ के आगे बढ़ावऽ; हम ध्यान-पूर्वक नगर के सारा परिदृश्य देखब । हमरा एह बात के ज्ञान नइखे कि देखीं कि ई संसार केतना सुखकारी बा?"

एक दरवाजा से हो दूसरा दरवाजा के ओर बढ़त रथ आगे चलत जात रहे । रस्ता के दूनो ओर जनसमूह के सैलाब उनकर अगवानी अउर अभिवादन खातिर खड़ा रहे । राजकुमार के जयघोष करत जनसमूह थकत ना रहे ।

वृद्धावस्था

राजा के आज्ञा का मोताबिक जन समूह में सब केहू प्रसन्नचित अउर आनन्दित रहल । बाकिर ओही घड़ी एगो बूढ़, जेकर देह जर्जर हो गइल रहे, जेकर हाथ-पाँव काँपत रहे, अपना झोपड़ी से हाँफत बाहर निकलल । ओकरा देह पर मइला-कुचइला, चीथड़ा लिपटल रहे । ऊ जन समूह में के रहे जे भूलाइयो के ओकरा ओर देखीत? चेहरा पर झुर्री पड़ चुकल रहे, ओकर चाम हड्डियन के छोड़ के लटकत रहे । सामने के ओर झुकल समकोण बनावत ओह बूढ़ा के पीठ देख के ओकर उमर के पता चलत रहे । ओकर धँसल आँख से लगातार लोर बहत रहे । बिना दाँत वाला ओह बूढ़ा के गरदन लगातार हिलत रहे आउर आश्चर्यचकित हो ऊ एह धूम-धक्कड़ अउर उत्साह के एगो थकल आदमी जइसन देखत रहे । थाकल तथा बेकार हो गइल शरीर के टेकला में असमर्थ एगो लाठी पर ऊ आपन शरीर के कंकाल के एक हाथ के सहारे टेकले रहे । दूसर हाथ आपन हृदय पर अइसे रखले रहे मानों ओकरा साँस लेहला में बहुते कष्ट हो रहल होखे । ऊ मद्धिम आवाज मे कहलस, "हे दाता ! तोहार जय होखे-हमरा के कुछ दे दीं, हम एक या दू दिन अउर जिये वाला बानी ।" हाथ फइलइले खड़ा, कफ से रुँधल गला के कँपकपात स्वर में कराहत ऊ फिर कहलस, "कुछ मिल जाइत दाता !" बाकिर जनसमूह ओकरा के धकेल के क्रोध से बोल उठल, "लउकत नइखे, राजकुमार आ रहल बाड़े?" राजकुमार ओह दृश्य के देख के संबोधित करके कहे लगलें, "रहे द, ओकरा के रहे द!" ओही घड़ी राजकुमार अपना सारथी से एक-दूगो सवाल कइलें - "इ का ह? देखला में त ई आदमी जइसन बा बाकिर इ बा बहुते

विकृत, गरीब, गंदा अउर कमजोर । का एह संसार में अइसने आदमी जनम लेवे लें ? 'चार दिन रहब' एह कथन में का छिपल बा? एह आदमी के हाड़-हाड़ दिखाई देता, का एकरा भोजन ना मिलेला? एकरा पर कौन बिपत आ पड़ल बा जे देखाई नइखे देत?" सवालन के जवाब में सारथी कहलन "सुनीं, राजकुमार! इ बूढ़ा अब अपना जिनगी के भार ढो रहल बा, अउर कउनों बात नइखे। चालीस बरस पहिले ए बूढ़ा के पीठ सीधा रहे, अंग सुडौल अउर सुंदर रहे तथा दृष्टि भी ठीक रहे । बाकिर काल कराल रूपी तस्कर एकरा शरीर के सब रस चूस लेहले बा अउर ई बेचारा शारीरिक शक्ति अउर अब बुद्धि-विवेक भी खो बैठल बा । एकर जिनगी बिना तेल के दीया जइसन बुझ रहल बा । एकरा देह में कुछुओ सार शेष नइखे । ज्योति पुंज जवाब दे देहले बा । अब एह जर्जर शरीर में जेतनो सा लौ बचल बा ओकर का भरोसा? जाने कब आखिरी बेर तेज लौ के साथ जर के बुता जाय? राजकुमार अपने के मान लीं कि इहे वृद्धावस्था ह । अपने त सुशील अउर समझदार बानीं । रउरा एकरा ओर ध्यान देके आपन समय काहे बरबाद कर रहल बानी?" राजकुमार सवाल कइलें, "का सभे के अइसन गति होला कि सौ दो सौ में केहू एक के होला?" छंदक कहलन, "सभे एह दशा के प्राप्त होई, अगर एतना दिन ले जीयत रह पाई त ।" राजकुमार दोबारा पूछलें, "यदि हम एतना दिन ले जिंदा रहब त का हमरो अंत अइसनें होई? गोपा (यशोधरा) अगर अस्सी बरस के उमर ले जीवित रहिहें त का बुढ़ापा एही तरह से उनकरो के घेर ली? गंगा अउर गोतमी समान सखी, जे अभी कमसीन अउर सुंदर बाड़ीं, उनकरो शरीर का एही तरह जर्जर अउर शक्तिहीन हो जाई?" "हँ, जरूर राजकुमार!" सारथी के जवाब रहल । राजकुमार बोललें, "बस कर, अउर अब घर के रास्ता पकड़ । रथ मोड़ऽ अउर तेजी से घर के ओर बढ़ चलऽ । हम आज जे कुछ देखनीं ओकर हमरा तनिको अनुमान ना रहे ।" राजकुमार ओही क्षण आपन भवन लौट अइलें। उदास होके अत्यन्त खिन्न मन से सोचे लगलें । उनकरा सामने फल, पकवान सहित अलग-अलग प्रकार के

व्यंजन परोसल गइल, बाकिर राजकुमार ओकरा तरफ ना देखलन, ना छुअलन । सारा दास लोग सिर झुकइले खड़ा रहल । उनकरा मन के मोहे खातिर राज नर्तकी अथक प्रयास कइलीं, बाकिर ऊ उदास अउर मौन होके लगातार सोचते रहलें । दुखी यशोधरा उनकरा चरन में आपन सिर झुका के पूछली, "कहीं नाथ, का भइल? का रउआ हमरा में सुख नइखे प्राप्त होत जे एह भाँति दुखी अउर खिन्न मन बइठल बानीं?" राजकुमार कहलें, "सुख? ओही के बात त मन में खटकत बा । जीवन में सुख के अंत जरूर होई । यशोधरे! एक न एक दिन हम दुनू बूढ़ा हो जाएब जेमें ना प्रेम होई, ना सौंदर्य, ना रस अउर ना शक्ति । हम दूनों अधर में अधर मिलाके अगर भुजपाश में बँधल भी रहीं, तबो काल-कराल घात लगवले हमरा बीच घुस आई । काल ई उमंग, ई जवानी आ सुन्दरता के एह तरह से हर ली जौना तरह रात के अन्हार सूरज के रोशनी के हर लेला । इहे जान के हमरा हृदय में शंका छाइल बा कि सोचऽ! ई काल कसाई केतना विकराल बा? हम कइसे आपन यौवन रस के बचा के रखीं? राजकुमार रात भर बइठले रह गइलन अउर बेचैन होके इहे बात सोचत रह गइलें ।

राजा के सपना

दोसरा तरफ राजा शुद्धोदन रात में सपना देख देख के बेहाल होत रहलें । इन्द्रध्वज के गिरल चिंता के कारण रहे । प्रचंड हवा के झोंका ओकरा के गिरा देले रहे, ओकर टुकड़ा-टुकड़ा कर के माटी में मिला देले रहे । फिर चारों दिशा से कुछ देव पुरूष के आगमन भइल जइसे ऊ कहीं प्रतीक्षारत होखस अउर ऊ लोग ओह टूटल-गिरल रेशमी ध्वज के तुरंत उठवलें, अउर ओकरा के नगर द्वार के बाहर भेज देहलें । दूसर सपना में राजा दस हाथियन के देखलें । ओकनी के पदाघात से पृथ्वी कंपित होत रहली । ओ हाथियन में जौन हाथी सबसे आगे चलत रहे, राजकुमार ओ पर विराजल रहलें । तीसरा सपना में एगो जगमग रथ लउकल । चार घोड़ा ओकरा के

प्रबल वेग से खींचत रहे । उनकर नथुअन से प्रचंड धुँआ निकलत रहे अउर मुँह से फेन निकलत रहे । नींद के अवस्था में ही राजा ई सब सपना के अर्थ जनला खातिर उत्सुक रहलें । चउथा सपना में मंत्र सब से अंकित एगो अलौकिक चक्र लउकल जे अपने आप अनवरत चलल जात रहे । ऊ चक्र के नाभि सोना के रहे अउर चमकत रहे । ओकर परिधि मणि सब से सुशोभित रहे । राजा एकर अर्थ कइसे निकाल पवतें? पाँचवाँ सपना में नरेश के नगर अउर आसमान के बीचे विराट भूमि स्थल लउकल जहाँ राजकुमार प्रकाश पुँज जइसन अलौकिक वेशभूषा में शोभित नगाड़ा पर कठोर रूप से डंका के प्रहार करत रहलें अउर ओकर घनघोर ध्वनि चारों ओर गगन में गरजत रहे । छठा सपना में राज नरेश एगों सुंदर स्तंभ पर खड़ा देखाई पड़लें जवन ऊपर के ओर उठत चल गइल । ओकरा सिंहासन पर राजकुमार विराजत रहलें, दूसरा ओर राजा पसीना से तरबतर होत रहलें । मणि सब के बरसात होत रहे अउर जनगण ओकरा के लूट के धन्य होत रहे । सातवाँ सपना देख के राजा के दिल घबड़ाए लागल, काहेकि हर दिशा से रोवला के आवाज आवत रहे । मुँह ढँक के छः पुरूष रोवत-विलखत भागत रहलें । पता ना ई सपनन के देखत समय राजा सुतल रहलें कि जागल ।

ई कुल सपना सब देख के राज नरेश के मन में संशय छा गइल, बाकिर एकर परिणति केहु ना बता पावल । राजा तब खिन्न होके कहलें, "हमरा पर दुःख आवत लउक रहल बा, बाकिर केहुओ एह सब सपना के मरम ना बता पावत बा ।" सब लोग उदास होके परस्पर सोचे लगलें कि सपना के गूढ़ अर्थ पर कइसे विचार होखें । ओही घड़ी राजद्वार से एगो बूढ़ ऋषि आवत दिखाई देहलें । ऊ पवित्र मृग चर्म धारण कइले अउर सिर पर जटा बँधले रहलें । सभे के टालत कहलें, "हम राजा के कल्याण खातिर पधारत बानीं । चलऽ, अबे तुरंत सपना के सारा फल बतावत बानीं ।" द्वारपाल अपना साथ ऋषि के नरेश के पास ले गइलस अउर ऊ ध्यानपूर्वक सारा सपना के विषय में सुनलें अउर सविनय कहलें, "हे राजन!

ध्यान से सुनीं । ई धरती धन्य बा, अब सूरज आसमान चढ़ी अउर तीनों लोक में व्याप्त होवे वाला प्रकाश पुँज अब अटल बढ़ी । नृपवर! जौन सात सपना रउआ दिखाई पड़ल ऊ सातों मंगलमय अउर शुभ फलदायी बा जेमें ए जगत के भलाई छिपल बा । रउरा जौन भारी इन्द्रध्वजा के टूट-टूट के गिरत आ संपूर्णतः समाप्त होखत देखनीं ओमे ध्वजा के पतन प्राचीन मत के पतन दर्शावत बा । प्राचीन मत के अंत अउर नया धरम के उदय होखे वाला बा । सबके दशा हमेशा एक समान ना रहे, ऊ मनुष्य होखें भा देवता । रोज दिवस बदल जालें युग बदल जालें, कल्प बीत जालें । भूमि के कंपित करे वाला जौन दस हाथी देखाई पड़ल उनका के दस शील गिनीं अउर उनका के धैर्यपूर्वक यथावत धारण करीं । राजपाट, घर-द्वार त्याग के राउर बेटा सत्य मार्ग के खोज के सारा जगत के कँपइहें । जौन चार घोड़ा आग उगिलत अउर चलत देखनी; कुँवर ऊ चारों ऋषिपाद के हस्तगत करिहन । अतिशय प्रखर प्रकाश अउर ज्ञान गंगा के धारण करके अंधकार के कटिहें अउर समस्त संशय नष्ट कर दिहें । जौन चमकत स्वर्णनाभि वाला चक्र दिखल ऊ नरेश वर ! ऊ धरम चक्र ह जेके कुँवर फेरिहन अउर जौन विशाल दुंदभी राजकुमार बजावत रहलें, जेकर घोर आवाज सब लोकन में सुनल गइल अउर छा गइल ऊ गंभीर गर्जन ऊ विमल उपदेश ह, जेकरा के सुन के ई वसुधा अउर लोगन के शुभ दिन लौट आई । आकाश के ओर उठत जे मिनार दिखाई पड़ल ऊ बौद्ध शास्त्र ह जे लगातार सर्वत्र फइलत जाई । मीनार के ऊँचा शिखर से जे अनमोल रतन गिरत रहलें ऊ सुर-नर के हितार्थ कुँवर द्वारा देहल उपदेश हवें, अउर जौन छः पुरूष मुँह ढँपले बिलखत जात दिखलें ऊ पूर्व काल के आचार्य बाड़े जे अब बुद्ध के लोहा मानके राजकुमार के आगे नतमस्तक होइहें । कुँवर दिव्य ज्ञान अउर अमृत प्रतिभा सम्पन्न बाड़े अउर भ्रम जाल काटे वाला तेजस्वी, पराक्रमी पुरूष बाड़न । अति प्रसन्न होईं, राजनरेश ! राउर पुत्र के सम्पत्ति सकल संसार के समस्त राजपाट से अति बढ़के बा । कुमार जौन काषाय वस्त्र शरीर पर धारण करिहें ऊ स्वर्णिम वस्त्र से भी अधिक मूल्यवान होई ।

रउआ सपना के सार इहे ह, अब हमरा के विदा करीं । विश्वास करीं कि ई सात दिन में घटित हो जाई ।"

अइसन कह के ऋषिवर राजा के दंडवत स्वीकार कइलें अउर प्रस्थान कर गइलें । राजा के आज्ञा पाके ऋषि के दान-दक्षिणा देवे खातिर दूत भी ओही तरफ गइलें पर लौट के विस्मय के स्वर में कहलें, "उनकरा के सोम मंदिर में भीतर जात देखल गइल, लेकिन अंदर गइला पर केहु ना लउकल । बस खाली एगो उल्लू पाँख हिलावत देखाई पड़ल ।" कबो-कबो देवतागण पृथ्वी पर एह विधि से आवेलें । ऋषि के बारे में ई सूचना मिलला पर राजा भी चकित हो गइलें । व्यथित राजा अपना सचिवन के आदेश देहलें, "रोज -प्रतिदिन कुछ नया भोग-प्रमोद के चीज रचीं, जे कुँवर के लूभवले रखे अउर द्वार पर चौकसी दूना कइल जाये ।" पर होनी कइसे टली ?

राजकुमार के पुनर्वहिर्गमण

कुँवर के मन में एक बेर फेरू बाहर जाये अउर संसार के देखे के इच्छा जागृत हो गइल । "हम जीवन प्रवाह देखे के चाहत बानीं जे सुहावना प्रतीत होत लउकल बा । का ई काल कहीं मरूभूमि में जाके उहाँ त प्रवेश ना कर जाला ?" अतः पिता के पास जाके विनयपूर्वक कहलें , "ई नगर कइसन बा हम ओके यथावत देखल चाहतानीं । ओ दिन त राउर आदेश सारा नगर पर लागू रहे जेसे हमरा मार्ग में कहीं दुःख के कोई दृश्य ना हो सकत रहे । हमरा प्रसन्नता खातिर हाट-बाट में सब जगह मंगल उत्सव होत रहे अउर सभे विवश हो के प्रसन्न रहे । बाकिर हम जान गइनीं कि ऊ दैनिक जीवनचर्या ना रहे । मुदिता अउर प्रसन्नता के विगत काल के ऊ दृश्य वास्तव में असत्य रहे । रउरा नाते हमरो एह राज्य से कुछ संबंध बा, एह खातिर हमरा भी गली-गली के असली बात जाने के चाहीं, अउर हमरा दीन-दुखियन के असल बात जाने के चाहीं जे ऊ

जिनगी में खो चुकल बाड़ें । सामान्य जन रहन-सहन में कइसन लउकेलें? राउर आज्ञा मिलित त हम छद्म वेश धर के एक बेर फेरू सब के रहन-सहन मन-भर देखतीं । अगर मन सुखी ना होई त कम से कम अनुभव त बढ़ी । अगर राउर आदेश मिलित त नगर में मनमाना ढंग से घूमतीं ।" इ बात सुनके फेरू सचिवन के ओर उन्मुख होके राजा कहलें, "संभवतः एह बार कुँवर के मति कुछ फिर जाये। प्रबंध कइल जाव कि ऊ नगर देखे जास अउर लौट के हमरा के बतावल जाव कि उनकर चित्त कइसन रहल ।"

अगिला दिन राजा के आज्ञा मिलला पर राजकुमार छंदक के संग द्वार से बाहर निकललें । कुँवर व्यापारी के भेष धइले रहलें अउर छंदक उनकर मुनीम बनल । दूनों बेतरह भीड़ अउर बेतरह कोलाहल से हो के पैदल चललें । जनमानस में जा मिललें, बाकिर उनकरा के केहू पहचान ना पावल । जब राजकुमार सही-सही सुख-दुख देखलें त उनकर मन भर आइल । विचित्र गली रहल अउर भारी कोलाहल उठ रहल रहे । मसाला धरल रहे अउर अन्न तथा वस्त्र के व्यापारी बैठल रहलें । ग्राहक चीजन के मोल-भाव करत दिखलें । "एतना नाहीं, एतना कीमत द" कह के दुकानदार जेब कतरत रहलें । "हटऽ! राह द" ई आवाज सुनाई देत रहे अउर चरमर के आवाज करत बैलगाड़ी चलत रहे । गृह वधू कुआँ से कलश में जल भरके मूड़ी पर रख के अउर लड़िका के गोद में लेहले अधीर होके घरे जात दिखाई पड़ली । मिठाई के दूकानन पर मक्खी भिनभिनात रहलें । ताना-बाना तान के जुलाहा वस्त्र बनावत रहलें । धुनियाँ ताँत के झनकावत रूई धुनत रहे । कहीं चक्की चलत रहे अउर ओकरा दरवाजा पर कुत्ता पूँछ हिलावत रहे । कहीं शिल्पी कवच अउर तलवार बनावत रहलें त कहीं लुहार बइठ के फावड़ा-गैती बनावत रहलें । गुरू के सामने अर्द्धचन्द्राकार में बइठके शुद्ध मंत्रोच्चारण करत शिष्य वेद पढ़त रहलें । लाल अउर दोसर-दोसर रंग में कपड़ा के रंग के अउर फटकार के रंगरेज ओकरा के धूप में सुखावत रहलें । कहीं सिपाही ढाल बँधले आपन

तलवार खनकावत रहलें त कहीं ऊँट वाला ऊँट के ऊपर चढ़ल झूमत जात रहे । कहीं तेजस्वी ब्राह्मण अउर वीर क्षत्रिय सक्रिय दिखलें त उहें कहीं कठिन श्रम से साँवर शरीर वाला शूद्र पसीना से तर रहलें । भाँति-भाँति के साँप के आपन गला के हार बनवले सँपेरा सड़क किनारे बइठल लोगन के बुलावत रहे । श्वेत कौड़ियन से सजल बीन बजावत फुँफकार रहल नागन के ऊ नचाके देखावत रहें । दूकानदार आपन-आपन व्यवसाय में लागल रहलें । कहीं लोगन के भीड़ बहुरिआ लावे ला पालकी लेहले जात रहें । साथ में तेज अश्व रहलें अउर नगाड़ा, सिंगा बाजत रहे । कहीं बाला अउर गृहणी देवता लोगन पर फूल चढ़ावत रहली त केहू आपन पति के विदेश से सकुशल लौटला खातिर प्रार्थना करत नजर अइली । कहीं ठठेरा ठन-ठन करत पीतल पीटले जात रहलें अउर नया थाली, लोटा, कटोरा अउर चिरागदान बनावत जात रहलें । एह दृश्यन के देखत ऊ दूनों आगे बढ़त जात रहलें ।

व्याधिग्रस्त के देखल

नगर द्वार पार करेके समय रस्ता के एक ओर केहू के करहला के आवाज सुनाई पड़ल, "हम कइसे घरे पहुँचब, हम त मर गइनी ।" केहू जोर-जोर से रोवत रहे । ओही छन कुँवर के एगो अभागा जीव दिखाई देहल । माटी में व्याधिग्रस्त पड़ल ऊ अति पीड़ा से बेचैन रहे । ओकर सारा शरीर क्षत-विक्षत हो गइल रहे आ लिलाट पसीना के बूँद से तर रहे । ओकरा होठ पर असह्य व्यथा लउकत रहे अउर ओकर हाथ-पाँव काँपत रहे । आँख निकलल जात रहे, अउर वेदना सहल कठिन रहे । हाँफ-हाँफ के हाथ के जमीन पर सहारा दे के उठे के चाहे । आधा उठे अउर फेरू थर-थर काँपत गिर जाए । बेबस पुकार उठल, "अरे! केहू बा? हमार हाथ पकड़ऽ।" सिद्धार्थ दउड़ पड़लें, बाँह के सहारा देहलें । फिर ओकरा के प्रेम से देखत ओकर सिर के आपन जांघ पर रख लेहलें अउर ओसे प्रेमपूर्वक पूछलें, "बन्धु, तोहार अइसन दशा कइसे भइल? का

तूं उठ नइख पावत? कौन भारी दुःख तोहरा पर आ पड़ल बा?" फेर, राजकुमार छन्दक के ओर प्रश्न करत पूछलें–"छंदक! इ काहे पड़ल कराहत बा अउर विलाप कर रहल बा? हाँफ–हाँफ के कुछ कहत–कहत रूक जाता?" सारथी कहलन, "कुँवर! ई आदमी रोग ग्रस्त बा आउर एकरा शरीर के तत्व धीरे–धीरे आपसे में बिखर रहल बा। एकरा शरीर के खून जौन कबो एकरा अंग–अंग के शक्ति प्रदान करत रहे आज ऊ भीषण बाढ़ जइसन अनियंत्रित बह रहल बा। एकर हृदय जौन कबो उमंग से रह–रह के उछाल भरत रहे ऊ अब फूटल ढोल के तरह दुःख सह–सहके धड़क रहल बा। धनुष से खिसकल रस्सी के तरह सारा नस ढीला पड़ गइल बा । शरीर के ताकत खतम हो गइल बा अउर गरदन नीचे के ओर झुक गइल बा। एह पीड़ित व्यक्ति के शरीर में जीवन–सौंदर्य अउर आनन्द सूख गइल बा अउर एह रोगी से जिनगी रूठ गइल बा । सारा के सारा शरीर रह–रहके अंइठत बा, आँख बाहर निकलत जात बा अउर बेचारा पीड़ा मे पड़ल बा । मरल चाहता, बाकिर मउअत आवते नइखे । भोग–व्याधि पूरा भइले पर ऊ आई । जब जोड़–जोड़ के सारा बंधन उखड़ी तबे हे कुँवर ! एकर प्राण निकली । अउर तब ई क्षय रोग एकरा के छोड़ के केहू अउर के जा पकड़ी । हे कुँवर ! रउआ एकरा से दूरे रहीं ! ना त ई रोग अपने के भी जकड़ ली ।" लेकिन कुँवर ओकरा के लेले रहलें, अउर फिरू एह प्रकार के वचन बोललें, "का अइसने अउर अनेक प्राणी पड़ल बाड़ें?" सारथी कहलें, "सभे इहे गति पाई, अगर एकरा उम्र तक जी पाई । बीमारी कबो ना कबो जरूर सतावेले अउर कौनो ना कौनो रूप में ई सभे पर आवेले । मूर्छा अउर उन्माद, वायु–विकार, कफ, पित्त, जूरी–ज्वर अउर फोड़ा–घाव, जिगर रोग, पेचिस, जलंधर (पेट बढ़ला के बीमारी) आउर दूसर तरह–तरह के रोग से शरीर रोगी हो जाला । सब जीव कष्ट भोगेलें : केहू बचेला नाहीं । जगत में रक्त अउर माँस के सब जीव रोग से बँधल बाड़ें ।" फेरू कुमार जाने के चहलें, "भाई ! हमरा एतना बतलाव कि का सारा दुःख बिना बतवले आवेला?" छंदक कहलें –"ई दबे पाँव अइसे आवेला जइसे चुपे–चाप विषधर आके

आपन दाँत धँसा देला भा बीच झाड़ी में बइठल घात लगवले बाघ मौका मिलला पर शिकार पर टूट पड़ेला अथवा आसमान से गर्जत बिजली गिर जाला । केहू बच जाला त केहू छन भर में मर जाला ।" कुँवर कहलें, "तब त केहूं नइखे कह सकत कि आज सुख से सुतला के बाद काल खुशी-खुशी उठब?" "नाहीं कुँवर! एह संसार में केहु ई ना कह सकेला । केहू नइखे जानत कि पल भर में का होई?" "बाकिर अगर केहू असहनीय भोग-ताप ना सह पाई या भोगते-भोगत जइसन ई बा ओइसने हो जाई; चलत साँस दिने-दिन अति जर्जर होके थक के मुरझा जाई त फेरू कहाँ रूक के एकर अंत होई?" "मर जाई ऊ कुँवर!" छंदक बिना भ्रम के कहलें, "कौनो समय, कौनो भाँति मृत्यु जरूर आवेला ।"

मृत्यु के साँच

तबे कुँवर भीड़ के रोवत, चीत्कार करत नदी तट के ओर जात देखलें । "राम नाम सत्य बा" सभे रह-रह के इहे कहे अउर शीश नवइले, एहर-ओहर कहीं ना देखत धीरे-धीरे नदी के ओर चलत जात रहे । लोग मृतक के रोवत अउर बिलखत ढोवत रहे अउर परिजन, इष्ट मित्र तथा बंधु-बांधव कलपत दिखत रहे, कंधा पर उठइले सभे पाँव बढ़ावत चलल जात रहे । कोख सटल, आँख पथराइल अउर बदन भयंकर रहे । 'राम-राम' कहत लोग ओकरा के नदी तट पर ले गइलें जहाँ कुछे दूर पर चिता सजल रहे । मृतक के ऊ काठ शय्या पर लिटा देलें जइसे ओकरा अनन्त सुख के नींद प्राप्त होखे । आज ओकरा शीत ऋतु के क्लेश सतावत नइखे अउर लोग ओकरा चिता के चारों ओर आग लगावत बाटे । शव के घेर के धीरे-धीरे ऊ ज्वाला दहक उठल अउर लपट लंबा जीभ निकाल मांस के भोजन बनावे लागल । पाकल चर्म सनसनात रहे अउर एक-एक कर सारा बंधन चटकल जात रहे । अब ऊ मृत शरीर राख बन गइल बा । खाली भसम बचल बा जे दिखाई दे रहल बा । सफेद हड्डी के बचल अंश, जीवन में इहे शेष बा । कुँवर ई सब देख के

प्रश्न कइलें, "का सभे के इहे गति ह?" छंदक बोललें, "सभे के अंत के इहे नियति बा । जेके काँव-काँव करत कउआ खात ना अघात रहलें, ओकर जरला के बाद एतना अल्प अवशेष बचल बा । जीवन में अनुराग रहे, इंसान खात, पीअत, हँसत रहे । वात के झोंका लागल, तन में आग लाग गइल, साँप आ डँसलस, शत्रु के तलवार धँस गइल, ठोकर खा गिर गइल या फिर भँवर में ही फँस गइल । अंततः चिता के आग ही मनुष्य के धरोहर बा । ज्वाला से शव धधक उठेला । आग के ताप से चमड़ा जले लागल बा । मृत्यु सब अंग के निश्चल कर देला जइसे ईंट के गिरल जेकरा से प्राण-पखेरू उड़ जाला अउर प्राणी तुरंते मर जाला । अब ओकरा ना कउनो क्षुधा बा अउर ना कउनों सुख-दुख । मुख चुंबन अउर शरीर के लू लागल सब कुछ समाप्त हो गइल । आपन शरीर के ही पाकल मांस के गंध अब नइखे सूंघत अउर ना चंदन, अगरबत्ती या धूप के गंध ओकरा पहूँचत बा । स्वाद-ज्ञान, रस-ज्ञान सब समाप्त हो गइल । श्रवण-शक्ति नष्ट हो गइल अउर आँख में ज्योति ना रहल । जेसे ओकरा प्रेम रहे ऊ सब नर-नारी बिलख रहल बा । रक्त मांस के जीवन, सभे के इहे गति बा । भला अउर बुरा, ऊँच अउर नींच के इहे नियति बा । शास्त्र कहे लें कि जीव मरके फेरू जनम पावेला । नया देह कहाँ धारण करी केहु नइखे बता सकत ।"

अँखियन में आँसू भर आइल, दया से मन पसीज उठल । कुँवर आसमान के ओर दृष्टि उठा के देखलें अउर सृष्टि पर दिव्य दयामय दृष्टि गड़इलें । नभ से भू, भू से नभ अउर एह प्रकार चारों ओर निहरलें, मानों सारा नभ मंडल छान रहल होखस । ऊ झलक पावे खातिर उनकर दृष्टि दूर-दूर तक गइल जेसे सृष्टि के आज दुखन से त्राण मिले । प्रेम-प्रभा से आशा के आंगन में ज्योति छा गइल । "अरे! इ जगत त दुःख के झूला बा," कहत अधीर होके पुकरले, "रक्त, मांस के ई सब बेचारा ज्ञात-अज्ञात जीव काल-क्लेश के जाल में फँसल बाटे । हम मृत्यु लोक के भारी पीड़ा देखत बानी अउर ई सारा सुख-वैभव के असारता भी देख रहल बानी । सुंदर से

सुंदर वस्तु धोखा दे जाला अउर बुरा से बुरा वस्तु भी अनोखा ताप । सुख के पीछे दुःख अउर अनंतर संयोग-वियोग, यौवन पीछे बुढ़ापा अउर जनम-जीवन सब नश्वर बा । मरला पर फिर पता ना कइसन-कइसन जनम प्राप्त होई । इहे चक्र सब के अनजान पथ पर नथले रही अउर झूठा आनंद में भरमावत रही । जीवन के ऊ सब संताप जरा भी असत्य नइखे । हमरा भी ई भ्रांति जाल भ्रमित करे के चाहता जेसे हमरो ई हमार जीवन परम सुहाना लागत रहे । हमरा ई जीवन सरिता प्रवाह के जइसन सुन्दर लागत रहे जेमे सुख-शांति निरंतर बहत दिखाई देत रहे । पर अब हम ऊ धारा के हर हिलोर के देख लेले बानीं जे नदी के किनारा से जाके टकरा के उछल जाता । निर्मल जल आखिर में परम भयानक खारा, कड़वा समुन्दर में समा जाता । हमरा आँख पर जे परदा पड़ल रहे, ऊ सरक गइल । हमहूँ ओइसने बानी, जइसन हमार अनेक भाई-बंधु बाड़े जे आपन-आपन देव लोग के चीख-चीख के आर्तभाव से पुकारत रहेलें पर उनकर केहु नइखे सुनत जे उनकर दुःख हरे । हमार भाई अउर बहिन सामर्थ्यहीन देवता से सहायता चाहत बाड़ें, बाकिर उ देवतागण खुद तुच्छ बाड़े । ऊ लोग खुद दीन-दुखी के मदद कइसे कर सकी? अगर सर्वशक्तिमान सृष्टि के दुखकारी रखेलें त ऊ करूणामय नइखन, ना सुखकारी अउर ना देवल प्रवर। अउर अगर ऊ सर्वशक्तिमान नइखन त फिर ऊ ईश्वर नइखन । बस छंदक! बहुत देखनी, अब अउर देखला के आवश्यकता नइखे रह गइल ।"

जब नृप ई बात सुनलन त घोर चिंता छा गइल । ऊ हर फाटक पर दूना, तीगुना चौकसी बइठा देहलें । राजा बोललें, "जब तक सपना घटे के दिन बीत ना जाये तबले केहू बाहर-भीतर ना आ-जा पाबे ।"

चउथा सर्ग
महाप्रयाण के घड़ी

महाप्रयाण, महाभिनिष्क्रमण के समय आ गइल । युग-युग के अनवरत प्रतीक्षा के घड़ी समाप्त भइल । ऊ शुभ मुहुर्त भी आ पहुँचल जब राजकुमार सिद्धार्थ के आपन घर द्वार, राजमहल, पिता, पत्नी, पुत्र राजपाट अउर सब सुख त्याग के बन के ओर प्रस्थान करे के रहे । स्वर्ण महल में शोक छा गइल, राजा दुखी हो गइलें, राज्य मायूस हो गइल, प्रजा उदास हो गइल हालाँकि राजकुमार के ई महाप्रयाण से समस्त प्राणीजन के भव-बंधन से मुक्ति के एक सर्वथा नया मार्ग प्रशस्त होखे के आशा दृढ़ हो गइल ।

चैत्र पूर्णिमा के रात रहे । चन्द्रमा अति निर्मल अउर उज्जवल आभा बिखेरत रहे आउर धरती बहुते मनोरम लागत रहे । सुन्दर मुस्कान वाली चाँदनी सर्वत्र खिलल रहे । पवन मंद-मंद बहत रहे अउर आम के पेड़न पर लदल आम, ओकर टहनी अउर गुच्छा हवा के झोंका खाके हिलोरा लेत रहे । टप-टप के आवाज करत मधु धरती पर गिरत रहे अउर साफ सुनाई देत रहे । अशोक के फूल हवा के सुगंधित बनावत रहे । राम-नवमी के उत्सव बीत चुकल रहे बाकिर ओकर सजावट अभी भी नगर के शोभ बढ़ावत रहे । विश्राम भवन पर मृदुल चाँदनी आपन आभा बिखेरत रहे अउर सुगंधित फूल जड़ित नक्षत्रन जइसन दिखायी देत रहे । विश्राम भवन पर पड़े वाली चाँदनी युक्त उज्जर ओस के बूँद हिमालय के बर्फीली चोटी जइसन मन के लोभावत रहे । पहाड़न से चले वाली मंद हवा मन के मदमस्त करत रहे । पर्वत पर चमकत चंद्रमा पर्वत के चोटी पर चढ़ के अंबर-पथ पर जात लउकत रहे, सूतल-धरती के प्रकाशित करत रहे आउर रोहिणी के जल के हिलोरत जात रहे । रसधाम के मुंडेर पर ऊ आपन प्रभा बिखेरत रहे जहाँ केहूओ कभियो चलत-फिरत नजर ना आवत रहे । दुआर पर जब-तब पहरेदारन के आवाज

सुनाई पड़त रहे अउर अंगन के धुन का साथे तोरण बाजा भी बाज उठत रहे । एकरा बाद धरती पर फेरू निःस्तब्धता छा जात रहे । फिर चारों ओर झींगुर के आवाज सुनायी पड़त रहे ।

रसधाम आवास खातिर पूरा तरह से सुसज्जित बाटे । भवन के जाली से छन के आवत चाँदनी के आभा सीप और संगमरमर से बनल दीवाल अउर फर्श के प्रकाशित करत रहे । स्वर्णिम स्तंभ पर रखल सुगन्धयुक्त दीयन से पूरा भवन जगमगात रहे । ओसे रंग-बिरंगी किरण निकलत रहे । द्वार पर चितरकारी वाला चंदन के चौखट लागल बा आउर ओसे बैगनी रंग के आभा निकलत बा । दुआर के तीन सीढ़ी चढ़े के बाद कुँवर के अनोखा अउर मनोरम आवास बाटे । भवन के अंदर सूतल सुदरी लोग के ऊपर चन्द्रमा के किरिन पड़ रहल बा । ऊ विश्राम भवन स्वर्ग में स्थित देवतालोगन के विश्राम स्थली के जइसन लाग रहल बा । कुमार के विश्राम भवन में सूतल रूपसी युवतीलोग के रूप सौंदर्य अनुपम बा । जे कौनो सुंदरी पर दृष्टि पड़ता ओकर मुक्त सौंदर्य के मनोरम छटा के देख के मन इहे कह उठत बा कि "इहे सर्वश्रेष्ठ सुंदरी हई ।" आँख रूप लावण्य से परिपूरण मदमस्त नयनन वाली सुन्दर युवती के सूतल अवस्था में तब तक देखत रहेलें जब तलक उनकर नजर बगल में सूतल युवती पर ना पड़ जाला जइसन रत्न के हाट में गइल व्यापारी एक मणि के तब तक निहारत रहेला जब तक ओकर नजर दोसर मणि पर ना पड़ जाला। सुन्दरी अपना सुन्दर शरीर के ओर बेसुध होके सोवत बाड़ी । उनकर मृदुल होंठ अधखुलल बाटे । उनकर चिकन, मुलायम, करिया-करिया लंबा केशन में कुसुम-दाम के फूल लागल बाटे जे उनकर बाल के शोभा बढ़ावत बाटे । दिन भर के हास-परिहास से शिथिल ई सुंदरी लोग आपन पैर पसार के अइसन बेसुध होके सूत रहल बा जइसे कोइल दिन-भर रसीला गीत गाके अंत में थक्कर पंखन के बीच सिर निहुराके तब तक सूतल रहेली जब तक कि भोर के आगमन ना हो जाला । उनकर वस्त्र गहिर उच्छवास के चलते उरोजन से हट गइल बा आ हाथ ढील

पड़ल बाटे । मुखमंडल शांत बा, भौं विशाल अउरी टेंढ़ अउर बरौनी करिया बा । अधखुलल होंठन का चलते उनकर दाँतन के पंक्ति मोतीयन जइसन चमक रहल बा । उनकर कलाई गोल बाटे अउर उनकर छोट-छोट पैरन में सुन्दर पैजनियाँ सुशोभित बा । उनकर कवनो अंग हिलला से पैजनियन के खनकला के आवाज आवता । एही से उनकर सुखद सपना टूट जाता जेकरा में ऊ लोग राजकुमार से कुछ सुन्दर उपहार प्राप्त करत रहे । कुछ युवतीलोग वीणा बजावत-बजावत सूत गइलीं । एह कारण उनकर अँगूरी वीणा के तारन में फँसल बा अउर वीणा उनकर कपोलन से सटल बा । दोसर सुंदरी लोग मृग शावकन के गोदी में ले सूत गइल बाड़ीं । मृग के बच्चा उनका हाथ में रखल फूल के सूँघत सूँघत सुत गइल बाटे । कुतरल फूल अउर हिरण के गला में लिपटल फूल के माला युवती लोग के हाथ के शोभा बढ़ावत बा । कुछ सखी आपस में गले से गला मिल के सुगंधित मोगरा के माला बनावत-बनावत सूत गइनीं । उनकर रूप-सौंदर्य के प्रेम-पाश एतना लुभावना बा कि उनका के देखत-देखत अन्त तक आँख ना थके । कुछ सुन्दरी लोग मणिक, मरकत अउर मुक्ता के कण्ठमाला बनावत-बनावत सूत गइल । सूत में पिरोअल माला उनकर कलाइयन में उलझके रह गइल बा जेकरा से बहुरंगी प्रकाश-किरिन निकल रहल बा । गंगा-गोमती नाम के मुख्य सुन्दरी दरवाजा के दूनू तरफ सूतल बा लोग । उपवन के नियरे बहत नदी के कलनाद सुनत-सुनत कुछ सुन्दरी लोग कोमल बिछौना पर पास-पास सुत गइल । अउर ऊ लोग सुखद-प्रकाश के अनुभूति करत बा जेकरा के प्राप्त कइला से परमानंद के सुख मिलेला ।

कुँवर के कक्ष के द्वार पर लागल परदा उजाला पाके बिजली जइसन चमक रहल बा । कुँवर सिद्धार्थ अउरी कुँवरी यशोधरा के कक्ष के भीतर के शोभा अद्वितीय बा । सेज रेशमी-अउर मोलायम बा जेकरा ऊपर बइठला से अइसन लागता जइसे बहुत सारा कमल के फूल से सेज बनावल गइल होखे । दीवारन पर सिंहल देश के

प्रसिद्ध सीप से सुसज्जित मुक्ता के पाँत लगावल गइल बा । संगमरमर से बनल छत पर सुन्दर नक्काशी कइल गइल बा अउर ओमे रंग-बिरंग के नग जड़ल गइल बा । अनेक रंग के बनल बेलबूटा मन के मोह रहल बा अउर झरोखन के चित्रांकित जाली कक्ष के शोभा बढ़ा रहल बा । झरोखन से चमेली के खुशबू आ रहल बा अउर ओकरे साथ-साथ चन्द्रमा के किरण अउर शीतल हवा प्रवेश कर रहल बा ।

यशोधरा के दुःस्वप्न

यशोधरा आधा नींद के अवस्था में सिद्धार्थ के बगल के शय्या से उठलीं । उनकर चादर कमर तक गिरल रहे । ऊ आपन दूनो हथेली से आपन चेहरा के ढँकले रहली । उनकर छाती जोर-जोर से धड़कत रहे अउर आँखिन से लोर गिरत रहे । ऊ अपना होठन से तीन बेर सिद्धार्थ के हाथ चूमली अउर तीसर चुंबन पर कराह उठलीं, "उठीं, हमार मालिक! हमरा के अपना वाणी के सांत्वना दीं ।" तुरंत उठ के सिद्धार्थ पूछलन, "हे हमार जीवन-साथी! का कष्ट बा?" सिद्धार्थ के ई बात सुनियोके कुँवरी के मन शांत ना भइल । ऊ फेरू से रोये लगली अउर कहली, " हाय हमार राजकुमार! बहुत आनन्द के साथ हमार आँख लाग गइल । रउरा बच्चा के माँ बने के बात हमार खुशी के आउरो बढ़ा देले बा बाकिर नींद में हम तीन गो भयावह सपना देखनीं जेकरा बारे में सोच-सोचके दिल अबहियों काँप उठत बा ।" तब ऊ सपना के बारे में बतइली ।

पहला सपना में हम नगर में चलत एक उज्जर साँड़, चरागाह के स्वामी देखनीं जेकर सींग फइलल रहे । ओकरा माथा पर सर्पन के नागमणि के जइसन एगो चमकत रत्न से प्रकाश फइलत रहे मानों कवनो तारा धरती पर उतर आइल होखें । ऊ साँड़ गली से होके आहिस्ता-आहिस्ता नगर द्वार के ओर बढ़त रहे

आउर ओकरा के केहू रोक ना सकत रहे । इन्द्र के मंदिर के पास से एक ऊँच आवाज आइल, "अगर रउरा एके रोक ना सकेब त रउरा नगर के मरजाद जात रही ।" तबो ओकरा के केहू ना रोक सकल । तब हम प्रलाप कइनीं । आपन दुनू हाथ से ओकरा गले लाग के ओकर नट्टी पकड़ के ओकरा के रोके के कोशिश कइनी । हम इहो आग्रह कइनी कि नगर के सब दुआर बंद कर देहल जाव, बाकिर बैलन के ऊ राजा गरजलें अउर आपन शिखा छोड़वत हमरा पकड़ से छूट गइलें अउर अवरोधन के तूड़त, पहरेदारन के रउदत निकल गइलें।

दूसर दुःखदायी आश्चर्यजनक सपना रहे : चार देवतागण चमकत आँखन वाले, एतना सुंदर जइसे ऊ संसार के प्रतिशासक होखस, जे सुमेरू पर्वत पर बिराजेलें, स्वर्ग से अनगिनत परिजनन के साथे आकाश से उतरलें अउर तुरंत नगर में प्रवेश कर गइलें । उनकरा सामने हम इन्द्र के सुनहरा झंडा के दुआर पर फड़फड़ात अउर गिरत देखनी और इहो देखनी कि ओकरा जगह पर एगो तेजस्वी ध्वज खड़ा हो गइल बा जेकर मणि से जड़ल तह धधकत आग के जइसन चमकत रहे । ध्वज के ई मणि चाँदी के धागा से टाँकल गइल रहे । मणि के किरणन से नव ज्ञान के उपदेश अउर प्रभावकारी शिक्षा निकलत रहे जेकर संदेश सब प्राणीजन के प्रसन्न करत रहे । पूरब से सूर्योदय के समय हवा बहल जे झंडा के फइला देहलस जेमे सब प्राणी ओकर संदेश के ठीक में पढ़ सके, अउर विचित्र प्रकार के फूलन के, जे पता नाही कहाँ से आइल रहे, बरसात होखे लागल, अइसन फूल जे हमार बगीचा में ना लउकेला ।" ई दुनू स्वपनन के वृतान्त सुनके राजकुमार कहलें, " हे प्रिये! ई सब त देखल शुभ रहे ।" "हँ स्वामी," राजकुमारी कहली, "ई देखल अच्छा लागल, बाकिर एकर अंत एगो भयातुर आवाज से भइल जे कहत रहे, "समय निकट बा! समय निकट बा ।"

तब तीसर सपना आइल । जब हम रउरा के अपना बगल में पलंग पर देखे के चहनीं, तब हे प्रिय स्वामी, ओह! हमरा बिस्तर पर एगो तकिया पड़ल रहे, रउरा ना रहनी, सिरफ राउर वस्त्र रहे । हम बिस्तर से उठनी त देखनी कि मोती के माला जेकरा के हम गला में धारण कइले रहनी ऊ जहरीला साँप में बदल गइल, हमार घुँघरू छितरा गइल, हमरा केश के चमेली के फूल मुरझाके धूरा में मिल गइल । हमार सुहागरात के शय्या धरती में समा गइल अउर केहू परदा के नीचे गिरा देहलस । तब हम बहुत दूर से ओह उजर साँढ़ के एक बेर फेर आवाज सुननी अउर बहुत दूर आकाश में ऊ कसीदा लागल फड़फड़ात झंडा के देखनी अउर एक बेर फेर ओही आवाज के सुननी, "समय आ गइल बा । समय आ गइल बा ।" आउर एगो भयानक चीख के साथ हम उठ गइनी जे अबहियों हमरा आत्मा के हिला देत बा । हे राजन! ई सब दुःस्वप्न के का अरथ हो सकेला सिवाय एकर कि हमार मृत्यु हो जाता या हमरा मृत्यु से भी जादे बुरा रउरा हमरा के त्याग देतानी अथवा राउर मृत्यु हो जाता ।"

सिद्धार्थ के चेहरा डूबत सूरूज के अन्तिम मुस्कान जइसन देदीप्यमान रहल । ऊ आपन रोवत पत्नी के ओर झुकलें अउर सांत्वना देत कहलें, "शांत होखऽ, प्रिये" अउर समझइलें, "शाश्वत प्रेम में ही शांति मिलेला । संभव बा तोहार सपना, होखे वाला घटना के आभास देत होखे, अउर ओकर भविष्यवाणी करत होखे, कारण हमार गृह-त्याग के बात पर देवतोगण आपन-आपन आसन पर हिल गइल बाड़े । सारा संसार जानता अउर समझता कि आज हमनीं के बचाव के कौनो रस्ता नइखें । तंहू पर संभव बा कि मुक्ति के कौनो ना कौनो रास्ता होखे । जइसन भी रउरा अउर हमरा साथ घटित होखे, रउआ एतना सुनिश्चित होईं कि हम यशोधरा से सबसे जादे अगाध प्रेम करत रहनीं, करत बानीं, अउर करत रहेब । रउरा जानत बानी कि केह तरह हम ई उदास अउर दुःखी संसार के बचावे खातिर दिन-रात विचारमग्न बानीं, कारण हम एह संसार के दुःख

अउर तड़प के देखले बानी अउर जब भी समय आई, तब उहे होई जे होखे के बा । अब रउरा एक बात आउरो समझीं कि यदि हमार आत्मा अज्ञात लोगन खातिर तड़पत बा अउर यदि हम ओह सब लोग के दुःख से दुखी बानी जेकरा के हम जानत तक नइखीं अउर जिनकर दुःख हमार आपन, निजी नइखे, तब रउरा खुदे सोचीं कि हमार ऊँच उड़ान अउर तड़प भरल चाह ओह लोगन खातिर काहे अउर कइसे ना तड़पी अउर केतना तड़पी जे हमार जीवन में हमरा साथे भागीदारी कइले बाड़ें अउर एकरा के एतना सुमधुर बनइले बाड़े । एह से हे प्रिये! सर्वप्रिय, भद्रे, सर्वश्रेष्ठ अउर हमार सबसे निकटतम मित्र! हमार होखे वाली संतान के माता! रउरा देह में संतान के सुंदर आशा लेले हमार शरीर समाइल बा । जब हमार आत्मा जल अउर थल पर विराजमान मानव के कष्ट में त्राण दिलावे खातिर व्यग्रता से दया के साथ विचरेली जेंगै दूर-दूर तक उड़त कबूतर प्रेम के खातिर प्रेम में ओतप्रोत प्रसन्न मन से अपना घोंसला में स्थित अपना चूजन के पास लौट आवेला, तब त रउरा सब प्राणीजन से ऊपर होके, हमरा खातिर सर्वप्रिय बानी । एह से जे कुछ भी होई, भले खातिर होई । चलीं, कुछओ घटित होखे भा आ पड़े, याद करेब ऊ ईश्वरीय साँड़ के जे डकार लगइले रहे अउर ऊ आभूषित झंडा के जेकर तह रउरा सपना में सीधा होके लहरात रहे । एगो अउर बात के बारे में रउरा सुनिश्चिंत रहीं, हम हमेशा रउरा के सबसे अधिक प्यार कइलें बानी अउर हमेशा रउरा के हृदय से सबसे जादे प्यार करत रहेब । हम जेकर तलाश सबका खातिर करेब, ओके सबसे जादे रउरा खातिर खोजेब । अब रउरा शांत होईं अउर रउरा पर दुःख के पहाड़ो गिर पड़े तबहुओ एह विश्वास से संतोष रखीं कि हमनी के दुःखन के उपचार खातिर संसार में शांति के कौनो ना कौनो रास्ता जरूर होई । हमरा हृदय से निकलल शब्दन के हृदय के गहरायी से सुनीं । रउरे ऊ सुन सकेलीं जे दोसर केहू कबहियों ना सुन सकी काहे कि रउरा हमरा सबसे नजदीक बानी । हम जे कुछ भी प्राप्त करेब ओपर सबसे अधिका राउर अधिकार होई । एह कारण से ओह मारग के खोज जरूर करे के

चाहीं । अब राजकुमारी! रउरा चिंता मत करीं आ विश्राम करीं । हम तनी उठब अउर रात के आकाश अउर तारन के देखब ।"

महाभिनिष्क्रमण

आँसूअन से भींजल आँखिन का साथे यशोधरा बिस्तर पर लेट गइली, बाकिर लेटत समय फिर आह भरली, कारण ऊ दृश्य फिर एक बेर लउक गइल, "ऊ समय! ऊ समय आ गइल बा!" ओने सिद्धार्थ मुड़के खिड़की से आकाश के ओर तकले । चन्द्र आउर कर्क राशि के योग बनल रहे । तारागण ओही क्रम में चमकत विद्यमान रहलें जेकरा विषय में बहुत पहले भविष्यवाणी कइल गइल रहे, मानों एक पाँती में फइलल ऊ कहत रहलें –"इहे ऊ रात ह सिद्धार्थ! तू कवनो एक मारग चुनऽ–ऐश्वर्य के मारग चाहे परोपकारिता के मारग । महाराजा के रूप में राज करे के निर्णय भा भिखारी के तरह अकेले भटके के, बिना मुकुट तख्त–ताज के गृह–विहीन, जेमे संसार के मदद कर सकऽ ।" संगे विषाद के फुसफुसाहट के साथ उनकर कानन में एक बार फेर ऊ चेतावनी भरल गीत सुनायी दे गइल जे के देवतालोग सितार के माध्यम से अदृश्य रूप से गइलें रहलें । निश्चय ही देवतागण ओह जगह पर अदृश्यरूप में विराजमान रहलें जहाँ सिद्धार्थ खड़ा रहले अउर सिद्धार्थ पर ध्यान गड़इले रहलें । ओने सिद्धार्थ खुद चमकत तारन के देखत रहलें, "हम जाएब," उहाँ के कहनी, "समय आ गइल बा । प्रिय यशोधरा के कोमल होंठ! हे हमार सूतल मित्र! चाँद तारा हमरा के ओने बोलावत बाड़ें जहाँ से संसार के रक्षा होई । बाकिर हमार ई निर्णय हमनी के सदा के लेल अलग कर दी । हम आपन भाग्य के लेख चमकत आकाश पर साफ लिखल देख रहल बानी । हम एही पल के लेल एह धरती पर आइल बानी, अब तक के बीतल सब रात, सब दिन हमरा के एह क्षण तक ले आइल बा अउर अब हमरा के निर्णय लेवे के बा । हमरा ऊ मुकुट ना चाहीं जे शायद हमार ह । हम ओह प्रदेशन के त्याग करत बानी जे हमार चमचमात तलवार

के माध्यम से हमार विश्व विजय अभियान के प्रतीक्षा कर रहल बाटे । हमार रथ के पहिया एक विजय से शुरू होके दूसर विजय तक कभी भी रक्त रंजित ना घूर्मी, जब तक धरती पर हमार नाम लहू से पूर्ण रूप से ना लिख दिहल जाई । ई धरती अउर एकरा राह पर धीरज धरऽ, कलंक रहित पैरन से चलेब । एकर भूमि के आपन बिछावन बनाएब; ई निर्जन धरती हमार निवास स्थान होई अउर एकर तुच्छ प्राणी हमार मित्र होइहें । जाति से बाहर निर्वासित अछूत लोगन के कपड़ा से अधिक मूल्यवान कपड़ा हम ना पहनेब । कौनो दोसर अन्न ना खाके, केवल भिक्षाटन से लोगन के इच्छा से दान-स्वरूप मिलल भोजन ग्रहण करेब अउर एकरा से जादे तड़क-भड़क से ना रहेब । गुफा के मद्धिम रोशनी अथवा जंगलझाड़ के रोशनी में ही हमार शरणस्थली होई । हम इहे करब काहे कि सब जीवंत अउर जीवित प्राणीजन के विलाप हमार कान तक आ रहल बा । आज हमार पूरा आत्मा संसार के दुःख से उठे वाली बीमारी के दया से ओतप्रोत बा, हमार संपूर्ण त्याग और कठोर प्रयत्न से अगर एकर इलाज खोजल जा सके त एह बीमारी के इलाज खोजेब । का हमनीसब के उच्च चाहे निम्न कोटि के देवता लोगन के पास एतना पर्याप्त शक्ति भा दया विद्यमान बा? उनकाके के देखले बा, के दर्शन कइले बा? देवता लोग उनकर पूजा करे वालन के मदद खातीर का कइले बा लोग? देवतालोग इंसान के प्रार्थना के बदले इंसान के उत्तर में उपहार के रूप में का देहले बा लोग? का देवता लोग अन्न अउर तेल के चढ़ावा के दसवां भाग के बराबर भी प्रसाद देले बा लोग? मंत्रोचारण करत पंडितगण द्वारा चीखत पशुअन के बलिदान से, उन्हन के भोजन करावे से, विष्णु, शिव, सूर्य के नाम लेवे से, जे केहू के रक्षा ना करेले, अउर ना कर सकेलें अउर ना नाम लेवे योग्य बाड़े, उनकर प्रार्थना करे से, आज तक का प्राप्त भइल? पूजा स्थलन में करे जाऐ वाली धारमिक प्रार्थना के चापलूसी से केहू के दुःख कम हो सकल? भय, जे दिन-ब-दिन धूँआ के जइसन विशाल होत जात बा, ओकरा से केहू बच पाइल? का प्रेम के मिलन अउर फिर बिछुड़न के डंक से, उग्र

बुखार अउर कम्पन बुखार के कम्पन, धीरे, मंद आदि से मुरझावत बुढ़ापा के ओर प्रस्थान करे से, भयावह काली मउअत अउर ओकरा, से परे जे प्रतीक्षा कर रहल बा, का इन्हन से हमार केहू भाई बच पइलें? घूमत पहिया जब ऊपर आ जाला, नवीन जिंदगी नया कष्टन के जन्म दे देली । नयी पीढ़ी नयी इच्छा से त्रस्त होखेली जेकर अंत फिर पुराना मजाक में होला । का हमार एक भी बहन पइले बाड़ी, उपवास के फल अथवा भजन-अस्तुति से कोई लाभ अथवा का प्रसव काल में दरद थोड़ा भी कम भइल बा? सफेद दही अउर तुलसी पत्र के चढ़ावा से? ना! संभव बा कुछ देवतागण अच्छा बा लोग, संभव बा कुछ देवतागण फल देवे में बुरा बा लोग बाकिर लोगन के भला करे में सब कमजोर बा लोग । दयावान अउर दयाहीन दूनु इंसान जइसन बाटे । एह से परिवर्तन के चक्कर से बँधल बा लोग । हमनीं के शास्त्र इहे शिक्षा देला कि एक बेर कहीं भी कइसे भी जीवन प्रारंम्भ हो जाला त जीवन चक्कर चलत ही रहेलाः धूल के कण, कीड़ा रेंगे वाला जन्तु, मछली, चिड़ियाँ, जानवर, मानव, दैत्य, देव, देवतागण अउर फिर माटी, माटी के कण अउर ऐंगानी हम सब एक दूसरा से रिश्ता में जुड़ल बानी सन । अतः अगर हम मानव के ओकर शाप से बचा पाएब त सारा संसार अज्ञान अउर भय से मुक्ति पा सकी । अज्ञान के छाया ह उदासीनता ! भय तथा निर्दयता एकर बर्बर विनोद हवे। जीवन के कष्टन से मुक्ति के विधि जरूरे होई । शरण लेवे के स्थान जरूर होई । जाड़ा के बर्फीला, ठंढी हवा में मनुष्य मरत रहलें जब तक केहू ओही बर्फ के नीचे छिपल चकमक पत्थर से आग निकाल के ठंड के मात ना दे देहलस अउर चैली के अन्दर छिपल आग जरावे वाला लाल चिनगारी के परगट ना कर देलस । लोग भेड़िया जइसन लालचपूर्वक मांस तब तक खात रहे जब तक लोग अन्न उगावल शुरू ना कर देलस । मनुष्य बड़बड़ात रहे अउर कुछ भी स्पष्ट बोल के अपना आप के व्यक्त ना कर पावत रहे जब तक केहू वाणी के खोज ना कर लेलस, अउर धीरजपूर्वक अंगुलियन से अक्षरन के अविष्कार ना कर लेलस ।

जे कुछ भी सुंदर उपहार आज हमार भाई लोगन के मिलल बा, ई खोज, संघर्ष अउर प्रेममय त्याग से ही आइल बा । एह से अगर एक आदमी महान अउर भाग्यशाली बा, धनी बा अउर अगर ओकरा स्वास्थ्य आ समृद्धि के सुख प्राप्त बा, यदि जन्मे से ओकरा भाग्य में राज करल लिखल बा अउर संभव बा ऊ राज करे के चाहे, राजा लोगन के राजा, महाराजा बने के चाहे, संभव बा केहू जीवन में रोज परिश्रम करके अउर सांसारिक दायित्व निभइला पर ना थाके अउर सुबह के ताजगी के समान प्रसन्न रहे, प्रेम-रूपी आहार अधिक प्राप्त होखे के अधिकता के कारण भी अब तक ओकरा में अरूचि पैदा ना भइल बा अउर ऊ अबहियों प्रेम के भूखा बा, अगर जो अबहियों श्रम से थकल नइखे अउर चेहरा पर झुर्री नइखे आइल, उदासीन महात्मा के जइसन अपना प्रताप के महिमा अउर ईश्वरीय कृपा से प्रसन्न बाटे, संसार के बुराई ओकरा में घुलमिल गइल बा, त अइसन व्यक्ति के अपना इच्छानुसार धरती के सर्वश्रेष्ठ चीजन के प्राप्त करे के स्वतंत्रता बा अउर अगर ओकरा जीवन ऐतने प्रिय लागत बा त जीवन जी के संतुष्टि के अनुभूति करे के चाहीं । बाकिर दोसरा ओर देखीं त हमू एगो साधारण व्यक्ति बानी जेकरा कौनो सांसारिक दर्द नइखे, कौनो कमी नइखे, कौनो सांसारिक दुःख दुःखी ना करेला, सिवाय उन्हन के दुःख के जे हमार रिश्तेदार ना ह लोग, बाकिर जे खून अउर मानवता के रिश्ता मात्र से हमरा से जुड़ल बा लोग अउर उनकरा अउर हमरा में रक्त के अलावा अउर कौनो संबंध नइखे । बाकिर हमरा पास देवे खातीर एतना कुछ बा मानव मात्र के प्रति प्रेम के कारण कि हम सब कुछ त्याग देब अउर ओकरा बाद अपना आप के सत्य के खोज में समर्पित कर देब । अउर मुक्ति के रहस्य के निचोड़-मरोड़ के, कहीं से भी, आकाश अथवा पाताल से निकालेब; भलहीं ओकरा के स्वर्ग भा नरक से छीन के ले आवे के पड़े जहाँ ऊ धोखा देके ज्ञात भा अज्ञात रूप से दब के छुपल होखी भा सबके इर्द-गिर्द हवा में घूम रहल होखी । हम ई खोज करेब अउर जरूरे ओह सत्य के पाताल

से भा जहाँ कहीं भी छुपल होखी उहाँ से खोज के सबके कल्याण के लेल ले आएब ।

निश्चय ही अंत मे, कहीं न कहीं दूर, कभी न कभी, हमार तलाशत आंखन के लेल परदा उठी, ई जिज्ञासु के दरद भरल पैरन खातीर रास्ता खुली, उ मारग अउर लक्ष्य जीतल जाई जेकरा लेल हम संसार के त्याग कर रहल बानीं । अउर एह प्रकार मृत्यु ही पाई कि अन्ततः ई त्यागी खुदे मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेले बा । हम इहे करेब, हमरा आपन ई राज्य के त्याग करेके बा कारण हमरा के आपन राजा अउर आपन परजा के बचावे के बा, जेकरा के हम हृदय से प्यार करेनी । हमार हृदय ओह सब दुःखी लोगन के हृदय के प्रत्येक धड़कन के साथ धड़केला जे ज्ञात अउर अज्ञात रूप से हमार आपन हवें । हमार ई त्याग से, जेकरा के अब हम ग्रहण करे जात बानीं, ऊ सब करोड़न लोग हमार हृदय में अउर अधिक प्रिय हो जइहें । हे पुकार रहल तारागण! हे शोकाकुल धरती! रउरा लोगन साक्षी बानीं ! हम सब धरती अउर प्राणी मात्र के कल्याण खातीर आपन युवावस्था, आपन सिंहासन, आपन खुशी, आपन स्वर्णिम दिन अउर रात, आपन सुखी राजमहल अउर सर्वाधिक प्रिय आपन जीवन-संगिनी यशोधरा के बाँहन के, जेकर त्याग सब के तुलना में सबसे कठिन बा, त्याग करत बानीं । लेकिन हम संसार के रक्षा के साथ-साथ यशोधरा तोहार भी रक्षा करेब । ऊ जे तोहार कोमल गरभ में आंदोलित हो रहल बा, हमार संतान, हमार प्रेम के छुपल फूल, अगर ओकरा के आशीर्वाद देवे खातीर हम रूक जात बानी त हमार मति मारल जाई अउर हम ओह मोहपाश में बँध के गृहत्याग ना कर सकेब अउर फिर मानव-उद्धार के मारग प्रशस्त ना हो पायी । एह से यशोधरा ! हमार पत्नी, हमार सखा! बेटा! बाबूजी अउर प्रजाजन! तहरा सब लोगन के कुछ समय के लेल एह मानसिक वेदना के घड़ी के सहे के होई जेमें प्रकाश फूटे अउर सब प्राणी ओह नियम के सीख सके जेकरा से जन-जन के कल्याण होखी अउर तहरो संसार के भव-चक्र से मुक्त होखे के मार्ग मिली ।

हम निर्णय ले लेले बानीं कि अब हम प्रस्थान करब अउर तब तक फिर वापस ना आएब जब तक हमरा ऊ, जेकर हम तलाश करत बानीं, प्राप्त ना हो जाता । यदि हमार तीक्ष्ण तलाश अउर संघर्ष जारी रही त निश्चय ही ऊ चीज हमरा प्राप्त होई । ई कह के सिद्धार्थ अपना भौं से यशोधरा के चरणस्पर्श कइलें अउर आपन प्रियतम अउर उनकर ऊ कमलवत नेत्रन से, ऊ नेत्र जे अब तक अँसूअन से नम रहलें, बिना कवनो शब्द व्यक्त कइले बिदा लेहलें अउर फिर ऊ शय्या के तीन बार श्रद्धा भाव से परिक्रमा कइलें मानो ऊ पूजा के वेदी होखे । फिर दूनू हाथन के आपन धड़कत हृदय पर एक साथ रख के ऊ अश्रुपूर्ण नेत्रन से कहलें, "अब हम कभी भी इहाँ ना लौटब" अउर ऊ तीन बेर महाभिनिष्क्रमण ला निकलले पर पत्नी पुत्र के एतना आकर्षण रहे, उनकर प्रेम एतना प्रगाढ़ रहे कि ऊ तीनों बार वापस आ गइले । ओकरा बाद अंत में साहस जुटा के आपन चादर से आपन सिर के ढ़कत ऊ मुड़ गइले अउर परदा के किनारा के हटा देहलें । सामने विशाल कमरा रहे, जेकरा में उनकर सहचरीगण गंगा, गोतमी अउर अन्य सूतल रहलीं । "रउरा सब हमरा के प्रिय बानी, हमार मित्र!" उ कहलें, "अउर रउरा लोगन के छोड़ल कष्टदायक बा, तेहू पर यदि हम रउरा के छोड़त नइखीं त हम सब के अउर का प्राप्त होई सिवाय बुढ़ापा के जेकरा से कौनो शांति ना मिली अउर फिर बुढ़ापा के बाद मृत्यु जेकरा से कौनो लाभ ना होई बलुक हमनी के हानिए हानि होई । देखऽ! जइसन तूं गहरी नींद में सुतल बाडू वोही तरह तूं मृत्यु पर्यन्त दीर्घ निद्रा में सुतबू । जब गुलाब सूख जाला तब ओकर सुरभि अउर शोभा कहाँ चल जाला? दीपक के तेल समाप्त हो जाला त ओकर लौ कहाँ चल जाला? हे रात्रि देवी! रउरा उनकर झुकल नेत्रन के अउर जोर से दबा दीं अउर उनकर ओठन के बंद कर दीं, जेमे कौनो आँसू हमरा के रोक ना सके अउर न उनकर केतनो आग्रह भरल प्रार्थना । आज ओह सबन के लेल, जे भी हमार जीवन के अति सुंदर बनवले रहलें, हम आपन जीवन समर्पित करत बानीं । रउरा से बिछड़ल अति दुःखदायी बा, बाकिर दूसर तरफ ई अउर भी कष्टदायक बा कि ऊ,

हम अउर हम सब, ऐंगानी जिहीं जैसन वृक्ष जीयेलें – कुछ समय तक वसंत ऋतु ओकरा बाद कुछ समय वर्षा ऋतु, फिर पाला अउर जाड़ा अउर ओकरा बाद सूखल पत्ती सब, संभव बा एक बार फेर बसंत आई, बाकिर ओकरा बाद अंततः मृत्यु के जीवन पर अइसन मार पड़ी जइसन जड़ पर कुल्हाड़ी के मार ! ना, ना! हम अइसन ना होखे देब । हमरा अंदर अगर तनिको शक्ति रही, तनिको उर्जा बचल रही त एह जीवन में एह समस्या के निदान जरूर खोज निकालब । हमार जीवन देवतागण जइसन सुखमय रहे । हमार दिन देवतागण जइसन बीतत रहल, बाकिर सब प्रजा अउर मित्रगण अंधकार में बिलाप करत रहलें । अइसन ना होई कि हमार इ महान त्याग अउर बलिदान व्यर्थ हो जाई! एह से मित्रगण! बन्धुगण! अलविदा! जीवन के सुन्दरता त्याग में बा अउर हम त्यागत बानी सब परिवार अउर सम्पूर्ण राज्य; ऊ मुक्ति मारग अउर अज्ञात प्रकाश के खोज में जेकरा पर मानव मात्र के आशा टिकल बा ।”

एह तरह से सोचत–सोचत, धीरे–धीरे चलत, जहाँ सब लोग सूतल रहले उनकरा बगल से गुजरत सिद्धार्थ राजमहल के बाहर अंधेरा में प्रवेश कर गइलें । रात के निश्चल आँख, सजग तारागण उनका के प्रेमपूर्वक आशान्वित होके प्रसन्नचित्त देखत रहे । धरती के श्वाँस, बहत वायु, उनकर वस्त्र के फड़फड़ात किनारा के चूमलस, उद्यान के कलियन सब जे सुबह खिले खातिर सिकुड़ल रहलीं, मध्यरात्री में ही आपन मखमली हृदय के खोल दहेलीं जेमें उनकर गुलाबी अउर बैगनी सुगंधदायी फुलन के सुगन्ध चारों तरफ फइल सके ।

हिमालय से महासागर तक धरती काँप गइल, मानों धरती के आत्मा एक अज्ञात आशा के साथ कंपायमान हो गइल अउर पवित्र पुस्तक जेकरा में बुद्ध के कथा लिखल बा, ओहू में कहल बा कि हवा में एक अनोखा दिव्य संगीत फइल गइल, एक से एक दिव्य मेजबान एकत्र हो गइलें । पूरब अउर पश्चिम दिशा रात्रि के

उज्जवल बना देलस अउर उत्तर अउर दक्षिण दिशा धरती के प्रसन्न कर देलस । धरती के चारों प्रतिशासक दू-दू करके दरवाजा के पास आपन चमकीला, अदृश्य सैन्यदल के साथ नीलमणि, चाँदी, सोना, अउर मोती रत्नन से सुसज्जित उतरलें । सब आपन वंदना स्वरूप आपन हाथन के जोड़ले, ऊ राजकुमार के ध्यान से देखत रहलें, जिनकर अश्रुपूर्ण आँख तारन के निहारत रहे । अउर होंठ अद्‌भुत, विलक्षण प्रेम से पूरा तरह से बन्द रहे । ऊ पूर्णतः गंभीर, शांत भाव से आहिस्ता-आहिस्ता साहसिक कदम रखत घुड़साल के पास पहुँचले । घुड़साल के लगहीं छंदक सूतल रहे । छंदक के पास पहुँच के धीमें से पुकरलें -"छंदक! उठ अउर कंटक के ले आव !" "का कहल जाता हमार स्वामी?" दरवाजा के बगल में आपन स्थान से गते-गते उठत सारथी उत्तर दिहले, "रात्रि में सवारी करेके बा जब सब राहन में अंधेरा फैलल बा?" धीरे से बोलऽ सिद्धार्थ कहलें, "अउर हमार घोड़ा ले आव कारण कि अब समय आ गइल बा कि हम ई सुनहरा कारागार सत्य के खोज खातिर त्याग दीं, जहाँ हमार हृदय अब तक बंदी रहल रहे । हम अब सब मानव जाति खातिर ऊ सत्य के खोज तब तक करेब जब तक ओकर प्राप्ति ना हो जाय ।" "अफसोस! प्रिय राजकुमार," रथ सारथी उत्तर में कहलें, "का व्यर्थ ही महाज्ञानी भविष्यवक्ता लोग हमनीं के ओह समय के इंतजार करेके कहले रहे जब राजा शुद्धोदन के महान पुत्र सम्पूर्ण धरती पर शासन करिहें अउर राजा लोगन के भी राजा होइहें ? का रउरा अबहीं घुड़सवारी करेब अउर आपन हाथ से राज-पाट अउर ई सम्पूर्ण धन-धान्य से परिपूर्ण धरती जाये देब, अउर एक भिखारी के भिक्षा पात्र पकड़ेब? का जेकरा पास स्वर्ग के आनन्द उपल्ब्ध बा; उ मित्रहीन संसार में जाई?" राजकुमार उत्तर दिहलें, "हम ई धरती के सिंहासन पर बैठे खातीर नइखीं आइल । हम जवन राज्य के कामना कर रहल बानी, ऊ सब राज्यन से अधिक श्रेष्ठ अउर महत्वपूर्ण बा । सब चीज क्षणभंगुर बा, समाप्त हो जाला अउर अंततः हमनी के मृत्यु के ओर ही ले जाला । कंटक के ले आव हमार मित्र !" "सर्वश्रेष्ठ श्रीमान," सारथी पुनः दलील देत कहलें, "स्वामी! आपन

बाबूजी के दुःख के सोचीं ! उनकर कष्ट के बारे में सोचीं; जिनकर रउरे परम आनन्द हईं, रउरा उनका के समूल उजाड़ के उनकर मदद कइसे कर सकेब?" सिद्धार्थ उत्तर देहले, "मित्र! जे प्रेम स्वार्थमय फल के लेल कइल जाला ऊ प्रेम झूठा ह । हम रउरा सब के अपना आप से भी ज्यादा प्यार करिले, अउर रउरा सबके बचावे खातीर, सब शरीरधारी के रक्षा खातीर आज प्रयाण कर रहल बानी, जेमे प्रेम के पराकाष्ठा बनल रहे । जा, कंटक के ले आव हमार भाई अउर मित्र छंदक ।"

तब सारथी कहलें, "स्वामी हम आवत बानी" अउर ऊ घुड़साल में गइले अउर ताख से चाँदी के लगाम, सोना के रस्सी, बाँधे के जंजीर लइले अउर चमड़ा के पट्टी के डाल देला के बाद ई सब के यथास्थान स्थापित कर दिहले । फिर काँटा के फँसइले अउर कंटक के बाहर ले अइले । खूँटा में पगहा के बाँधके कंटक के कंघी कर के कंटक के बर्फ के समान सिल्क के कोट पहनइलें । घोड़ा के पीठ पर जीन कसले अउर ओकरा के ठीक कइले । फिर आभूषित कमरबन्द के दृढ़ता से कसलें अउर ऊ महान घोड़ा के राजमहल के दरवाजा तक ले अइले, जहाँ राजकुमार खड़ा रहलें । बौद्ध साहित्य में लिखल बा कि जब ऊ अपना स्वामी के देखलस, त प्रसन्नतपूर्वक आगे बढ़ल अउर अंगूरी रंग के नाक के झाड़त खुशी से हिनहिनाइल । शास्त्रन में आगे लिखल बा, "निश्चय ही सब केहूँ कंटक के हिनहिनात सुनले रहे अउर धरती पर पैरन के पटकला के आवाज सुनले रहे, बाकिर देवतालोग ऊ सब के कानन के ऊपर आपन अदृश्य पंख लगा देहले रहे अउर सूतल सब लोगन के बिल्कुल ही बहरा बना देहले रहे लोग ।" सिद्धार्थ प्रेमपूर्वक ओह गर्वशाली घोड़ा के सिर नीचे झुका देहले, चमचमात गर्दन के थपथपइले अउर कहलन "शांत होखऽ, श्वेत कंटक ! हमार साथी ! शांत होखऽ अउर अब ई सृष्टि के सबसे लंबी यात्रा पर ले चलऽ, जेकरा के आज तक कवनो घुड़सवार ना कइले होखे, कारण आज रात में आपन प्रिय घोड़ा के भी सत्य के खोज में ले जात बानी, हमरा अबहीं मालूम

नइखे कि हमरा खोज के अंत कहाँ होई । अउर खोज भी पायेब कि ना, बाकिर एतना सुनिश्चित बा कि जब तक हम ऊ सत्य के खोज ना लेब, हमार खोज के अंत ना होई । एह कारण आज रात में, हमार प्यारा तुरंग ! आज तू प्रचंड बहादुर बन जा! कौनो चीज तोहरा के रोक ना पावे, हजार घास के झाड़ीन भी तहार मारग के अवरोधक ना बन सके! ना त कौनों दीवाल, अउर ना कौनो खाई हमनी के यात्रा के रोक सके। देख! अगर हम तोहार शरीर के मांसल भाग के स्पर्श करके कहीं, "चल कंटक" त फिर चक्रवात भी तोहरा से पीछे छूट जाय । आज अग्नि अउर वायु दूनु बन जा हमार मित्र! आज आपन स्वामी के अइसने सवारी करावऽ अउर एह भाँति तू भी उनकरा साथे एह महान कर्म के फल के बटऽब जेकरा से संसार के मदद होई । आज हम सिर्फ मनुष्य खातीर घुड़सवारी ना करेब । बल्कि ऊ सब चीजन अउर प्राणियन खातिर करेब जे गूंग बाड़े बाकिर हमनी के दुःख में हमनी लोगन के साथ बाड़े, जेकरा पास आशा के कवनो किरण नइखे अउर ना आशान्वित होखे के कौनो कारण? एह से अब अपना स्वामी के बहादुरी के साथ ले चलऽ । अब हम अउर बिलंब ना करेब ।" ओकरा बाद घोड़ा के काठी पर धीरे-धीरे चढ़त, वृत खंडी शिखा के स्पर्श कइलन अउर तब सिद्धार्थ के लेके कंटक तेजी से आपन खुरन के पत्थर पर रखत चल पड़ल, बाकिर केहु भी ओकर पदचाप के आवाज ना सुनले, कारण देवतागण पास में खड़ा होके लाल मोहरा के फूलन के तूड़ के ओकरा के कंटक के पैरन के नीचे घना फैला देले रहे लोग । देवतागण के ओह अदृश्य हाथ आवाज के कम करे खातीर बजत लगाम अउर लगाम-चेन के ढँक देहले रहलें । एकरा अलावे शास्त्रन में ई भी लिखल बा कि जब ऊ अंदर के द्वार के निकट पत्थर के फर्श तक अइलें तब वायु के यक्ष घोड़ा के पैरन में जादुई कपड़ा बाँध देहले रहलें जेमे ऊ कोमल अउर शांत चापन से चल सके । लेकिन जब सिद्धार्थ गेट पर पहुँचले जे तीन गुना पीतल के बनल रहे अउर जेकर दरवाजा मुश्किल से सौ लोग हटा अउर खोल सकत रहे त दरवाजा पूरा शांति से अपने आप पीछे के ओर हट गइल

यद्यपि दिन में ओकरा के खोलला पर आदमी दो कोस तक ओकर विकट कब्जा अउर विशाल प्लेट के गरजे के आवाज सुन सकत रहे। तेहूं पर ओह दिन केहू कौनो आवाज ना सुनल । ऐंगानी जब सिद्धार्थ अउर उनकर घोड़ा दरवाजा के लगे अइलें त मध्य अउर बाहर के दरवाजा अपने आप से शांतिपूर्वक खुल गइल । उ दरवाजन के रक्षा खातीर तैनात सब रक्षक भाला अउर तलवार लेले शिथिल पड़ल रहलें । ढाल ढीला होके पड़ल रहे । नायक अउर सिपाही सब मृतक के समान सुतल रहे लोग। ऊ समय एक अजीब सी हवा बहल रहे जे खेतन के ऊपर से बहे वाली मालवा के सुलावे वाली हवा से भी अधिक निद्रालु रहे । ओकरा के सूँघ के सब लोग सूत गइल रहे अउर ऐंगानी राजकुमार सिद्धार्थ अपना घोड़ा पर सवार छंदक के साथ बिना कौनो अवरोध के राजमहल से बाहर निकल गइले । राजकुमार सिद्धार्थ कंटक पर सवार लगातार पूरा रात चलत गइलें, चलत गइलें । जब सुबह के तारा आधा बरछी के लंबाई के बराबर पूरब दिशा के ऊपर रह गइल अउर धरती के ऊपर सुबह के साँस महसूस होखे लागल तब अनामा नदी के लहरन के पार कइला के बाद राज्य के सीमा के समाप्ति पर ऊ लगाम खींच लेहलें अउर घोड़ पर से धरती पर कूद गइलें । श्वेत कंटक के प्यार से चूम लेहलें जे कान हिलाके आपन प्रेम प्रकट करत रहे, जइसन जानवर सब आपन स्वामी के प्रति आपन प्रेम प्रकट करत रहेलें । ओकरा बाद राजकुमार आपन तलवार से आपन लंबा केश काट डलले अउर प्रेमपूर्वक छंदक से कहलें, “तू हमरा ऊपर जे उपकार कइले बाड़ ऊ तोहार अउर सब प्राणी के खातिर कल्याणकारी होई । सुनिश्चित हो जा कि हम सदा तोहरा सब लोगन के अत्याधिक प्यार करत रहनी अउर करत रहेब । हमार घोड़ा के वापस ले जइह अउर हमार आभूषण, हमार राजसी वस्त्र जेकरा के आज के बाद धारण करेके नइखे, हमार रत्न जड़ित तलवार, हमार लंबा चमकत केश ई सब राजा के दे दिह अउर कहिह, ‘सिद्धार्थ क्षमा-प्रार्थना कइले बाड़ें कि उनका के तब तक के लेल भूल जाईं जब तक कि ऊ दस गुना राजकुमार के रूप में अति महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त करके वापस ना आ

जात बाड़े । ई खोज के लेल अकेले निकलले बानीं अउर ऊ प्रकाश खातिर संघर्ष करेब अउर यदि हम जीत जात बानी त देखऽ ! सेवा अउर ज्ञान के माध्यम से सारा संसार हमार हो जाई, हमार हो जाई ! प्रेम के माध्यम से! कारण मनुष्य के आशा सिरफ मनुष्य पर बा। समस्त मानव जाति के आशा मानव पर टिकल बा, कारण मानव के उद्धार सिर्फ मानव के हाथ से ही हो पायी । केहू आज तक ऊ प्रकाश के खोज निकलले नइखे, जेकर हम खोज करेब । हम आपन संसार (निजी) छोड़ रहल बानी जेमे आपन संसार (सम्पूर्ण चराचर प्राणी) के बचा सकीं ।"

पाँचवाँ सर्ग
प्रव्रज्या

राजधानी राजगृह के प्रकृति के वरदान प्राप्त बा । ओकर मनोरम शोभा देखते बनता । ई पाँच पावन पर्वत अउर पवित्र वन से घिरल शोभायमान बा । पहिला पर्वत 'वैभार' सघन ताल अउर तमाल के वृक्षन से मंडित बा । दूसर पर्वत 'विपुलगिरि' के तले सरिता के पतला धार बहेला । तीसर पर्वत 'तपोवन' के छाँह में जल से भरल सरोवर विद्यमान बा । एकरा में श्याम शिला के प्रतिबिम्ब बहुते मनमोहक लागेला । इहाँ चट्टानन से शिलाजीत पिघल के नीचे के ओर धीरे-धीरे टपकत बा अउर पेड़ के डाढ़ सरोवर के पानी में भींजत झुम रहल बा । आग्नेय कोण में सुन्दर 'शैलगिरि' पर्वत स्थित बा जे मन के मोह लेवेला, जबकि 'गृध्रकूट' पर्वत के शिखर दूरे से नजर आवेला । पूरब अउर पच्छिम दिशा मे 'रत्नागिरि' पर्वत शोभायमान बा जे रतन के खान तथा हरियर पेड़न के समूह से घेराइल बा । रउरा के आम, जामुन तथा फूल वाला बगीचा से होके आवे के पड़ी । बेर अउर बाँस के कँटीला झाड़ी से बचत टीला पर चढ़े के होई । तब फेर रउआ सामने के समतल जमीन देख पाइब । एह खूबसूरत जंगल में पहाड़ के ढ़ाल पर एक से बढ़ल एक सुन्दर फूल फुलाइल लउकी अउर भीतर चलला पर गुफा के द्वार के सामने बरगदन के झुंड मिली । अइसन पावन स्थान अपने के कहीं ना मिली । अगर जो रउआ इहाँ ना आ पइनीं त जीवन भर पछताएब । भक्ति, श्रद्धा अउर आस्था से सरोबोर होके रउरा प्रवेश करीं अउर पवित्र, निर्मल हृदय से आदरपूर्वक आपन मत्था टेकी । इहे ऊ जगह ह जहाँ बुद्ध भीषण गरमी, पूस अउर माघ के ठंडक अउर घनघोर बरषा ऋतु के भयंकरता के सहत घोर तपस्या कइले रहलन । इहाँ समाधि में बइठ के चिंतन-मनन कइलन आउर जन कल्याण खातिर दिन-रात आत्म-मंथन कइले रहलन । लोके कल्याण खातिर ऊ अपना कोमल देह पर गेरूआ वस्त्र धारण कइलें अउर भिक्षा में जे कुछ भी साग-पात मिलत रहे ओकरा के खा के पेट

भर लेस । आपन घर-दुआर आउर स्वजन-परिवार छोड़ के ऊ घास-फूस पर सूतके रात बितावस । कबो सियार बोले, त कबो बाघ के दहड़ला से सारा जंगल काँप उठे । भिक्षु सिद्धार्थ एह तरह से उहाँ तपस्या में लीन रहलें । जेकर सुकुमार देह सुख भोगे खातिर बनल रहे ऊ अपना देह के तपस्या में तपावत रहलें । ऊ नियम के पालन करस, नाना प्रकार के उपवास रखस आउर ध्यान लगावस। आसन मारके अखंड समाधि में लीन होके मूर्तिवत हो जास । कभी उनकरा जांघ पर गिलहरी चढ़ के, कूद जाय, त कबो शरीर पर खेले आ दउड़ जाय । कबो कबूतरी उनकरा हाथ के लगे दाना चुग जाय, कबो गुटरगूँ करे त कबो कंठ हिलावे । बाकिर ई सब के उनकरा भान तक ना होत रहे । जब भरल दुपहरिया में धरती पर लू चलत रहे, सूरज धधकत आग उगले, तब तपत धरती अइसन लागे मानों सारा वन गर्मी से नाच रहल होखे । तबो एह सब के बीच सिद्धार्थ ध्यान में मग्न बइठल रहस । उनकरा एकर तनिको ध्यान ना रहे कि दिन खतम हो गइल बा । जब सूरज ढरे तब पर्वत के किनारे जरल आग के गोला जइसन लउके । जब सूरज के आभा खेत-खलिहान पर बिखर जाये त ऊ दीया के परछाहीं जइसन लागे। फेर, साँझ के बेरा खतम भइला पर जब आसमान में टिमटिम करत तारा आपन रोशनी बिखेरे आउर सारा नगर में मंगल ध्वनि बज उठे, ओह घड़ी भी राजकुमार ध्यानमग्न रहस । रात भइला पर जब पूरा संसार सुत जाय अउर खाली उल्लू के बोली अउर सियार के रोवल कबो-कबो सुनाई दे, तबो सिद्धार्थ अपना आसन पर विराजल रहस अउर उनकरा मन में खाली इहे विचार रहे कि आखिर जीवन के सत्य बा का ? बीच रात में, जब सारा संसार शांत अउर स्थिर हो जाये तब हिंसक अउर जंगली जानवर आपन शिकार पर निकले अउर ठीक ओही प्रकार गरजे जइसे मन के अज्ञान रूपी जंगल में आदमी के सारा दोष जइसे ईर्ष्या-द्वेष, काम, क्रोध, अहंकार तथा लोभ अजेय हो विचरण करे लें, कबो ना हारेलें । चंद्रमा आपन पथ पर जेतना चलेला ओकर आठवाँ भाग के बराबर गौतम रात के आखिरी पहर मे विश्राम करस अउर दुबारे सूर्योदय के पहिले उठ के रोज

चमचमात शिलाखंड पर घंटों ध्यान में मग्न खड़ा रहस । ऊ सुतल धरती अउर धरतीवासी के नम आँख से देखस आउर लोग के दशा अउर दुर्दशा देख के हृदय से रो पड़स । फिरू सुनहरा प्रभात के किरण के छुवला से धरती रोमांचित, मनोहारी, सुंदर, लहलहात नजर आवे । शुरू में कुछ स्पष्ट नजर ना आवे, बलुक एगो हलुक धुंध जइसन देखाई पड़े, बाकिर पूरब दिशा से निकले वाला किरण ई संकेत देवे कि सुबह होवे वाला बा । जब नगर के अंदर मुर्गा बांग देहल शुरू करे तब परबत के चोटी पर अँजोर के सफेद लकीर जइसन लउके । लागत रहे मानेां धीरे-धीरे शुभ्रतर, उज्जर हो जाई आउर दोबारे सोना के पीला आभा में बदल जाई । बदरी के टुकड़ा रक्ताभ, नीला अउर पीला रंग में अइसन चमचमाये मानों आसमान में कउनों सुनहला गोटा चढ़ा दिहल गइल होखे । तब सारा संसार के जिनगी के आधार, परम प्रतापी सूरज प्रकाश रूपी मनोहर परिधान के साथ पदार्पित होखे । राजकुमार ऋषि जइसन नित्य क्रिया के बाद भगवान भास्कर के शीश नवाँ के प्रणाम करस । ओकरा बाद आपन भिक्षा पात्र लेके भिक्षा खातिर नगर के ओर निकल जास । योगी रूप में गली-गली घूमस आउर जे केहू कुछ दे दे ओकरा के हाथ पसार के ले लेस । जब भिक्षा से उनकर पात्र भर जाये तब अनेक लोग 'ईहो ले लीं महाराज' कहत रह जाये । उनकर दिव्य रूप, सुखदायी नेत्र अउर सौम्यता के देख के नगर के सारा नर-नारी ठगाइल जइसन रह जास, अउर सिद्धार्थ के चरण में गिर के उनकरा से आशीर्वाद के भीख माँगस । केहू उनकरा चरण-रज के आपन माथे लगावे त केहू अपना माथा के उनकरा चरण में झुकावे । केहू मीठा पकवान त केहू पानी ले आवे । दिव्य दयावान भिक्षु ध्यान में लीन होके धीरे-धीरे प्रेमपूर्वक चलल जास । प्रेम अउर भक्ति-भाव से भरल नर-नारी के आँख उनकरा पर का पड़ी? उनकर अनूप रूप अउर लोगन के लुभावे वाला आँख पर उनकर नजर जा गड़े, अउर ऊ लोग टकटकी लगइले देखत रह जास । आँख हटला के नामे ना ले, आँख के रास्ता से उनकरा हृदय में प्रेम प्रवेश कर जाय । बाकिर सिद्धार्थ भिक्षा खातिर अपना हाथ में

पात्र लिहले अउर शीश झुकइले आपन रास्ता पकड़ले चलत जास । उनकर मीठ वचन सुन के सभे शांत अउर संतुष्ट हो जाय अउर फिर तथागत 'गृद्धकूट' के ओर वापस लवट आवस, आउर फिर से ध्यान में लाग जास । जेतना योगी, पंडित अउर ज्ञानी उनकरा आस-पास बइठत रहे उनकर ज्ञान के बात ध्यान से सुनस अउर उनका से पूछस कि सही मार्ग का बा ?

हठ्योगियन से संवाद

रत्नागिरी के ओर जवन शांत कुंज बा उहाँ पर कुछ मुनि रहत रहलें जे हमेशा एह शरीर के नश्वर अउर एकरा के चैतन्यता के शत्रु मानस । "शरीर में इन्द्रिया सब विकराल पशु के जइसन होले । एह खातिर, उन्हनीं के अपना वश में करके उन्हनीं के दमन कर डालीं । अइसन कइला से क्लेश के सब वेदना अपने आप मर जाई । शरीर ना त गरमी से तप्त होई अउर ना जाड़ा के शीत से काँपी ।" नाना ऋषि-मुनि आपन घर-बार छोड़ के निर्जन अउर सुनसान वन में आपन तपस्थली बना के मन लगा के योग-साधना करस । कहीं केहू दूनों बाँह उठवले पूरा दिन खड़ा रहे, ओकरा आपन दूनों बाँह मोड़हूँ के समय ना मिले । कई जना उखड़ल अउर कटल लकड़ी के ऊपर चढ़ल रहस । कई लोग के शरीर सूखल, छीन अउर गतिहीन होके सूखल काठ जइसन लागत रहे । केहू कठोर होके अपना कान में कील ठोके, त केहू के नाखून भालू के नाखून से भी ढेर बढ़ल रहे । केहू लोहा के कील बिछा के ओपर आसन मार के बइठल रहे, त केहू अपना शरीर के हर अंग के मड़ोड़त अउर ऐंठत रहे । केहू आग जरा के पंचाग्नि में अपने आप के तपा देवे, त केहू जरत पत्थर से मार-मार के आपन शरीर के जर्जर बना देत रहे । केहू देह पर राख अउर माटी पोत के चीथड़ बस्तर धारण कइले रहे।

केहू श्मशान में बइठके दिन-रात भोले-नाथ के माला जपे, जहाँ सियार लाश के नोच के भागे अउर गिद्ध मँडरात रहे । केहू

पूरब दिशा के ओर मुँह कर के एक पाँव पर खड़ा रहे अउर जब तक सूरज डूब ना जाय तब तक ऊ कुछ ना खाये अउर ना पिये । लगातार दुःख सहत देह के मांस गला देवे । चमड़ी हड्डियन से सट चुकल रहे अउर नस सूख के रसरी जइसन लउके । केहू कमजोर भइला के बावजूद चँद्रायण करे त केहू अनशन रखे । केहू धूरा में लोटा जाय त केहू मुँह में राख भर ले । केहू रसना के सुन्न कर जड़ी-बूटी चबाये अउर एह प्रकार आपन स्वाद के हर वासना के दबा देवे । केहू आपन पैर कटले रहे त केहु आपन जीभ । केहू आँख निकलले, कान नोचले आपन शरीर के आभा छिनले रहे । अंगहीन, गतिहीन, गूंगा, बहिर अउर अंधा विकल हो गिर पड़े । जीवित भइला के बावजूद मूअल जइसन जमीन पर काठ के तरह पड़ल रहे । उनकर धारणा रहे कि जेभी एह धरती पर देह-दंड के सारा कठोर यातना झेल ली, ओकरा फिरो यमराज के प्रताड़ना के भय ना रही । सारा वेद, शास्त्र, पुराण अउर आगम इहे कहे लें कि सारा क्लेश के जीत के मनुष्य सुंदर देवगति प्राप्त करेलें । ई सब दृश्यन के देख के भिखु सिद्धार्थ ओह योगियन में से एगो के पास जाके कहलन, "ओह ! अपने लोग त घोर क्लेश सह रहल बानीं । हम पिछला एक माह से ई सब देखतानी । इहाँ अउर बहु सारा रउआ समान तपत लउकत बाड़े । एह जिनगी में पहिलहीं से दुःख कहाँ कम बा जे रउरा इहाँ अउर अधिक कलेस बढ़ा रहल बानीं?" तपस्वी कहलन, "हम कुछु नइखीं जानत, हम त उहे काम कर तानी, जे ग्रन्थन में लिखल बा । जे केहू अपना शरीर के तपाके पीड़ा सही ऊ मउअत के विश्राम जइसन मानी, काहेकि पीड़ा सहला से पाप नष्ट हो जाला जेसे, जिनगी शुद्ध होके निखर जाला, अउर ओकरा लोक में शुभ प्राप्त होला । एह संसार के कष्टमय अउर तापपूर्ण कुआँ से निकल के दिव्य स्वरूप लेके लोकन में विचरण करेला । अउर दिव्य लोक में ऊ नाना प्रकार के सुख-सुविधा के भोग करेला जेकर ऊ इहाँ कल्पनो ना कर सकेला ।" सिद्धार्थ कहलें, "जौन शुभ मेघ आसमान में लउक रहल बा ओके देख के अइसन लागत बाटे मानो इन्द्रासन में सोना के परदा लागल होखें । ऊ हवा से कँपकपात समुन्दर से

उठके आसमान में चल जाला अउर फिरो लोर के बूँद के जइसन जरूरे नीचे गिर जाला । कीचड़ में सना ऊ सिर धुनेला अउर नदी-नाला से बहुत निःसंशय दोबारा सागर में जा मिलेला ओकर एही रूप के स्वर्ग के सुख भोग नइखे कहल गइल, जेके मुनिजन साधना आउर योग कर के अरजित करेलें? जे ऊपर चढ़ी ऊ जरूर नीचे जा गिरी, जौन चीज खरीदल जाई ऊ धीरे-धीरे त समाप्त होइए जाई । जगत के ई अटल नियम बा । ई रउरा में से केहु के नइखे लउकत का? आपन शरीर से रकत निचोड़ के एह प्रकार सुख-धाम खरीदियो लीं, तबो जब ऊ भोग पूरा हो जाई तब फिरो उहे भवचक्र, अविराम कष्ट शुरू हो जाई । ना जाने केकर का गति होई, भविष्य कौन तरह रही, काहेकि रात के बाद दिन आवेला, अउर श्रम के बाद शांति ।" ऋषि कहलें, "रक्त मांस से बनल देह से हमरा कउनों मोह नइखे जे कि जिनगी के विषय-वस्तु से बन्हले राखेला । हम जिनगी के भलाइये खातिर देवता लोग के तुष्ट कर तानी, काहे कि ई पीड़ा क्षणिक बा, असल में हमरा निरन्तर सुख के आस लागल बा ।" एह पर कुँवर कहलें, "भाई हमार! ओह सुख के अवधि भी सीमित बा । करोड़ो बरस तक रहला पर भी ओकर समाप्ति तय बा । ई देवता लोग के आपन नित्य धाम कहाँ बा?" तब योगी लोग कहलें, "एह संसार में कुछु नित्य नइखे, देवतागण भी नित्य नइखन । यदि केहु नित्य बा त खाली ब्रहम्! हम अउर कुछु नइखी जानत।" ई सुनके भिक्षु सिद्धार्थ कहलें, "सुन ए हमार भाई! तूं त हमरो से ज्यादा ज्ञानवान अउर दृढ़प्रतिज्ञ लउकत बाड़ । फिर, आपन शरीर दाँव पर काहे लगावतार? अइसन सुख पर दाँव काहे लगावत बाड़ जौन सपना जइसन नष्ट हो जाई । तूं आत्मा के प्रिय अउर शरीर के अप्रिय जान के, शरीर के प्रताड़ित करके दुर्गति पावत बाड़ । जे जिनगी के सम्मान करे में समरथ नइखे ऊ आपन राह कइसे खोज पाई? तूं बीचे में अकड़ के आपन पंथ खोज रहल बाड़ । जौन घोड़ा अपना मने रास्ता पर खुद ब खुद चलल जा रहल बा ओकरा के चाबुक के मार से मार मार के जर्जर कर देत बाड़। पिछला कर्म के मोताबिक जे शरीर में आत्मा के निवास रहेला, जीव

के ऊ भवन, ऊ जीवधारी शरीर के ढाहे पर काहे तुलल बाड़? एकर दुआरन से हमनीं के कम से कम कुछ अँजोर त पावत बानीं । जबो आँख उठावत बानीं त कुछ धुँधला त लउकत बा कि कब सवेरा होई, कब घोर अन्हार-पुँज के नाश होई अउर सुन्दर, सीधा तथा सुगम राह लउकी।" योगी जन हार के कहलें, "हमार पंथ त इहे ह । हमनीं का एही पर अंत तक चलत जाएब, सारा दुःख सहत जाएब । अगर तूं एकरा से जादे कौनो सुगम मार्ग जान तार त कृपा करके हमनी के बताव, नाहीं त बस आनन्द करऽ, तोहरा एह पर ध्यान देहला के कवनो जरूर नइखे ।" ई जवाब सुन बुद्ध के मन खिन्न हो गइल अउर ऊ आगे बढ़ गइलन । सोचे लगलन कि कइसे मउअत से डेराइल आदमी भय के भी हरा रहल बा । जिनगी से जेतना प्रेम कर सकेला ओतनो नइखे करत । प्रेम कइला के बजाय ऊ जिनगी के मुश्किल में डालके आपन व्याकुलता बढ़ा लेता । देव लोग के रिझा के प्रसन्न करे के भरसक जतन करेला जे आदमी के सुख देख के सुखी ना होलें । जीवन के नरक बना के नरक के भयंकरता कम करे के प्रयास करेला । तप के पागलपन से मुक्ति के मार्ग खोजेला । तब सिद्धार्थ खिलल फूल देखके बोल पड़ले, "केतना सुन्दर मनोहर फूल बा जे उदित सूरज के प्रकाश में आपन कोमल मुख के खोल लेला । अँजोर पाके ई हरखित हो जाला अउर एकरा में श्वास-सौरभ के संचार हो जाला । ई फूल सब सफेद, सुनहरा अउर ललाई वाला वस्त्र जइसन सजल-धजल बाड़े । तोहरा में से केहू आपन जीवन के माटी में नइखे मिलावत अउर ना हठ के कारण आपन सुन्दर रूप के बिगाड़त बाटे । वाह! केतना सुन्दर दृश्य बा! ताड़ के विशाल पेड़ आसमान के ओर आपन माथा उठवले हवा पी अघा रहल बा अउर आसमान छूए के चाहता । बदरी आपन शीतल जल के नीला आसमान में फइला रहल बा आउर मलयगिरि हवा में सुन्दर गंध व्याप्त बा । हे प्रिय वृक्ष ! तोहार रहस्य का बा कि तूं अंकुर से लेके फल होखला तक दोसरा के खुशी देलऽ आ संतुष्ट रहेल? तोहार पत्ता पंख के तरह मरमर ध्वनि उत्पन्न करता । हँसते-हँसत संसार के खुद समृद्ध करत बाड़ । पेड़ के डार पर

विचरण करे वाला हे पक्षीगण! तोता, मयूर, कबुतर, कोयल आदि ! तू ना त कबो जीवन के तिरस्कार करे ल अउर ना अधिक सुख खातिर आपन शरीर के पीड़ा देके मर जाल । बाकिर जीउअन में श्रेष्ठ आदमी तोहरा के मार डालेला अउर मंद बुद्धि से रक्तपात कर ज्ञानी कहाला । जादेतर लोग एही विचार के वशीभूत होके खुद के पीड़ा देहला में स्पर्धा करत रहेलें, आत्म-कलेश देहला में ही ई माहिर तथा चतुर बाड़े ।"

ई कह के बुद्ध चट्टानन के रास्ता से कुछ आगे बढ़ल रहलें कि खुर के आघात से उड़त धूल अउर भेड़-बकरी के एगो बड़ा झुंड सामने से आवत लउकत जे रूक-रूक के आपन मुँह चला देवे । जहाँ कहीं पानी या लटकल गुलर के डार लउके उहें दू-चार गो आपन रास्ता छोड़के लपक जाये । गड़रिया ओकनी के बहकत देखके डंडा से हाँक के रस्ता पर ले आवे । ओही घड़ी भिक्षु सिद्धार्थ दू बच्चा के साथ एगो भेड़ के आवत देखलें । एगो मेमना लहूलुहान रहे, ओकर नन्हा-नन्हा पाँव से खून बहत रहे । ऊ दूनों काफी थकल रहलें अउर माई चींची करत प्रेम से अपना साथ चलला के उकसावत रहीं । जब बच्चा रूके अउर आगे ना बढ़ पावे त ऊ अधीर, व्याकुल होके रूक जास काहेकि बच्चा के पीड़ा ओकरा के आगे बढ़ला से रोक देवे । लँगड़ात बच्चा के देखके सिद्धार्थ ओकरा के अपना गोदी में उठा लेहलें अउर कंधा पर लाद के आपन हाथ से सहलावत कहलें, "हे ऊनदायी भेड़ माई! तू मत घबड़ा! हम एकरा के ओही जगह पहूँचा दे तानी जहाँ तोहरा जाए के बा । हमार मानल बा कि एगो कराहत पशु के पीड़ा हरल अनेक योग तथा तप-साधना से ढेर पवित्र काम बा ।" फेर सिद्धार्थ आगे बढ़के चरवाहा सब से पूछलन, "हे भाई! एतना धूप में तूं लोग एह झुंड के कहाँ लेले जात बाड़? सामान्यतः साँझिये का बेरा भेड़न के उनका चारागाह में वापस ले आइल जाला ।" चरवाहा लोग जवाब देहलस, "हमनीं के राजाज्ञा मिलल बा कि बलि देला खातिर आज एक सौ भेड़ चुन-चुन के लाव । मान्यवर महाराजाधिराज आज रात

देवपूजन करिहें । एह खातिर राजमहल में बहुत प्रकार के उत्सव मनावल जाता ।" सिद्धार्थ धीरजपूर्वक कहलन, "हमहूँ चलतानी" अउर उनकरा साथ धूप में उहो बच्चा के गोद में उठवले राजमहल के ओर चल देलन । उनकर धूमिल लिलाट पर पसीना के बूँद चमकत रहे अउर पीछे-पीछे भेड़ में-में करत चलल जात रहे ।

किसा गोतमी

सभे चलत-चलत एगो नदी के किनारे जा पहुँचल जहाँ उनकरा एगो सुन्दर, लोर भरल आँख वाली नवयुवती मिलली । ऊ बुद्ध के हाथ जोड़ के प्रणाम करके कहे लगली, "गुरूवर! हम अपने के जानतानी । अपने के उहे करूणानिधान हईं जे काल्ह हमरा कुटिआ में आके हमरा के धीरज बँधइनी जहाँ हम अपना बच्चा के साथे रहत रहनीं । हमार लड़िका एक दिन फूल के बगइचा में घूमत रहल जब ओकरा से अकेले में एगो साँप लिपट गइल । लड़िका ओकरा साथे किलकारी मार के खेले लागल अउर साँप फूँफकार के ओके डँस लिहलस । हाय! एसे ओकर शरीर मुअला जइसन नीला पड़ गइल । ऊ हिलल-डूलत भुला गइल अउर माई के दूधो पीअल। केहू बतावल कि एकरा शरीर में विष फइलल बा अउर 'एकरा केहु बचा ना पाई ।' बाकिर हम आपन प्राणधन के कइसे खो सकत रहनी? एह खातिर झाड़-फूँक आदि सब करइनी अउर देवता के मनौती करत थक गइनीं । हम हर कोशिश कइनी कि हमार बच्चा एक बेर फिर आँख खोल के हमरा के देखे अउर हमरा ओर निहारत विहँसत मुँह से 'मइया' कह के पुकारे । हम इहो ना जानत रहनीं कि साँप के काटल मृत्युकारी होला अउर नाहीं हमार लड़िका केहू के अप्रिय रहे । फिर भला साँप के ओकरा से कौन दुश्मनीं रहल होई कि ऊ एह अबोध अउर अनजान के खेला-खेला में डँस के आकर प्राण हर लेहलस? तब केहू हमरा के बतावल, "तूं परबत के पास जा । उहाँ एगो सिद्ध महात्मा रहे लें । शायद ऊ तोहर बच्चा के कुछ कल्याण कर सकस ।' हम ई सुनत अपने के पास दउड़त,

काँपत, बिलखत अइनीं । राउर दिव्य रूप देख के, पुलकित होके, आँसू भरल आँख से हम बिलखत लरिका के मुँह से कपड़ा हटा के ओह लरिका के रउआ चरणन में डाल देहनीं अउर हाथ जोड़के विनती कइनीं, 'दयानिधान ! अब रउए कुछ उपचार करीं ।' अपने के हमरा पर दया दिखइनीं । हमरा के टलली नाहीं । सजल आँख से बच्चा के छूके कहनीं, 'हम जेतना उपचार जानतानी, ओतना जरूर बताएब जेमे बच्चा अउर तोहार दूनों के उपचार हो सके । जे तू लेआ पइबू उहे औषधि तोहराके बताएब । कहल बा कि रोगी के ऊ दवा के प्रबंध करे के पड़ी जे वैद्य सुझइहें।' ठीक ओही प्रकार रउरा हमरा के आदेश देहनीं कि तू कउनों घर से सरसों के कुछ दाना मांग ले आव, बाकिर ध्यान रखिह कि सरसों तोहरा के ओही घर से ले आवे के बा जौना घर में अबले माता-पिता, भाई-बहिन, लड़का-लड़की, नर-नारी भा कौनो भी व्यक्ति मुअल ना होखे । यदि अइसन सरसों तू ला देहलू त तोहार बबुआ फिर से जी उठिहें । रउरा ओह समय इहे बात कहनीं!" सिद्धार्थ मुस्करात बोललें, "हँ, किसा गोतमी! हम तोहरा के इहे बात कहले रहनीं, ई हमरा अच्छी तरह इयाद बा । का तोहरा अइसन सरसों मिलल?" गौतमी करूणानिधान के सामने शीश झुकइले, बिलखत, व्याकुल होके बोलली, "मृत समान शिशु लिहले हम धैर्यपूर्वक घर-घर सरसों मांगत गइनीं । लोग हमरा पर दया करके सरसों दे भी देलें । जेसे भी सरसों मंगनीं उहे ला के सरसों दे देलन काहे कि आदि काल से ही दीनन पर दया करे कि रीति चलल आवत बा । बाकिर जब भी हम पूछीं कि का तोहार घरे केहू मातापिता, पति, पुत्र, बँधु, बहिन या देवर मृत्यु के प्राप्त भइल बा त लोग आश्चर्य चकित हो इहे कहे, 'का कहलू बहिन? तूं अज्ञानी जान पड़ ताड़ू । ना जानें केतना मरल बाड़ें, एह घर में जीयत परानी त थोड़ ही बाड़ें।' हम उनकरा के सरसों लौटाके फिर दूसर घरे गइनीं अउर सरसों मँगनी लेकिन सभे उदास होके इहे कहे, 'केहू ना केहू त मरल बा ।' सभे अति उदास हो इहे कहलस 'सरसों त बा बाकिर हमार भाई मर गइल बा । सरसों बा, पर बहिन! हमार पति हमरा के छोड़ गइल

बाड़न । सरसों त बा बाकिर ओकरा के केहु बोए वाला नइखे । काटे के पहिलहीं, हाले में स्वर्ग सिधार गइलें ।" फिर हम आपन शिशु के नदी किनारे नरकट के झाड़ में डाल देहनीं जे अब ना बोलता ना हँसता अउर अब रउरा पास विनती करे आइल बानीं, ई जाने आइल बानीं कि हमरा ऊ सरसों कहाँ मिली ?" तब करूणा से द्रवित, आँसू भरल आँख से, भारी हृदय से शाक्य-मुनि कहलें, "जौन चीज ना मिल सकेला ओकरा खोजत खोजत तू हार गइल बाड़ू, बाकिर एही क्रम में ऊ कटु सत्य, ऊ महान औषधि खोज लेलू कि मनुष्य के शरीर नश्वर बा, ऊ स्थायी नइखे । हम काल्हे ही देख लेले रहनीं कि तोहार बेटा महानींद में सो रहल बा, ओकर मृत्यु हो चुकल बा । उहे तूं आज देखतारू अउर इहे दुःख के कारण बा । दोसर के दुःख से खुद आपन दुःख कम हो जाला । बहुत लोग में बँटके ऊ हलुक हो जाला । हमार आपन पूरा हृदय के खून दे देला से यदि तोहार आँसू रूक जाये त हम अपना के बहुत आभारी समझब काहेकि मृत्यु अटल बा । एकर मरम केहू नर-नारी नइखे जानत जे प्रेम-माधुर्य के बीच विष घोर देला अउर लोगन के बटोर के बलि खातिर ले जाला । जइसे कसाई प्रकृति के सुन्दरता के बीच, फूल से लहलहात वाटिका के बीच मूक पशु के हाँक ढो ले जाला, ओही तरह हमनीं का सभे मृत्यु रूपी बलि के ओर खिंचल जातानी । हमार बहिन ! हम ओही रहस्य के खोज करतानी । एह खातिर अब तूँ देर मत कर । आपन शिशु के अंतिम क्रिया-करम कर डाल ।"

यज्ञ-बलि दरशन

बुद्ध अपना गोदी में पशु के उठवले पशु समूह के साथ नगर में प्रवेश कइलें जहाँ सूरज के सुनहरा किरन सोन नदी के जल पर पड़त रहे । नदी के संपूर्ण जल सुनहरा बनके चमक रहल रहे । अब नगर के गलियन में लंबा परछाईं समाप्त होखे वाला बा । ओह नगर के द्वार सिपाही दण्ड लेले खड़ा बाड़ें । ऊ सब बुद्ध के

पशु सब के अपना साथे ले आवत देखके मौन रहके उनकरा खातिर आदरपूर्वक रास्ता दे देहलें । बाजार में बइठल लोग, जे जहाँ रहे, ऊ आपन सब काम-काज छोड़के उनकरा के देखे लागल । ग्राहक अउर बनिया आपन झगड़ा रोक के उनकर सुंदर रूप निहारे लगलें । लुहार के हथौड़ा उठल के उठल रह गइल, ऊ मार ना पइलस । जुलाहा बुनल छोड़ के ताके लागल अउर लेखक के लेखनी हाथे में रह गइल । सराफ सुध भुला गइल, चकरा गइल कि अब पइसा के ढेर के काहे गिने? अन्न के राशि पर केहू के दृष्टि ना रहल अउर साँड़ सुख से खाये लगलस, मटकी से दूध के धार बह चलल, ग्वाला सिद्धार्थ के ठगल सा देखते रह गइलें । नगर के अनेक औरत आपस में मिलके पूछे लगलीं, "बलि खातिर ई के पशु लेले जा रहल बाड़ें? एतना पवित्रता, शांति, कोमल ललाट, मन के हरे वाला सुन्दरता, कोमलता धारण कइले बाड़े । हे सखी ! बताव त इनकर जात का ह अउर ई कहाँ से एतना सुन्दर, लजीला आँख पइले बाड़न? कामदेव के जइसन समग्र मादक लाग ताड़ें जइसे कि सुन्दर इन्द्रधनुष गतिमान होखे ।" केहू कहलस, "इ उहे सिद्ध पुरूष हउअन जे गिरि के पार योगीयन के साथे रहे लें।" ओन्ने आपन राह पकड़ले सिद्धार्थ मने मन ई विचार करत चलल जात रहलें, "मनुष्य भेड़ के समान भटकत बाटे । आह! इनकरा के चरावे वाला केहू नइखे । आन्हर हो सब बलि खातिर उहाँ चलल जा तारें जहाँ यम के तलवार के धार लटक रहल बा ।"

तबे एगो सेवक भिक्षु सिद्धार्थ के आवत देखके राजा के पास आके कहलस, "महाराज अपने के यज्ञ खातिर एगो महान संत आवतारें ।" नृप यज्ञशाला में खड़ा रहलें जहाँ बंदनवार बँधल रहे अउर ब्राह्मण जन शुद्ध वस्त्र धारण कइले मंत्रोच्चारण करत रहलें । सभे मिल के बारंबार आहुति देत रहलें अउर मध्य वेदी में धुँआधार आग धधकत रहे । काठ से गंध उठत रहे जेसे लौ के जीभ लपलपात रहे, बार-बार बौखलात रहे, धुंधुआत रहे अउर घीय के धार पा रहल रहे । ओके सोमरस भी मिलत रहे जेके पीके इन्द्रो अघा

जालें अउर सब देवन के अंश उनकरा पास पहुँचते रहे । बधित पशु के खून के गाढ़ा लाल धार जमल रहे । रक्त के जमल धार बालू पर वेदी के पार ले थम-थम के बहत रहल । एगो बड़हन सिंग के बकरा बड़ा मिमिआत लउकत रहे जेकरा के बलि स्थल पर बाँधल गइल रहे । ओकरा कंठ पर तेज तलवार तान एगो ऋषि विधि अनुसार मंत्र बोले लगलें, "हे देवगण! अपने आ के एकरा के ग्रहण करीं । यज्ञ बलि के स्वीकार करके नृप बिंबिसार के हर्षित करीं । रक्त के बहत देखके रउरा प्रसन्न होईं, पल में जरत आँतन के चर्बी के गंध से रउरा तृप्त हो जाईं । हमार राजा के सिर से सारा पाप उतर जाये अउर एह खातिर ई बकरा के बलि दे तानीं । सब देवगण आके आपन-आपन भाग ले जास ।" ठीक ओही समय तथागत राजा के नजदीक आके तत्काल खड़ा हो गइलें अउर रोकत कहलें, "हे राजन ! एकरा के मत मारे दीं ।" बलि पशु के पास जाके तुरंत सारा बंधन खोल देहले । ओ महातेज के सामने अब केहू का बोलित? फिरो शाक्य-मुनि कहलें, "हे राजा! पूरा ध्यान से सुनीं । प्राण सभे ले सकेला पर प्राण केहू दे ना पाई । केहू केतनो क्षूद्र होखे, सबका आपन-आपन प्राण प्यारा बा जेके निश्चय ही केहू त्यागल ना चाहेला । यदि दया के भाव होखे त ई जीवन एगो अनमोल प्रसाद बा । एकर प्रभाव सबल अउर निर्बल दूनों पर दिखेला । दया भाव निर्बल खातिर जगत के कठोर गति के कोमल कर देला आउर ई सबल के श्रेष्ठ पथ के ओर ले जाला । आदमी खुद त क्रूर हो जाला बाकिर अपना खातिर देवता लोग से दया के भीख मांगत फिरेला । खुद देवता समान होके पशुअन के अउर अपना से निरीह प्राणियन के कष्ट देवेला । जगत में जेतना भी जीव बाटे ओह सब के एके गोत्र बा । जेकरा ई ज्ञान बा उहे श्रेष्ठ बा । निरीह, मूक प्राणी मनुष्य पर विश्वास करे लें । भेड़ तृण खाके ऊन देली । अइसन दयालु, दीन जीव पर मानव घात लगावेला । सारा शास्त्र बतावे लें कि मनुष्य मानव शरीर कइसे पावेला । ऊ खग, पशु योनि के भोग भोगत-भोगत आखिर में मानव देह प्राप्त करेला । बाकिर मनुष्य मानव शरीर मिलला पर अपना पुरान योनि के प्रति

दयाभाव अउर आपन कर्त्तव्य पूरा तरह भुला जाला । जीव भवचक्र में पड़ के अग्नि कण के समान फेरा खाला, कबो निखर के चमक जाला त फिर कबो बुता जाला । हे नरन में श्रेष्ठ नृप! यज्ञन में पशु हनन निश्चय ही पाप बा अउर अइसन करके जीवन के गति के रोकल अन्याय बा । एह जगत में केहू भी जीव रक्त से शुद्ध ना भइल बा, ना होई । यदि देवगण दयावान, करूणावान अउर भला बाड़ें त रक्तस्त्राव से कइसे तुष्ट होइहें? अउर अगर ऊ क्रूर बाड़ें त हमनीं के रक्त-दान देवे से अउर ई दीन पशुअन के मार के उनकरा के कइसे बहला सकेब? एह प्रकार से अलग-अलग गलत कर्म कर के जे आदमी विविध पाप करे लें उनकर करम फल एको तिल के बराबर भी एह पशुअन के सिर पर जाके ना टिकी । मनुष्य जे करेला, ओकरे फल भोगेला, दूसर कुछ ना । विश्व-लेख में जे लेखा-जोखा लिखल जाला आदमी खाली ओकरे के भोगेला । जीवन में जइसन करम, वचन अउर विचार होला, प्रत्येक व्यक्ति ओही के अनुसार भला या बुरा गति प्राप्त करेला । ई नियम नित्य अउर अटल बा । एकरा में कउनों भेद-भाव नइखे अउर ई अविरामो बा । जेकरा के भावी कहल जाला उहो करम के ही परिणाम ह ।"

सभे शाक्य मुनि के ई स्पष्ट, खरा, करूणा भरल दयापूर्ण वाणी सुनल । ब्राह्मण लोग खून से रंगल हाथ ढँक लेलस । ऊ सब लोग सिद्धार्थ के छवि देखलें । ऊ सब से आगे नृपपाल सादरपूर्वक सहमल खड़ा रहलें । सब के ओर देखके शाक्य मुनि फिर से कहे लगलें, "बंधुवर ! ई धरती केतना सुन्दर होइत अगर सब जीव आपस के प्रेम में बँधल जीवन-यापन करतें ? जतन करके अगर मनुष्य एह प्रकार हत्या करके पशु पक्षी के ना खाइत त सब लोग के भोजन केतना रक्तहीन, निरामिष तथा सुखकारी होइत? अमृत तुल्य फल, कनक के समान अन्न तथा सलोना साग होइत तथा ई सब के हितार्थ धरती के कोना-कोना में उपजित ।" ई सारा बात सुन के सब लोग सहमल सिर नवा देलस । प्रभु के प्रेमपूर्ण उपदेश आ उपस्थिति से उहाँ सब पर दया-धरम के अइसन भाव छाइल कि

यज्ञ के पंडित यज्ञ-अग्नि जहाँ-तहाँ बिखेर देहलें अउर हाथ से तलवार दूर फेंक देलें ।

अगिला दिने राजा देश में ढिंढोरा पिटवा के घोषणा करवइलें अउर शिला पट्ल तथा खंभा पर खुदाई करवइलें, "महाराज आज एह प्रकार के नियम के घोषणा करावत बाड़ें-यज्ञन में बलि अउर भोजन खातिर अब तक विभिन्न अबल पशुअन के घर-घर वध होत रहल ह, बाकिर अब से केहू नर-नारी खून ना बहाई । सब के जीवन एक समान होला अउर एह जीवन के अइसने मानल जाव । दयावान के ही दया मिलेला, ई निश्चय जान ।" ओह दिन से गंगा तट पर अउर पूरा देश भर में जगह-जगह पर शुभ अउर सुन्दर शिलालेख लगावल गइल । जहाँ-जहाँ जाके शाक्य-मुनि दया के मंत्र सुनवलें पशु, पक्षी अउर लोगन के बीच पूरा प्रेम अउर सुख छा गइल । तथागत के सब जीवधारियन पर भारी दया रहे जे बेचारे सुख-दुख के एगो सूत्र से बँधल रहलें तथा मुक्ति खातिर संसार में नाना प्रकार के जतन करत-करत थक गइल रहलें ।

ब्राह्मण के शरीर-दान

जातक में एगो पुराना कथा लिखल बा । आपन एगो पिछला जनम में बुद्ध अति ज्ञानी ब्राह्मण रहलें जे 'दालिद्द' गाँव के ऊँचा शिला पर रहत रहलें । एक बार पूरा देश में भारी सूखा पड़ गइल । धान खेतन में जर गइल । घास, पात, तृण, लता सब जर के नष्ट हो गइल । सब तालाब, पोखरा जल-विहीन होके सूख गइल अउर जे पशु-पक्षी बचलो रहलें ऊ बड़ा ही विकल रहलें । उनकर अंग-अंग दुखी रहे ।

एक दिन बुद्ध एक सूखल नाला के किनारे से जात रहलें जब ऊ पत्थरन पर एगो भुखाइल बाघिन के पड़ल देखलें । ओकर नयन ज्योतिहीन होके धँस गइल रहे, मुँह खुलल रहे आउर ऊ

हाँफत रहे । ओकर जीभ निकलल रहे अउर ऊ तड़पत रहे । ओकर पूरा शरीर कमजोरी से काँपत रहे । ओकर चमड़ा पसली से चिपक गइल रहे जइसे बरसात से जर्जर होके छप्पर बाँस के बीच में धँस जाला । भूख से त्रस्त ओकर दूगो बच्चा थन के मुँह में लेहले खिंचत रहलें बाकिर ओसे दूध के एको बूंद ना निकलत रहे । अपना बच्चन के एह प्रकार छटपटात देखके माई सिर झुकवले उनका के स्नेह से अपना आगे सरका के आशा लगवले चाटत रहे । बच्चा के प्रेम के आगे आपनों भूख भुला गइल रहे । अब गर्जन कहाँ रहल? ममता के मारल बिलख उठल । ओकर ई दशा देखके बुद्ध अपना तन-मन के सुध भुला गइलें । अपना करूणा के सहज वृति वश चिंतन करे लगलें, "ए वन के हत्यारी के कइसे भला करीं? हमरा खाली एकेगो उपाय दिख रहल बा । दिन डूबल, मांस के बिना तीनों मर जइहें अउर इनकरा पर केहु दया करे, अइसन प्राणी कहाँ मिलिहें? जिनकरा रक्त के प्यास अउर भूख सतावेला उनकरा पर केहु के दया ना आवेला । इनकरा सामने अगर हम आपन शरीर डाल दीं त एह क्षण हमरा अतिरिक्त अउर केहु के हानि ना होई अउर अइसन कइला में हमरा कउनों क्षति नइखे दिखत । एह से हम एह जीउअन खातिर आपन प्रेम काहें ना निभाई? अइसन सोच के ऊ आपन दुपट्टा एक ओर रख देलें अउर पगड़ी भी उतार देलन अउर बाघिन के सामने बिना डरत खड़ा हो गइलें । बोल पड़ले, "माता ! ई मांस ले ल, हम तोहरा हित खातिर आइल बानीं ।" भूखाइल बाघिन उनकरा पर झपटल अउर तुरंते गिरा देहलस । कुटिल नाखून से तन के फाड़, मुँह लगवलस अउर रक्त में दाँत भिंगवले मांस के खूब आनंद ले खइलस । हिंसातृप्त ऊ पशु के सांस सिद्धार्थ के अंतिम प्रेममय सांस में खो गइल ।

एह प्रकार बुद्ध के हृदय हमेशा बड़ा ही उदार रहल । पशुबलि रोकवा के ऊ दया अउर धरम के प्रचार कइलें । राजा बिंबिसार राजकुमार सिद्धार्थ के वंश अउर उनकर अमित, अपार त्याग के जानके उनका से बारंबार विनती कइलें, "राज-परिवार में जनम

ले एतना कठिन नियम काहे निभाव तानी? राजदंड धारण करे वाला हाथ में भिक्षा के कटोरा शोभा नइखे देत । चलीं! रहीं हमरा पास, हमार कउनों संतान नइखे । जब तक जीवन बा रउरा प्रजा के सद्ज्ञान के सीख दीं अउरी हमरा सुन्दर राजमहल में आपन पत्नी संग निवास करीं ।" ई सुनके संकल्प में दृढ़ सिद्धार्थ उल्लास पूर्वक कहलें, "हे उदार नृपति ! ई सारा वस्तु हमरा भी सुलभ रहे बाकिर हम सत्य-पथ के खोज खातिर घर-द्वार छोड़ देले बानीं । सत्य के खोजतानीं अउर चित्त लगइले खोज कर रहल बानीं । केहू इन्द्र के पूरा राजपाट भी ला के दे दी तबो हम आपन खोज ना छोड़ब । एह रत्नमंडित द्वार पर हमरा लेवे अप्सरा भी अइहें तबो हम आपन संकल्प से ना टलब । धरम भवन के निर्माण खातिर अब हम गया के ओह घना जंगल के ओर जा रहल बानी जहाँ हमरा के बोध बुला रहल बा । ऋषियन के संग रहके हम सारा शास्त्र-पुराण पढ़ लेले बानी; नाना भाँति के तप कइले बानीं अउर क्लेश उठवले बानी, बाकिर अब तक हमरा सत्य के ज्योति ना मिल सकल । किन्तु हमार मन कह ता कि सत्य के ज्योति कहीं ना कहीं जरूर विद्यमान बा । अगर ऊ मिली त हम इहाँ लौट के आएब अउर हे नरेश! हम ऊ प्रेम के फल जरूर लाके देब ।"

न्यायप्रिय राजा बुद्ध के तीन बार प्रदक्षिणा कइलें अउर तथागत के चरणधूलि माथा पर लगा के उनकरा के विदा कइलें । राजा से विदा लेके शाक्य-मुनि उरूविला के दिशा में चल पड़ले । तपस्या से उनकर बदन पीला पड़ गइल रहे अउर शरीर मुरझा गइल रहे बाकिर अबतक के खोज से उनकरा संतोष ना मिलल रहे । उनकर प्रस्थान के बात सुनके पंचवर्गी भिक्षुगण तथागत के पास अइलें अउर उनका के बड़ा रोकेके चहलें बाकिर सिद्धार्थ समझे के तैयार ना भइलें । ऊ लोग शाक्य-मुनि के समझवला के कोशिश कइलें, "सारा बात त किताबन में लिखल बा । ऊ शास्त्रन के उठाके काहें नइख पढ़त? सुनऽ! केहू भी मुनि आज ले श्रुतिज्ञान से आगे नइखे बढ़ पाइल । हमार ज्ञानकांड महान ज्ञान देवेला, अउर क्षुद्र

मनुष्य ओसे बढ़के अउर का जान पाई? ब्रह्म निष्क्रिय अर्थात् क्रियाहीन बा तथा सर्वगत, सबका में विद्यमान, सच्चिदानन्द अपरिणामी अउर निर्विकार बा । वेद कहे लें कि राग त्याग के, करम के नाश करके, अंहकार से मुक्त होके जीव बंधन काट डाले ला अउर हमनीं का क्रम से ऊ निरोग प्रकाश परमब्रह्म में मिल जानीं । अगर तूं ब्रह्मविद्या पढ़ब त फिर तोहरा सारा बात मालूम हो जाई कि जीव सत्य के ओर कइसे चल जाला अउर कौना प्रकार विषय के द्वन्द्व छोड़के दोबारा चिर शांति पा लेवेला ।"

उनकर बात के शाक्य मुनि पर कौनो असर ना भइल अउर ऊ चुपचाप शीश नववलें उरूविला के ओर पाँव बढ़ावत चल देहलें, काहेकि उनकर कष्ट अबतक ना मिट सकल रहे ।

छठवाँ सर्ग
तपश्चर्या

यदि तू देखेके चाहऽ ताड़ कि अंततः बोधि-ज्योति कहाँ प्रकाशित भइल त 'सहस्त्र उद्यान' के जगह पर पहुँच के उत्तर-पच्छिम दिशा में तब तक चलत जा जब तक गंगा के घाटी में तोहार पैर ओ पहाड़ियन पर ना पड़े जहाँ से 'निरंजना' अउर 'मोहना' नदी के पातर धार निकलेला । ई दूनों नदी के अनुसरण करत घुमावदार रास्ता, चौड़ा पत्ता वाला महुआ के गाछ सब के नीचे अउर बेर आ झाड़ी के जंगल से होत तब तक चलत रह जब तक ई दूनो चमकत बहिन के सपाट जमीन पर फल्गु में मिलन ना हो जाए ।

गया अउर बराबर के पहाड़ी के शुभस्थल पर पहुँचला पर फल्गु नदी के किनारे एगो काँट से भरल खुलल धरती बा । इहाँ के बालू के पहाड़ अउर टीला के शोभा देखहीं लायक बा । एकरा दूसरा छोर पर पेड़न से झूमत वन देखाई पड़ेला जेकरा छाया में हरा-भरा घास देखाई देला । उहाँ नीला अउर सफेद कमल के फूल खिलेला आ कछुआ अउर तेजी से चले वाला मछरी रहेला । उनका संगे बगुला अउर सारसो के भीड़ रहेला । कुछे दूरी पर ताड़ के पेड़ का बीचे कुछ फूस से बनल छप्पर के घर देखाई देला, जहाँ 'सेनाग्राम' स्थित बा । उहाँ के किसान संतोष से जिनगी बितावे लन, मेहनत करेलन, फिरो थक-हार के सुख के नींदे सूत जा लन । ग्राम प्रमुख के नाम 'सेनानी' ह, अउर ओही के नाम से गाँव के नाम जानल जाला । ओह वन अउर गाँवन के बीच एकान्तवास में बुद्ध एक बार फिरू आदमी के कष्ट पर लगातार गंभीर चिंतन में लीन बाड़न । प्रारब्ध आ कर्म के अटपटा गति, आदमी के सब कष्ट, शास्त्रन में दिहल ज्ञान, वन में रहे वाला जीव-जन्तु से मिलल शिक्षा, अउर शून्य के रहस्य पर जेकरा से सब सृष्टि के रचना होला आउर ऊ शून्य जहाँ अन्ततः सबका के जाए के बा, ई सब विषयन पर ध्यान-चिंतन करऽ ताड़न । जिनगी के संघर्ष से होखे वाला परिणाम

आउर ओहसे बढ़ल कर्म के लड़ी, आगम-निगम के सब सिद्धान्त आ सब जीव के अपार पीड़ा पर ध्यान करत रहलें । दू अव्यक्त शून्यन के बीच जीवन ओइसहीं व्यक्त बा, जइसे आसमान में दू बादलन के बीच सतरंगी इन्द्रधनुष फइलल रहेला ।

लगातार कई महीना तक भिक्षु सिद्धार्थ जंगल में ध्यान में बइठल रहलन । चिंतन के प्रक्रिया सूर्योदय आ दूपहर से भी आगे चल जाय । भोजन कइल भुला जास आ उनकर भिक्षापात्र खाली रह जाए । उनकरा मजबूरन बंदर आ चिरई चुरुंग के पेड़ के डार से गिरावल फल खा के रहे के पड़े । एह वजह से ऊ दिनोदिन कमजोर होत गइलन । उनकर ललाई जात रहल । उनकर शरीर आत्मा के बोझ से जर्जर होके ओह बत्तीस चिन्ह्न के खोये लागल जवन बुद्ध के अस्तित्व के प्रमाणित करित । ऊ वसंत ऋतु के मनोरम शोभा से अनजान रहलें । जे तरह ऋतुराज वसंत के लहलहापन से सूखा पत्ता कोसन दूर रहेला ओही तरह से तप में चूर बुद्ध अपना पिछला रूप से भिन्न हो गइलन जब ऊ राज में युवावस्था के खिलल युवराज रहलन । एक दिन घोर तप से मूर्छा खा के अचानके मुर्दा जइसन समूचे चेतना छूट गइल आ ऊ धरती पर गिर पड़लन । लागल जइसे ना साँस रहे अउर ना खून के प्रवाह । देह पीअर पड़ गइल अउर ऊ निश्चल हो गइलन । ओही समय ओ रास्ता से एगो गड़रिया निकलल अउर उहाँ ऊ सिद्धार्थ के विकल-बेहाल देखलस । दूनु आँख मुंदाइल रहे, ओठ पर तेज पीड़ा देखात रहल अउर दूपहरी के तपत घाम कपार पर पड़त रहे । ई देख ऊ जामुन के हरियर डाढ़ ले आइल अउर मुँह पर ओकरा से छाया बनवलस । दूरे से मुँह में तुरन्ते गरम दूध डललस काहेंकि ऊ एगो अछूत रहल, ए से बुद्ध के माथा छुअला के साहस कइसे करित? नया जिनगी पाके जामुन के डार तुरंते पनप गइल अउर कोमल फूल तथा फल के गुच्छा उग आइल । उ फूल अउर फल एक दूसरा से नजदीक आके जुड़ गइल । पूरा पौधशाला एक तरह से बनल विशाल शिविर के तरह लागे लागल जेमे कई प्रकार के

रंग-बिरंगा झालर सजल रहे जौन सोना अउर चाँदी के सुन्दर नक्कासी जइसन लागत रहे । बालक उनकरा के देवता मान के उनकर सेवासुश्रुषा आ आराधना कइलस । शक्ति पाके सिद्धार्थ स्वस्थ हो उठलन अउर चरवाहा से लोटा के दूध मंगलन, "लोटा भरल दूध दे द भाई !" "गुरूवर ! हम रउरा के कइसे दे सकत बानी ?" ऊ लड़िका कहलस, "रउरा खुदे देख सकतानी कि हम एगो अधर्मी शूद्र हईं, अपने के ऊँचा कुल के बानीं अउर हमार स्पर्श वर्जित बा ।" तब सारा संसार में आदरणीय कहलन, "कइसन बात करऽ तारऽ भाई? याचना अउर दया के नाता से सब जीव एक समान भाई-भाई बाड़न । दया अउर करूणा सबका के एके स्तर पर ले आवेला आउर खून में कउनो रंग-भेद ना होला । सबका लहू के रंग एके होला, लोर के कउनों जात ना होला । सभे के गिरत लोर के स्वाद नमकीन होला । कौनो आदमी जनम के समय आपन लिलार पर तिलक लगवले ना आवेला अउर नाहीं गरदन में पवित्र जनेव का साथे जनम लेला । जे सदकरम करी ऊ एह संसार में संत बा, जे बुरा करम करेला उहे अधर्मी ह, एकरा में कउनो संदेह नइखे हमरा पिए खातिर दूध दे द, हमार भाई ! अपना मन से ई विचार-भेद छोड़ के दूध दे द, जब हम आपन खोज प्राप्त कर लेब अउर सफल हो जाएब त ओहसे तोहरो कल्याण होई ।" सिद्धार्थ के अइसन मीठ बोल सुनके ओह चरवाहा के ह्रदय प्रसन्न हो गइल अउर ऊ लोटा भर दूध दे देहलस अउर खुद के कृत-कृत माने लागल ।

तपश्चर्या - त्याग

गाछ के नीचे सिद्धार्थ ध्यान में बइठल रहलन । ओने से नूपुर बजावत इन्द्र-मंदिर के देवदासी लोग गुजरली । मुदित मन के साथ उनकर समूह, बनावटी ढंग से नाचत ओ रस्ता से आगे चल गइल । उनकरा साथे कई एक संगीतज्ञ साथियो रहलें जे गला में ढोल डलले रहलें । ओह ढोलन में मोर पंख लागल रहल । एक बाँसुरी पर सुरीली तान भरत रहली अउर एगो दूसर के हाथ में तीन

तार वाला बीन रहल । ऊ सभे आपन साज-बाज लिहले कौनों उत्सव में जात रहली । ऊ सब अटपटा ढंग से बातचीत करत, रस्ता में ठुमकत जात रहली । उनकरा गोर-गोर पाँवन से पायल अउर घुँघरू के धीरे-धीरे रसभरल झंकार निकलत रहल । हाथ के कंगन अउर कमर के कमरधनियो बेर-बेर एके साथे खनकत रहे । एगो के हाथ में सितार रहल जेकर तार पर अंगुरी बार-बार चलत रहल । ऊ तार पर अलबेला मीठ तान छेड़ली अउर आपन गति के अनुसार ई गा उठली, "सितार अउर बीन के तार तूँ ठीक रखऽ । ना त ऊँचा रखऽ अउर ना नीचा जेसे रंग ठीक से जम सके अउर हम गाके अउर लोग के रिझा के समूचे संसार के वश में कर लीं । अगर तार के बहुत कस दिहल जाव त तार टूट जाला । ढीला तार गूँगा होला अउर संगीत मर जाला । सितार के सुर ना त नीचे करऽ, ना ऊँचे ।" एह तरह से ऊ नर्तकी सब बाँसुरी अउर तार पर गावत कउनों रंगीन घमंडी तितली के जइसन फड़फड़ात जंगल के खुलल रास्ता पर जात रहलीं । ऊ सुन्दरी सपनों में ना सोचले रहलीं कि उनकर एह तुच्छ शब्द के प्रतिध्वनि धर्मात्मा के कानन पर पड़ रहल बा जे रास्ता के बगल में अंजीर के वृक्ष के नीचे ध्यान में लीन बा । सिद्धार्थ आँख खोलके देखलन; फेर आपन विशाल भौं के ऊपर उठा के कहलन, "मूरख भी बहुत बार विद्वान के शिक्षा दे जा लन । हम जीवन के एह सूक्ष्म तार के साधत ओह संगीत के उत्पत्ति खातिर बहुत ज्यादे कस रहल बानीं, जौन हमार अउर जगत के रक्षा करी । अब जब सत्य लउके वाला बा तब हमार आँख धुँधला हो गइल बा, हमार शक्ति क्षीण हो गइल बा, जबकि अब हमरा शक्ति के ढ़ेर जरूरत बा । मनुष्य के रूप में जौन साधन हमरा मिलल बा उहो गँवावऽ तानी । एह तरे त हम मर जाइब अउर कुछों ना कर पाइब । हमार ई जिनगी, जौन मानव जाति खातिर आशा के एगो किरिन बा उहो व्यर्थ चल जाई ।" ऊ गीत सिद्धार्थ के भीतरी आँख खोल देलस । उनकरा पूर्णतः स्पष्ट हो गइल कि शरीर के गला के सत्य के दरसन ना हो पाई । बलुक अइसन कइला से सत्य के दरसन के बचल-खुचल आस भी खतम हो जाई ।

सुजाता

सिद्धार्थ के ध्यानस्थल के पास नदी के किनारे एगो गृहस्थ रहलन । धैर्यवान, सुकर्म करे वाला, न्यायप्रिय नायक, पवित्र अउर धनवान, कई पशुअन के झुंड के स्वामी, एगो सदपुरूष, अच्छा व्यक्ति, आस-पास के गरीबन के मित्र! उनकर गाँव के नाम 'सेन' या 'सेनानी' रहल । लोग उनकरा के 'सेनानी' कहके पुकारे काहेकि ऊ 'ग्रामश्रेष्ठी' रहलन । ऊ खुशी-खुशी, शांतिमय ढंग से जीयत रहलन । उनकर पत्नी सुजाता, उच्च विचार वाली, रूपवती, गुणवती, सती, भोली, सुकुमारी तथा गौरवमयी मन वाला रहली । सभे पर दया देखावस अउर अपना मीठ बोलचाल से प्रेम बढावस । सुजाता धरती के सर्वसुन्दरी, काली-कजरारी आँख वाली, विनीत, सत्यवादिनी, सरल तथा दयालु स्त्रियन में रतन, शीलवान जे जन-जन के मन मोह लेस, बहुते सुन्दर रंग-रूप वाली गृहणी रहली । सभे के साथ मीठ बोले वाली, प्रसन्नचित आभा वाली, स्मिता के मोती-अपना घर गृहस्थी में अपना पति के साथ ओह छोट गाँव के घर में सुखसे दिन बितावत रहली । लेकिन उनकरा खाली एके गो दुःख रहल, कौनों संतान ना रहे अउर ओह दुःख से हमेशा दुखी रहत रहली । ए खातिर ऊ रोज लक्ष्मी के पूजा करस अउर रोज सूरज देवता के मन्दिर जाइल करस । बार-बार प्रदक्षिणा करके विनती करस अउर धूप, गंध अउर फूल अर्पित कर नैवेद्य चढ़ावस । संतान प्राप्ति खातिर ऊ अनेक मन्नत मांगत, देवता से प्रार्थना कइली । कई पूर्णिमा के रात में विशाल शिव लिंग के प्रार्थना कइली । एक्यासी बेर चाउर अउर चमेली के फूलमाला के साथ चंदन के तेल के चढ़ावा अउर दोसर-दोसर चढ़ावा का साथ पुत्र प्राप्ति के प्रार्थना कइली । फिर ऊ प्रण लिहली कि अगर उनकरा पुत्र रतन के प्राप्ति होई त ऊ सोना के बरतन में पेड़ का नीचे, वन देवता के भरपूर मात्रा में स्वादिष्ट खीर के भेंट चढ़इहें । उनकर मनोकामना पूरा भइल । ऊ एगो सुन्दर लड़िका के जनम दिहली । अब ऊ लरिका तीन महीना के हो

गइल अउर सुजाता के छाती से चिपकल रहलस । भक्ति से भरल, सब सामान सजा के ऊ धीमा चाल से कृतज्ञता पूर्वक कदम रखत निर्जन वन के ओर गइली, जहाँ वन-देवता विराजत रहलन । एक हाथ में खूब लाल रंग के साड़ी के अँचरा में आपन दुलरूआ, सुन्दर बेटा के लपेट के पकड़ले रहली अउर दोसरा हाथ में सोना के कटोरा अउर सोना के थाली पकड़ले माथा पर रखले रहली । थाली में देवता के चढ़ावा खातिर स्वादिष्ट खीर रखल रहल । वन देवता के पधरला से पहिले सुजाता आपन दासी राधा के जमीन साफ, झाड़-बुहार अउर लीप-पोत के ओह जगह के निरमल बनावे खातिर अउर पेड़ के चारों ओर लाल रंग के धागा बाँधे खातिर भेजली । ऊ जब देवता के स्थान पर भिक्षु सिद्धार्थ के पेड़ के नीचे विराजल देखलस त उत्सुकता से भरल, दउड़त, चिल्लात आइल अउर सुजाता से बोललस, "ए मलकिनी ! देखीं ! साक्षात वन देवता अपना स्थान पर आसन में ध्यानमग्न बाड़न । उनकरा आँखिन में दिव्य ज्योति आ चेहरा पर एगो अलौकिक तेज बा । ऊ भव्य भाव से सुशोभित अउर सौम्यता तथा शुचिता के मनोहर मूर्ति बाड़न । देखीं, कइसे उनकरा भौं पर तेज चमकत बा ! नैसर्गिक नेत्र के साथ ऊ केतना कोमल आउर महान लागऽतारन ! अहोभाग्य ह अइसन देवता से मिलल । ए मलकिनी ! कलजुगो में ई सच्चाई परगट बा, नाहीं त बहुत भाग्यवाने के ई दरशन होला ।" सुजाता सिद्धार्थ के ईश्वरीय शक्ति के प्रतिरूप वन देवता मान के, डेरात-काँपत उनकरा नजदीक गइली । ऊ धरती के चूम के सरधा से प्रणाम करके कहली, "हे वन के रक्षक देव! हे अमित शुभ फल दाता ! जइसे दर्शन दे के रउरा एह दासी पर कृपा कइनीं ओही तरह से पत्र-पुष्प ग्रहण करके हमरा के कृतार्थ करीं । अपने के खातिर बहुत जतन से खीर बनइनीं अउर ई कपूर जइसन उजर खीर रउरा खातिर ले आइल बानीं । अपने के जे परम पवित्र बानीं, एह उद्यान में विराजल सभे के भला करऽ तानीं, अपना एह दासी पर भी दयावान होईं । आपन उपस्थिति से रउरा हमरा के निर्भीक कइले बानीं ।" अइसन कहके बरतन में खीर अउर ऊपर से दूध डाल के ऊ सोना के कटोरा

सिद्धार्थ के ओर बढ़ा दिहली । फिरो चंदन-गंध चढ़ा के फूल माला पहिना के सिद्धार्थ के हाथ पर स्फटिक बोतल से अतर डलली, ऊ जौन कि गुलाब के फूल से निकालल गइल रहे । सिद्धार्थ बिना कुछ बोलले ओह पवित्र खीर के ग्रहण कइलें । प्रसन्न माता श्रद्ध भाव से बगल में शीश नवइले खड़ा रहली । ओह खीर में एतना आश्चर्यजनक पवित्रता रहल कि शाक्य मुनि अपार नूतन शक्ति महसूस कइलन, उनकर शक्ति लौट आइल अउर खीर खा के ऊ प्रसन्न हो गइलन । देह में फिर पूरा बल वापस आ गइल । मानों जीवन लौट आइल होखे । जगावे वाला रात अउर उपवास के दिन एह तरह से बीत गइल जइसे कि कवनों सपना रहल, माना कि आत्मा भी शरीर के साथ ऊ भोजन स्वीकारलस; जइसे पक्षी के नया पांख लाग गइल होखे । उनकर स्थिति एगो प्रसन्न पक्षी के तरह हो गइल, जेके रेगिस्तान में झरना देखाई पड़ जाला, अथाह रेत के ऊपर ना समाप्त होखे वाला उड़ान से थकल रेगिस्तान में गरदन से सिर तक बालू से नहात पक्षी अचानक झरना तक पहुँच गइल होखे । एह तरह से सुजाता राजकुमार सिद्धार्थ के पूजा कइली । जब शरीर में बल आइल तब चित्त भी फड़के लागल अउर ऊ धीरे-धीरे गूढ़ विषय-मंथन के ओर सरके लागल । जइसे-जइसे तथागत के मनोहर कांति बढ़ल, वइसे-वइसे सुजाता खड़ा-खड़ा दुगूना, तिगुना प्रार्थना करे लगली । उनकर चेहरा देदीप्यमान होत अउर चेहरा पर आभा के विकसित होत देख के सुजाता सिद्धार्थ से पूछली, "का रउरा सचमुच देवता हईं? का हमार भेंट स्वीकार हो गइल?" तब सिद्धार्थ पूछलन, "ई का ह जेकरा के तूं हमरा खातिर ले आइल बाडू?" "पवित्र आत्मा !" सुजाता सिर झुकवले उत्तर दिहली, "आपन गाय के झुंड से सौ नया बछड़ा जनल माता के दूध लेहनीं, ओ दूध के पचास सफेद गायन के पिलवनीं, उनकरा दूध के पचीस के अउर उनकर दूध के फिरू अन्य बारह के; आखिर में ऊ दूध छः सर्वश्रेष्ठ गायन के पिलवनी । ई सर्वश्रेष्ठ गायन के दूध में केसर, चंदन, मेवा, तथा सर्वश्रेष्ठ मसाला डाल के ओकरा में चुनल बीज के बढ़िया चाउर डाल के पकवनी । ई बासमती चाउर बहुत सुन्दर ढंग से नया

सुन्दर खेत में उगावल गइल रहल; चाउर के हर दाना मोती जइसन रहे । सच्चा अउर पवित्र हृदय से हम ई खीर बनइनीं, काहेकि हम रउरा पेड़ के नीचे प्रण लिहले रहनीं कि अगर हमरा पुत्र रतन के प्राप्ति होई त हम वृक्ष देवता के प्रसन्नता खातिर खीर भेंट चढ़ाएब । अब हमरा एगो छोट लड़िका बाड़न अउर हमार जीवन सुख से भर गइल बा ।" कोमलतापूर्वक सुजाता आपन लाल रंग के साड़ी के किनारा नीचे खिचली अउर आपन बेटा के सिद्धार्थ के सामने धरती पर रख दिहली । भुवन-उद्धारक ओह छोट लड़िका के सिर पर ऊ हाथ रखलन जौन हमेशा संसार के मदद करेला अउर कहलन, "तोहार परम आनन्द चिरस्थयी हो ! तोहार सुख रोज लगातार बढ़त रहे ! हमार आशीर्वाद बा कि एह जीवन में खाली हल्का-सा भार इए लड़िका पर पड़े । हम देवता ना हईं बाकिर तूँ हमार सेवा कइले बाड़ू, हमहूँ तोहार एगो अउर भाई बानीं जइसे तोहार दूसर भाई बाड़न जे अब तक त एगो राजकुमार रहलन लेकिन अब एगो घुमक्कड़ संन्यासी बाड़न जे दिन-रात ओह प्रकाश के खोज में लागल बाड़े जे सब मनुष्यन के जीवन में नया जागृति लइहें अउर उनका जिनगी के प्रकाश से भर दिहन । हमरा लागता कि निश्चये ऊ ज्योति कहीं जलेला जेके अगर हम देख लीं त संसार के अंधकार मिट जाई । हमरा अइसन आभास हो रहल बा कि अब हमरा ऊ ज्योति प्राप्त होई । हम ऊ प्रकाश के खोज लेब । जब हमार कमजोर शरीर हार गइल तब तोहार पवित्र संजीवनी जइसन खीर एकरा नया शक्ति देके स्वस्थ कर देहलस ।"

"जीवन के क्रम अनेक योनियन में ऊपर-नीचे होत चलेला अउर अनेक जनम के बितला के बाद तब कहीं जाके जीव के उच्च गति प्राप्त होला । बहिन! तुं हमरा गिरत-परत तन-मन के सहजलू ह । तोहरा साधुवाद बा, लेकिन तोहरा सचमुच खाली जीवन जियला में सुख मिलेला? का गृह सुख मे निमग्न रहके तू संतोषपूर्वक रहेलू? का मन में अउर कौनों ऊँच चाह नइखे उठत?" सुजाता उत्तर दिहली, "पूजनीय! हे महात्मन, सुनीं! ई नारी के हृदय छोट बा

अउर बारिश के कम मात्रा, जौन मुश्किल से खेत के गीला कर सकेला, ई कुमुदिनी फूल के पात्र भर देला अउर ऊ कुमुदिनी लहलहा उठेली, इहे हमरा खातिर पर्याप्त होई । हम चाह तानीं कि सूरज देवता के कृपा अउर उनकर आभा हमरा परिवार पर हमेशा बनल रहे अउर हमार पति आ कमल समान बेटा के मुँह पर हमेशा मुस्कान बनल रहे । हे नाथ! हमरा जिनगी के ई मधुकाल ह । हमरा के हमार घर-बार के जंजाल मगन राखेला । हम आपन पति के खुशी अउर बच्चा के मुस्कान में जीवन के सूरज के चमक पावेनीं । आपन घर के प्रेमाश्रय बनाके घर-गृहस्थी के काम में हमार दिन खुशीपूर्वक बीत जाला । सूर्योदय के समय हम उठेनी, देवता अउर सूरज देवता के वंदना करेनीं, नहा-धो के पूजा करेनी अउर फिरो कुछ अन्न दान करेनीं । दुपहर में जब हमार स्वामी घर लौटके भोजन के बाद विश्राम खातिर पैर पसार के, सिर के हमार गोदी में रखके विश्राम करेलन तब हम मीठा संगीत गाके उनकर मुख निहारत पंखा हाँक के उनकरा के सुतावेनीं अउर अइसहीं शांत संध्या बेला में रात के भोजन के समय जब ऊ घर में भोजन करे बइठे लन तब हम उनकरा नाना प्रकार के व्यंजन परोसेनीं अउर उनकरा बगल में खड़ा होके उनका के भोजन करावेनीं अउर एसे हमरा अनंत सुख के अनुभूति होला । प्रसंग देख के कुछ रसपूर्ण बात करेनी अउर फिरो शिशु के गोद में ले सुख के नींद सुत जानी । अब हमरा खातिर संसार में कौन सुख प्राप्त कइल शेष रहल बा? हमरा घर में ईश्वर के कृपा से कौनो चीज के कमी नइखे । आपन पति के बेटा देके हमार जीवन सार्थक हो गइल, जेकरा हाथ से पिंडदान पाके ऊ सुरधाम के सुख भोगिहन । धरमशास्त्र अउर पुराण कहेलन कि जे दूसरा के दुःख हरी भा जे सड़क पर पथिक के छाया खातिर वृक्ष लगाई, कुँआ-तालाब खुदवाई भा आपन कुल वंश के चलावे खातिर बेटा जनमी, अइसन व्यक्ति सुगति पाके उत्तम लोक में जाला, एमें कउनों संशय नइखे । जौन ग्रंथन में लिखल बा हम ओकरा मान के चलेनी बाकिर-बाकिर का मुनि से बढ़ के बात हम समझ सकेनीं? ऊ मुनि लोग के सम्मुख साक्षात देवता गण अइलन

। उहे लोग इहाँ मंत्र, शास्त्र तथा पुराण बनइलन । ऊ धरम के तत्व पूरा तरह से जानत रहलन अउर ऊ लोग सब प्रकार के विषय-विकार छोड़ शांति के मार्ग खोज निकललन । ई बात हम अच्छा तरह जान तानी कि सब काल में अउर सब स्थान पर भला के फल भला अउर बुरा के बुरा होला; एकरा अलावे अउर कुछ ना होला । मीठा बीज बोके हमनीं का मीठा फल पावेनीं अउर बिषैला बीज के फल हमेशा कटु होला । इहें सामने ही लउकतबा कि जौन प्रकार द्वेष से बैर उपजेला ओही प्रकार शील से मृदुता के जनम होला । जब हम ई तन छोड़ के ई जगत से चल जाएब तब पता ना का-का होई? लेकिन जेकरा ई लोक में भला मिलेला ओकरा परलोक में भी भला ही मिले के चाहीं । खेत में उहे उपजेला जौन बोवल जाला । धान के एगो कण हजार कण में बदल जाला । संपूर्ण चंपा के फूल के सुनहरा रंग अउर ओकर विस्तार एगो बिंदी भर कली में पूरा तरह छिपल रहेला । इहाँ धरती पर जब कौनो आपदा केहू पर आवेला त धीरज टूट जाला, जइसे अगर कहीं हमार ई प्राण से प्यारा लाल मर जाए त हमार हृदय तुरंत टूट जाई । हमार हृदय के निश्चय ही दू टुकड़ा हो जाई अउर अपना शिशु के गोद में रख के हम परलोक चल जाएब । उहाँ जाके आपन पति के तब तक बाट जोहब जब तक उनकर अंतिम घड़ी ना आ जाई । लेकिन अगर हमरा सामने हमार पति के स्वर्गवास हो गइल त फिर उनकर सिर आपन गोद में रख हमहूँ चिता पर चढ़ जाएब । जब चारों ओर अग्नि के ज्वाला दहकी अउर कुंडली मारत धुआँ चारों ओर छा जाइ तब हम अपना अंगे-अंग फूला ना समाएब । पुरान अउर शास्त्र में ई बात लिखल बा कि अपना पति के साथ जौन स्त्री मृत्यु के वरण करेली उनकरा ऊ पुण्य प्रताप से उनकर पति के स्वर्ग के सुख प्राप्त होला । उनकरा साथ उहो विविध प्रकार के सुख प्राप्त करेली। केतना वर्ष तक? पत्नी के सिर में जेतना बाल होला ओतना करोड़ वर्ष तक ऊ सुखभोग करेली । एह खातिर हमरा हृदय में चिंता के कौनों बात ना रहेला अउर हमार जीवन आनंद से बीत जा रहल बा । बाकिर हम सुख में खोके ऊ दीन-दुखी के ना भुलाएनी

जे अपार कष्ट झेल रहल बाड़े । परमात्मा से प्रार्थना करेनीं कि ऊ उनकरा पर भी दया करस । हमरा से जेतना बन पड़ेला ओतना हम आपन बुद्धि से सभे के भला करेनीं । एह तरह के विश्वास रख के हम धरम के मार्ग पर चल तानी कि एसे सभ के भला होई, हानि त कतई ना होई । रात के अइला पर विश्राम करे खातिर जब तारा आपन चाँदी के दिया जरावेला त मंदिर में स्तुति अउर आपन मित्र-मंडली से गप-शप कइला के बाद हम सुते चल जानी । एतना कृपा पइला पर भी हम खुश कइसे ना होई? जौन पुस्तक कहे ला ओकरा के हम नम्र भाव से स्वीकार करेनीं । प्राचीन समय के मनीषी के तुलना में हम ज्ञानी नइखी जेकरा स्तुति गान, मंत्र अउर सारा धरम के मार्ग तथा शांति के ज्ञान रहल । हम इहो समझतानी कि अच्छाई से सुख जरूर आई अउर बुराई से दुःख । स्वस्थ बीज से मीठा फल उगेला अउर जहरीला फूल से कडुआ चीज ।" ई सब सुनके भिक्खु सिद्धार्थ कहलन, "तू उनकरा के शिक्षा देत बाडू जे दूसरा के शिक्षा देलें, ज्ञान से भी अधिक ज्ञान के बात आपन सरल जनश्रुति के भाषा में कह रहल बाडू । तू अपना भोलापन में ही महत ज्ञान के बात बता देहलू । अरे भोली बहिन ! तू अत्यन्त भोली बाडू ! तू आपन धरम जानत बाडू अउर दूसर कुछ ना जानत बाडू अउर ना कहेलू । तूँ आपन जीवन में मगन रहेलू । तोहरे से मानव मात्र के आशा के किरण लउकत बा । तू जीवन के सत्य के सही ढंग से समझत बाडू । एसे तू जबो चाह, थोड़ा मेहनत से जीवन-मरण के चक्कर से मुक्त हो सकेलू काहेकि तू निरासक्त भाव से आपन कर्त्तव्य के वहन करत सदजीवन जीयऽ तारू अउर जब तक चाहऽ ई संसार चक्र के खेल में भाग ले सकेलू ।" सुजाता के आँख अपना बालक पर झुकल रहे । बालक आपन मुलायम अंगुली सिद्धार्थ के ओर उठइलस काहे कि बच्चा लोग वयस्क से अधिक जानेला अउर समझेला । उहो जगदाराध्य बुद्ध के पहचान लेले रहल अउर श्रद्धा से ऊ उनकरा ओर अंगुली बढ़ा देलस ।

बोधिवृक्ष

सिद्धार्थ श्रद्धाभाव से आसन से उठलन । ओह पवित्र खीर से उनकर शरीर बलवान बन गइल । ऊ आपन डेग ओनिये बढ़इलन जहाँ एगो विशाल वृक्ष उगल रहे, बोधिवृक्ष ! आवे वाला वर्ष में कबो भी नष्ट ना होवे वाला अउर श्रद्धांजलि ला हमेशा जीवित रखल जाये वाला । ओकरे नीचे भविष्यवाणी कइल गइल रहे कि बुद्ध के सत्य के दरशन होई । हमार राजकुमार ई जान गइल रहलन, एह खातिर ऊ नपल-तुलल, अटल, गौरवशाली डेग से बोधि-वृक्ष के ओर अग्रसर भइलन ।

अरे! संसार वाले तू आनंद मनाव! हमार महात्मा वृक्ष के नीचे पधार गइलन । जइसे ऊ खंभा के तरह वृक्ष से ढकल मार्ग से हो लटकल तना के बगल से ई वृक्ष के छाया में पहुँचलन, जागृत धरती घास हिला के आराधना अउर अभिनन्दन करे लगली । तत्काल धरती से उनकर कदम के पास सुगन्ध मिलल ठंडी हवा बह चलल । देवतागण ओकरा के बड़ा आनंद से सूँघले । जंगली जानवर, चीता, सुअर अउर हिरण के बड़ा-बड़ा आश्चर्यजनक आँख उनकरा के निहारत रहे । झाड़ी अउर गुफा से सब जानवर उनकर कृपालु चेहरा के शांतिपूर्वक देखत रहलें । दू पथर के बीच ठंडी जगह से चितकबरा भयंकर साँप बाहर निकल आपन फन से छतरी बना गुरूदेव के सम्मान में नाचे लागल । नीला, हरा अउर स्वर्णिम चमकीला तितली आपन पंख फड़फड़ावत सिद्धार्थ के चारो ओर उड़त रहे । क्रूर चील सीटी बजा आपन शिकार छोड़ देहलस । धारीदार ताड़ के वृक्ष पर गिलहरी एक डार से दूसर डार ई देखे खातिर फुदकत रहल कि का हो रहल बा । बया पक्षी आपन झूलत घोंसला से चहचहाये लागल । छिपकली अति आनंदित हो इहाँ-उहाँ दौड़े लागल । कोयल आपन मधुर तान छेड़ देहलस अउर सुरीला गीत गावे लागल । पंडुक चारों ओर उड़े लागल । इहाँ तक कि रेंगे वाला प्राणी भी सजग अउर प्रसन्न रहलें । धरती अउर हवा मिल के सुस्वर आवाज से एगो गीत

गइलन, जेकरा के जौनो कान सुनल ओकरा के ऊ छू गइल, “स्वामी अउर मित्र! प्रेमी अउर मुक्तिदाता ! रउआ क्रोध, अहंकार, इच्छा, भय अउर शंका के अपना वश में कइले बानीं । रउरा सब के कल्याण खातिर सब प्रियजनन के अउर आपन सर्वस्व छोड़ दिहले बानी । रउरा वृक्ष के नीचे पधारीं । उदास धरती अपने के आशीर्वाद देत बाड़ी कि रउआ, जे बुद्ध बानी ज्ञान के प्राप्त करीं अउर समस्त सृष्टि के कष्ट के शांत करीं । चलीं, राउर जय होखे! सम्माननीय ! हमरा खातिर आपन ई अंतिम जीवन चक्र के आखिरी जीवन के श्रम करीं । राजा अउर महान विजेता ! अपने के समय आ गइल बा । ईहे उ रात ह जेकर सदियन से प्रतीक्षा रहल । सारी सृष्टि एह पल के युगों-युग से प्रतीक्षा कर रहल बा।”

जब मार-विजयी तथागत गाछ के नीचे बैठ्लन तब तक रात हो आइल । लेकिन अंधेरा के राजकुमार, मार, जानत रहे कि ई बुद्ध हउवन जे ज्ञान प्राप्त कर सब के उद्धार कर दीहें। समय आ गइल बा जब ऊ सत्य के खोज करिहन अउर संसार के रक्षा करिहन । ऊ ना चाहत रहे कि सिद्धार्थ के सत्य के दर्शन हो सके । एह से ऊ आपन समूचा आसुरी शक्ति के आदेश दिहलस अउर ऊ सब प्रकट होके सक्रिय हो गइल । हर गहिरा खाई से पिशाच, दुष्ट आत्मा जे ज्ञान अउर प्रकाश से युद्ध करेला, आरती, तृष्णा, राग अउर ओकर जन समूह तुरंत उपस्थित हो गइल अउर मार के आदेश के इंतजार करे लागल । प्रेम, रति, घृणा, अज्ञान अउर लालसा के अंधकार अउर भय सब बुद्ध से घृणा करत चेष्टा करे लगलन कि के प्रकार उनकर मन के विचलित कर देवे । केहू नइखे जानत, इहाँ तक कि सर्वश्रेष्ठ विद्धान भी नइखन जानत कि के प्रकार ऊ रात नरक के राक्षस, प्रेत सारा रात संघर्ष कइलें कि सत्य के बुद्ध से दूर रखल जा सके, कबो आँधी-तूफान अउर कड़कत, चमकत, भयानक बिजली के भय से त कबो राक्षसी सेना के बारूदी आँधी से सारा आसमान में छाके, गर्जन से आँख के अंधा कर देवे वाला रोशनी फेंक के, नोकदार, बरछी सा बैगनी रंग के आकाश फाड़ के अउर

फिर कबो ओह शब्द द्वारा धोखा देके जे सुमधुर लागे । यूँ कहल जाव कि कामदेव कौनो जतन ना छोड़लस कि सिद्धार्थ के उनकर दृढ़ निश्चय से भटकावल जा सके अउर कौनो प्रकार उनका सत्य के दर्शन ना हो सके । जड़ी-बूटी वाला गाछ के शांत पत्ता अउर मीठा-मीठा हवा द्वारा जादू-टोना कइलस । सुन्दरी के रूप द्वारा कामुक भावना अउर प्रेम जगावे के अथक प्रयत्न कइलस, कबो-कबो राजकीय प्रलोभन देके, राज्य पर शासन करे के उपहार प्रस्तुत कर, कबो शंका संशय उठा, सत्य के व्यर्थ बताके । ई सब कुछ भइल, पर का ई सचमुच में घटल? का ई सब के दिखल या ई बुद्ध के मन में ही घटित भइल? "एह विषय में हमरा कुछ मालूम नइखे । रउरा खुद निर्णय करीं - हम उहे लिखत बानी जे प्राचीन समय के ग्रथंन में लिखल बा ।" @ आपन सब कोशिश में हार गइला पर कामदेव दस प्रमुख पाप के बोलइलस जेकरा से मार आपन शक्ति ग्रहण करेला । बुराई के ऊ सब दूत बारी-बारी से अइलन । सबसे पहिले अहम् के पाप, जेसे सृष्टि में सिर्फ आपन चेहरा सुन्दर दिखेला, आइल। बुद्ध अहम् के विजयी ना होवे देलन काहे कि अगर ऊ जीत जाइत त सारा के सारा सृष्टि नष्ट हो जाइत । ऊ प्रकट हो बुद्ध के समझावे के भाव से कहलस, "रउरा बुद्धत्व के प्राप्त कर आनन्द करीं । जे भी भटकता ओके भटके दीं । खुद आजाद हो गइनीं एतना काफी बा । अपना में सीमित रहीं अउर उठ के देवता से जा मिलीं जे अउर लोग के तनिकों चिंता ना करेलन अउर जे निर्द्वन्द्व अउर अमर बाड़न । दूसरा के प्रकाशहीन अंधेरा में भटके अउर टटोले दीं । एतना काफी बा कि रउरा स्थिर, स्थित बुद्ध हो गइल बानीं । उठीं अउर देवता के साथ आनन्द ले लीं जे ना बोलेलें, सुनेलें अउर ना कुछ करे लें ।" लेकिन बुद्ध फटकारत कहलन, "तोहर धरम अधरम पर आधारित बा । तोहर सलाह न्याय के खिलाफ एगो शाप बा । कपटी ! जे खाली खुद से प्रेम करेला ऊ स्वार्थ खातिर कहीं अउर कबो भी बिक जाला ।" फिर विचिकित्सा

@ मूल लेखक सर एडविन आर्नाल्ड

आइल जे केहु से कबो हार ना मानेली । ऊ तथागत के कान में संदेह पैदा करे के भाव से कहलस, "सब चीज बेमतलब के दिखावा ह अउर ओकर ज्ञान के वृथा प्रयतन कइल व्यर्थ बा । रउरा आपन छाया पकड़े खातिर ओकर पीछा कर तानी । उठीं अउर चल आईं । ई "सत्य" आदि के विषय में सोचल माया के अतिरिक्त अउर कुछ नइखे । जौन मार्ग पर रउरा जा रहल बानी ओह मार्ग पर तिरस्कार के अलावा अउर कुछ नइखे । मनुष्य के मुक्ति के कौनो मार्ग नइखे । ऊ घूमत कर्म-चक्र के पहिआ से मुक्ति के प्रश्न ही कहाँ उठता?"

लेकिन बुद्ध कहलन, "तोहर हमरा से कउनो संबंध नइखे । नकली विचिकित्सा ! आदमी के अति सूक्ष्म, कपटी, शत्रु ! तोर इहाँ कउनों काम नइखे ।" एकरा बाद बहुत मायावी "शीलवरत परमार्ष" आइल जे देश-देश में अनेक पाखंड चलइले बा अउर लोगन के कर्मकाण्ड में उलझा के उनका के भ्रमित करत रहेला कि ओकरा पास स्वर्ग धाम के कुंजी बा । ऊ आके सिद्धार्थ से कहलस, "तू श्रुतिपथ के काहे लुप्त करे के चाहऽ तारऽ? देवता लोग के विदाई दे तारऽ अउर यज्ञ मंडप उजाड़ रहल बाड़ऽ । पवित्र पुस्तक के निरर्थक, असार साबित करे खातिर, देवता लोग के गद्दी से उतार के, सब पंडित के आसन खाली कराके ऊ लोग के समाप्त करे के विफल कोशिश काहे करऽ तारऽ? एही से त पंडित-पुजारिअन के रोजी-रोटी चलेला । देश के शासन भी एही से चलेला ।" लेकिन बुद्ध उत्तर दिहलन, "तू जेकरा अपनावे के कहऽ तारू ऊ क्षण मात्र खातिर बा, ऊ एगो मूर्ति बा जे चल जाई । लेकिन सत्य स्वतंत्र रूप से खड़ा रही काहेंकि सत्य रोज एकरस, अचल अउर सनातन होला । इहाँ तोहर कवनो काम नइखे । एको क्षण मत रूकऽ, भागऽ, अब आपन अंधकार में चल जा ।" फिर सुवेशधारी छैला, प्रलोभन देखावत, कामदेव, प्रेम के राजा, जे देवता लोग के भी प्रभावित कर देवे ला, सब प्रकार के प्रेम के स्वामी व शासक, हँसत-हँसत पेड़ के नीचे आइल । आपन स्वर्ण धनुष हाथ में लेले, लाल फूलन के हार गला में डलले, कामना के तीर के साथ आइल

। ई पाँच काँटेदार अग्नि के ज्वाला वाला तीर जब हृदय में चुभेला तब हृदय के विषैला काँटा से भी ज्यादा पीड़ा देवेला । उनकरा साथ ऊ सुनसान स्थान पर चलत-फिरत सुन्दरियन के भीड़ आइल, नैसर्गिक आँख अउर सुन्दर होंठ वाली, अदृश्य सुन्दर तार से निकलल संगीत पर, शब्द में प्रेम के गुणगान करत, एतना मोहित करे वाला तान कि मानों लागल कि ओकरा सुने खातिर रात थम गइल हो अउर सारा चाँद-तारा आपन ग्रह पथ पर खड़ा हो गइल होखे । चारों ओर से चंद्रमुखी स्त्री प्रेमपूर्वक, नयन मटकावत, आपन साज के साथ मधुर संगीत मिलावत, प्रस्तुत हो गइलीं । ऊ गीत गावत सिद्धार्थ के समझावे लगलीं, "तोहरा धिक्कार बा कि तरूणियन के हास-विलास भुला के आपन जीवन बरबाद करऽ तारऽ! स्त्री के संभोग से बड़ ई दुनिया में कउनो सुख नइखे । तूं तीनों लोक में जाके देख ल । प्रिय, गुलाबी, सुविकसित पयोधर बड़ा कीमती रतन ह । उनकर स्पर्श से बढ़ल कउनो सुख नइखे । तू देखऽ कि केह प्रकार स्त्री सब भौं अउर मुँह बना के तोहरा ओर देख रहल बाटे । ई स्त्रियन के अंग-अंग में अइसन सुन्दरता समाइल बा जेकर वर्णन ना कइल जा सकेला, जहाँ उमंग से भरल मन खुद चल जाला । जे भी आदमी एकरा के ई लोक में भोग पावे लन उनकरा खातिर स्वर्ग इहें बा । एही कारण सिद्ध अउर सुज्ञानी बहुत प्रकार से आपन शरीर के आठों काल तपावेलें । जब कामिनी अपना भुजापाश में बाँध के रखिहें त दुख कहाँ से पास फटकी ? सारा जीवन के इहे सार बा । एगो मधुर चुंबन के ऊपर सारा जीवन न्यौछावर हो जाई ।" एह प्रकार अनेक भाव-भंगिमा दिखा के अउर गीत गा के ऊ सब ललना सिद्धार्थ के रिझावे में जुटल रहलीं । उनकर नेत्रन में नशा बिल्कुल स्पष्ट दिखत रहे अउर अधरन पर मंद-मंद मुस्कान शोभायमान होत रहे । आपन शुभ सुडौल अंग के कुछ ढँकत अउर कुछ देखावत ऊ नाचत रहलीं अउर मन के ललचावत रहलीं, ओ फूल के तरह जेकर कली मुँख खोल आपन स्वरूप दिखावेली अउर रूप दिखा के फिर छिप जाली । ई स्त्रियन के रंग-रूप के अइसन छटा पहिले कबो ना दिखल रहे । वन में गाछ के पास से एक के

बाद एक तरूणियन के दल निकल आइल अउर एह प्रकार नव नवेली के उपस्थिति से ऊ रात निखर उठल । ओमे एक से बढ़ल एक रसवन्ती बार-बार सिद्धार्थ से कहत गइली, "प्रिय! तोहरा खोजत-खोजत त मानो हम मर गइनीं । ई होठ्न के रस पान करऽ अउर एक पल, एक क्षण खातिर ही सही एह जीवन के आनन्द ले ल ।"

पर सिद्धार्थ आपन आसन से जरा भी ना डिगलन अउर ना उनकर ध्यान भंग हो सकल । तब घमंड में उठ कामदेव खुद धनुष उठा लेहलस । ओही समय दूसर चित्त चुरावे वाला कामिनी दल आ पहुँचल। ओमें जे सबसे सुन्दर अउर लावण्यमयी रहली ऊ सिद्धार्थ के ओर बढ़ अइली । ऊ यशोधरा के अति सुन्दर रूचिर रूप धारण कइले, आँखियन में जल ला के, पूरा शरीर में विरह भाव जगा के, आपन दूनों बाँह सिद्धार्थ के ओर पसार के ऊँचा साँस भरत मंद-मंद आवाज में कहली, "हमार कुँवर ! हाय! तोहरा बिना हम मरऽ तानी! हम ऊ स्वर्ग के सुख के कहाँ से पाएब ई सोच के, बिना उपाय हो गइल बानी । रोहिणी नदी के तीर पर आपन नगर में हमनीं का जौन जगह एक साथ रस-पान कइनीं, ओही जगह हम अधीर हो पहाड़ जइसन दिन काटत बानी । आपन भवन वापस चल चलऽ । हे प्रियतम! एक बार फिर हमरा के आपन बाँहन में ले लीं अउर अधरन से लिपट जा । झूठा सपना में सब कुछ भुला के तू सब कुछ खोवऽ तारऽ । हम उहे हईं जेकरा के तू लगातार खोज रहल बाडऽ ।" तब सिद्धार्थ प्रत्युत्तर में कहलन, "हे असत छाया! अब अउर आगे मत बढ़। ई जगह पर तोर सारा प्रयत्न अउर उपाय बेकार बा । कामिनी ! तू जौन प्रिय के रूप धर के ज्ञान हरे ला आइल बाडू उनकर सम्मान करऽ हम तोरा के शाप नइखी देत । तू जौना दृश्य जगत के एतना सुन्दर बतावऽ तारू, जा भाग जा अउर ओही शून्य में जाके विलीन हो जा जहाँ से तू अइलू ह ।" सिद्धार्थ के ई कटु वचन सुन ऊ छाया रूप एके क्षण में आसमान में धुँआ जइसन उड़ गइल अउर वन में केहू ना बचल ।

एकरा बाद मार भयानक घना अंधड़ उठ्वलस अउर एसे आसमान में अंधेरा छा गइल । ओकरा बाद अउर भी पाप के जनम देवे वाला सिद्धार्थ के सम्मुख अइलें । ओकरे साथ 'प्रतिघा' आपन कमर में करिआ साँप लपेटले आइल । जबो ऊ कुछ बोले या शाप देवे तब ओकरा साथ ऊ सब संपवा सब फुफकारस। तथागत ओकरा ऊपर आपन सौम्य दृष्टि फेरलन अउर एकरा साथे ओकर बोलती बंद हो गइल मानों ओकर काला जीभ पर कील ठोका गइल हो । अब ऊ हिल-डुल ना सकीत । ऊ बुद्ध के कुछ ना कर सकल अउर सब विधि से हार गइल । काला नाग भी आपन भारी फन नीचा कइले सिमट्ल रहल । ऊ सिद्धार्थ के कुछ ना बिगाड़ पइलस । एकरा बाद 'रूप-राग' आइल जे हर इंसान के आपन वश में कइले रहेला । ई ऊ शक्ति ह जे आदमी के लुभा के, प्रलोभन देके ओकरा के इंसान से हैवान बनावेला । ओकरा पीछे लागल 'अरूपराग' भी आ पहुँचल । ऊ आदमियन के अन्दर तृष्णा जगा के ओकरा मन के यश लिप्सा से पूरी तरह भर देला । ओकरा जाल में बुद्धिमानो फँस जालें अउर फँसला पर निकले खातिर उनकरा बहुत साहस अउर श्रम करे के पड़ेला । भयंकर युद्ध होला, मान जइसे रणभूमि ही काँप उठेला । 'अरूपराग' के असफल होत देख दुष्ट 'अभिमान' सीना तान आगे बढ़ल । अभिमान होला पर संत जन भी अपना के 'सवाया' ही गिने लें । अभिमान के असफल हो गइला के बाद 'अविद्या' के बारी आइल । ऊ आपन भयानक दल साथ ले आगे बढ़ आइल । ओकर अइला से धरती कुत्सित अउर कुरूप वस्तुअन से भर गइल । ऊ एगो परम घिनौना बुढ़िया के समान जब आगे बढ़ल तब चारों ओर धरती पर घना अंधेरा छा गइल । पृथ्वी काँप उठल, तूफान उठ खड़ा भइल, रात थरथरा गइल । मूसलाधार वर्षा होखे लागल अउर बिजली भी चमके लागल । भीषण उल्कापात से सारा धरती प्रचंड रूप से काँप उठल जइसे ओकर खुला घाव पर मानो केहू आग बिखेर देले हो । ऊ भयानक अंधकार में पंखन के फड़फड़ाहट के चीत्कार सुनाई पड़ल अउर ई दृश्य बड़ा भयंकर रहल । प्रेतलोक से एक से बढ़ल एक प्रेतन के सेना आ गइल अउर ऊ

सिद्धार्थ के डिगावे खातिर ओही जगह सेंध लगा के बैठ गइल । बाकिर ई सारा आसुरी शक्ति के सतत प्रयत्न के बाद भी तथागत तनिको ना डिगलें अउर आपन आसन पर विराजल रहलें । उनकरा चारों ओर धरम रक्षा–कवच बनवले रहे जइसे चारों तरफ जब किला के खाई अउर चारदिवारी होला, त कोई भी अपना के सुरक्षित महसूस करेला । ऊ बोधिवृक्ष ऊ अंधड़ में भी अचल रहल । ओकर एको पत्ता ना हिलल अउर ना ओकर ओस कण ढुलकल । बाहर सब प्रकार के उत्पात अउर भयंकर विघ्न घटत रहे पर ऊ वृक्ष के छाया में सौम्य, मनोहर शांति छाइल रहल ।

अभिसंबोधन

जब रात के पहिला पहर बीत गइल तब मार के सेना भाग गइल अउर मृदु शीतल हवा बहे लागल । चारों ओर शांति ही शांति छा गइल । सिद्धार्थ एह काल में सबसे पहिले 'सम्यक दृष्टि' पइलन जेसे उनकरा सकल चराचर जगत दृष्टिगत हो गइल । दूसरा पहर में शाक्य मुनि "पूर्वानुस्मृतिज्ञान" प्राप्त कइलें जेसे उनकरा आपन प्रत्येक पिछला जनम के सुधि हो आइल । हजार जनमन में जब–जब जहाँ–जहाँ, जौन–जौन भी योनि में साई जनमलें ऊ सब उनकरा सामने स्पष्ट हो गइल । जइसे केहू बहूत दूर चल के अउर ऊँचाई चढ़के परबत के ऊँचा शिखर पर जा पहूँचेला अउर उहाँ से पीछे मुड़के नजर पसार के देखेला त सारा धरती दृष्टिगत होला ओही प्रकार ऊ आपन सब पूर्व जनम के देख लेलन । ऊ देखलें कि उनकरा पथ में कइसन–कइसन स्थल पड़ल रहे–ऊँचा, नीचा, खोह, नाला, दलदल आदि । पीछे मुड़के देखलें त पइलन कि वीहड़ घना जंगल धरती पर एह प्रकार सिमटल रहल जइसे धरती के आँचल पर एगो हरा फूल के ठप्पा लागल होखे । ऊ सब गहीर–गहीर खाइअन के देखलन जेसे बाहर निकले में पसीना निकल गइल अउर दुगना परिश्रम करे के पड़ल । ऊँच कठिन किनारा से होके चलत समय कइसे शरीर काँप गइल अउर कहाँ–कहाँ पैर फिसल गइल जैसे,

मानों प्राण ही छूट गइल । हरा-भरा दूब से ढँकल पृथ्वी देखलें, निरमल झरना के बहल अउर अति सुन्दर सरोवर देखलें । चलते-चलत के प्रकार पहाड़ के चोटी के पास एगो धुँधला समतल जमीन दिखल जहाँ लागत रहे कि नीला आसमान आपन हाथ फैलइले पहाड़ के स्वागत खातिर आ पहुँचल बा! बहुत सारा जनम में ऊपर जाये वाला दीर्घ-श्रृंखला देखेलें जे सीढ़ी के समान क्रम से ऊपर ले जात दिखल । ऊ इहो देखलन कि अधम वृति से ऊ कइसे अघोभूमि में जा गिरल रहलें अउर फिरू लगातार प्रयास कर ऊँचा भूमि पर आ पहुँचलें जे निरमल, पावन अउर सुन्दर रहे जहाँ उनकरा 'दशशील' लउकल जे प्राणी के जीत में सहायक होला जेकरा से अत्यन्त ऊँचा निर्वाण-पथ पर पहुँचल जा सकेला।

बुद्ध देखलन कि प्राणी कइसे शरीर धारण करेलन, पिछला जनम में जे कुछ बोवल जाला, उहे अगला जनम में काटेला । एगो जीवन के अंत होतहीं दूसर जनम शुरू हो जाला । जौन खो गइल ओकरा के छोड़ मूल से लाभ जुड़ल रहेला । ऊ देखलन कि कौना प्रकार जनम दर जनम बीतत जाला अउर पुण्य से पुण्य तथा पाप से पाप जुड़त रहेला । बीच-बीच में अर्थात् मरणकाल के अंतर में हमेशा तुरंत सब के लिख दिहल जाला । ई अचूक हिसाब-किताब में एको बिंदु भर के भी गलती ना होला अउर एह प्रकार जीवन में संस्कार के ठप्पा लग जाला । एह विधि से जब-जब प्राणी नया जनम लेला, अपना साथ पिछला जनम के करम-बोध भी ले आवेला।

रात के तीसरा पहर में बुद्ध के 'अभिज्ञा' प्राप्त भइल । एकरा से शाक्य मुनि 'आश्रय ज्ञान' प्राप्त कइलन । उनकर दृष्टि लोक-परलोक ले पहुँच गइल । ऊ प्रत्यक्ष दृष्टि से पूरा सृष्टि देखलन । हर चीज अउर हर बात के हर पहलू साफ-साफ स्पष्ट हो गइल । भुवन के बाद भुवन, सूरज के बाद करोड़ों सूरज दिखल । साथे साथ करोड़ों ग्रहगण आपन चाल में बँधल, आपन कक्षा में घूमत दिखलें

जइसे नीला समुन्दर में हीरा के द्वीप दिखत हो जेकर कौनो छोर ना रहे अउर ना कौनो थाह । ऊ कबो भी ना घटेला-बढ़ेला अउर लगातार कार्यशील रहेला । ओमें रह-रह के क्षण-क्षण रूप तरंग उठत रहेला । शाक्य मुनि अनंत पिंड के अवलोकन कइलें । अलख सूत से बाँध के ई अनगिनत लोक नचावत रहेला । पिंड खुद एक के बाद एक बढ़ के परिक्रमा करेला अउर बार-बार खुद महाज्योति निकालेला । बुद्ध ज्योति के जागल ई परम्परा जनलन । एकर उनकरा अनुभूति भइल कि ई अमित, अंखड अउर अनंत बा जे केन्द्र से जुड़ रहल बा । उहे फेरा दर फेरा डालेला । एह प्रकार चक्र पर चक्र बहुविधि बढ़त जाला । दिव्य दृष्टि से बुद्ध लोक के यथावत देखेलें जे आपन-आपन पूर्वनिर्धारित काल चक्र में घूमत रहेलें । महाकल्प या कल्प के अवधि तक ई सब भोग भोगिहें अउर आखिर में ज्योतिविहीन होके खतम हो जइहें । तथागत ऊपर-नीचे चारों ओर नजर फरेलन । अनंत नील राशि के देखला से लागल मानों मति ही फिर जाई । एह सब के पीछे, सब रूपन से परे, लोक-लोकन से भी न्यारा, एह सम्पूर्ण जगत के प्राणशक्ति से दूर किनारा पर उनकरा एगो शाश्वत नियम के अस्तित्व दिख पड़ल । एक शक्ति जे अलख भाव से रोज सनातन रूप में आदेश देहल करेला अउर जे अंधकार के प्रकाश अउर जड़ के चलायमान में बदलत रहेली । ऊ शून्य के पूर्ण अउर घटित के अघटित कर देली । ऊ सुन्दर वस्तु के अउर सुन्दर बनावेली अउर संसार के मोह लेली । ई अटल आदेश में कहीं शब्द अक्षर नइखे अउर ना ई विधि-विधान अउर नियम-कानून के केहू ज्ञाता-दाता बा । सब देवता लोग से परे इहे नित्य विधान दिखेला जे सब प्रकार से अटल, अकथ्य, सबसे प्रबल अउर महान बा । इहे शक्ति जग रचेली, नाश करेली अउर फिरो बारंबार रचना करेली । साथ ही ई शक्ति विधि-विधान के आपन धरम विधि के अनुसार निर्माण करेली । एकर गति में तीनों गुण सतोगुण, रजोगुण अउर तमोगुण समाविष्ट हो जाला । जे लोग एह दिव्य शक्ति अउर गति के अनुकूल चलेला ऊ आपन सर्वस्व भला करेला । दूसर ओर जे भी एह शक्ति के अनुकूल ना चली ऊ भारी

भूल कर दी । एह प्रकार कीट–पतंगा भी आपन जाति–धरम निभावेला त निश्चय ही उचित करेला । एह तरह आपन भूख मिटावे खातिर जब बाज लवा के मारेला त एमें कउनों दोष नइखे । ऊ आपन भला करेला । ऊ सब परस्पर मिल के विशाल अउर महान विश्वविधान में योग देवेलन, अउर आपन कर्तव्य के पालन करे लन । ओस के कण अउर तारा के समूह भी चमक के आपन पूरा–पूरा सहयोग देवेलें । जे लोग जानऽता कि जीवन के बाद मृत्यु ही आई अउर जे कउनो अच्छा कार्य खातिर ही शरीर छोड़ेला, ओइसन आदमी धरम पथ पर चलत उत्तम जनम ग्रहण करेला जहाँ ऊ धरम–ध्वजा लहरावेला । अइसन आदमी के जीवन कलुषित ना होला बल्कि पूर्णतः उज्जवल होला । अइसन आदमी के सब संकल्प दृढ़ होत जाला अउर छोटा–बड़ा सब जहाँ तक हो सकेला भव–भोग के उपयोग करत जाला । मनुष्य के चाहीं कि दूसर पथिक के मार्ग सुगम, सहायक बनावे में मदद करे अउर उनकर प्रगति में बाधक ना होखे । एह प्रकार ऊ व्यक्ति लोक अउर परलोक दूनों में यश प्राप्त करेला।

रात के चउथा पहर में बुद्ध महान 'दुख सत्य' के अवलोकन कइलें जे पाप से मिल के घोर अउर कटु विश्वविधान के सृजन करेला जइसे बार–बार हवा के झोका खइला पर आग दहक जाला । "आर्य सत्य" में ई जौन "दुख सत्य" बा, इहे सबसे प्रधान बा । तथागत अपना ध्यान में दुख–सत्य के निदान भी देखलें।

जीवन के संग दुख ओही प्रकार साथ लागल रहेला जे प्रकार मनुष्य के साथ ओकर छाया लागल रहेली । जहाँ कहीं भी जीवन दिखेला उहें पर कौनो ना कौनों प्रकार से ई दुःख पीछे लागल रहेला । अउर दुख से तब तक मुक्ति ना मिलेला जब तक कि ई जीवन से ही मुक्ति ना मिल जाला । ई दुःख विभिन्न समय में विभिन्न रूप से दृष्टिगत होला अउर क्षण–क्षण रूप बदलत रहेला ।

जब तक संसार से लगाव अउर करम विकास ना छूटी, जब तक वृद्धि, विनाश, सुख, दुख या राग–अराग, द्वेष अउर सब सुख समन्वित शोक व दुखमय आनंद ना छूटी, जब तक ज्ञान के प्रकाश ना जागी तब तक ई फंदा ना छूटी । लेकिन जे भी ई जानेला कि 'इ सारा के सारा जाल अउर खेल अविद्या के ह' ऊ एह जीवन के मोह छोड़के मोक्ष के प्राप्त कर लेला । जेकर दृष्टि विस्तृत व्याप्त होखेला ऊ खुद सब कुछ देख लेला । एही 'अविद्या' से सारा वृत्ति 'संस्कार' जनम लेला । ई संस्कारन (वृत्तियन) से अनेक 'विज्ञान' उत्पन्न होला जेसे अनेक प्रकार के नाम रूप के सृजन होला अउर फिर 'नाम रूप' से 'षडायतन' (मन+पाँच इन्द्रियन के समूह)' उपजेला जेकरा ले जीव विवश हो दर्पण समान दृश्यन के सत्य ग्रहण कर लेला । 'षडायतन' से फिरो 'वेदना' के उदभव होला जेसे झूठा सुख अउर विविध प्रकार के दुख दिखाई देला । इहे वेदना ऊ 'तृष्णा' के पुरान जननी ह जेकरा चलते प्राणी भवसागर में धँसत जाला । ई भवसागर के तरंग में खारापन ही खारापन बा जैसे सुख, सम्पत्ति, मान, कीर्ति, बहुत प्रकार के इच्छा अउर बड़ाई, प्रीति, विजय, अधिकार, अच्छा वस्त्र, अच्छा भोजन, कुल–गौरव, अभिमान, ऊँचा भवन पइला के चाह तथा चंचल मन के जनम होवेला । दीर्घ आयु के कामना अउर जीवन जीयला के चाह, पाप से लागल जीवन–संग्राम, जौन कौनो कटु होला त कौनो रूचिकर, एह सब से सम्मोहित हो प्राणी घूँट–घूँट प्यास बुझा के आपन तृष्णा शांत करे के चाहेला पर उहे घूँट पीये के चाह, तृष्णा के बढ़ा के अउर दुगना कर देली । ज्ञानी पुरूष तृष्णा के मन से दूर रखेलन अउर ऊ इन्द्रियन के झूठा दृश्य से अपने आप के तृप्त ना करे लन । ऊ आपन मन के दृढ़ रख अउर अविचल हो कौनो प्रकार से ना डोलेलें अउर यतन करके ना त जंजाल बढ़ावेलें ना केहु के दुख पहुँचावेलें । पूर्व प्रारब्ध के करम के हिसाब से जे कुछ भी उनकरा शरीर पर आ पड़ेला, ऊ सब कुछ निरंतर अविचलित चित्त रखके सहत जालें । काम, क्रोध, रागादि सब के दमन करे लें अउर दिन–दिन प्रयत्न कर के ओकरा के कमजोर कर के मार डालेलें । एह प्रकार पिछला जनम में

जीवात्मा जे कर्मफल संचित कइलस, मन में जे कुछ सोचले रहे अउर जेकरा के शरीर से संपादित कइलस, अहंकार के जे जटिल जाल बहुत जतन कर के बुनले रहलें, एह सब से सृजित काल-करम के अगोचर ताना बाना से मुक्त अब ऊ कलंकहीन हो निंरतर शुद्ध अउर पवित्र होत जाला । ओकरा फिर देह धारण ना करे के पड़ेला अउर ऊ पूर्णतः करम से ऊपर उठ के निरमल हो जाला । अगर नया जनम पाके ऊ देह धारण करेला त प्रसन्नचित हो धैर्यपूर्वक आपन भवभार सहन करेला अउर एकरा के केहू के ना जतावेला । एह प्रकार ऊ उर्ध्वगामी आरोह-पंथ पर ऊपर उठ चलत जाला अउर माया के 'स्कंध' अउर माया के जाल से छूटत जाला । उपादान के बंधन अउर भवचक्र हटा, पूर्णप्रज्ञ हो, दुःस्वप्न समान जगत के भूल के ऊ आखिर में राजा अउर देवन से भी ऊँचा पद प्राप्त कर लेला । ओकरा जीवन में हाय-हाय अउर जीवन के चाह मिट जाला । अब ऊ मुक्त शुभ जीवन प्राप्त कर लेला जेकरा सामने ई सांसारिक जीवन कुछ नइखे । ऊ चरम आनंद, शाँति अउर शून्यतम निर्वाण प्राप्त कर लेला । इहे निर्विकार, अविचल विश्राम के पड़ाव ह । इहे परम गति ह जेकर अउर कौनों परिणाम नइखे ।

इहाँ बुद्ध संबोधि पइलन, उहाँ दूसर ओर पौ फटे के आइल । पूरब दिशा में अति सुन्दर, अद्वितीय दिवस के ज्योति जाग गइल । रात्रि के काला परदा धीरे-धीरे हटे लागल मानो ऊ बुद्ध के एह विजय के मृदु घोषणा कर रहल होखे । अब धुंधला आसमान में सूरज के प्रकाश के नया रेखा खिंचायें लागल अउर जइसे-जइसे आसमान के नीलिमा ऊपर के ओर बढ़ल तइसे-तइसे आसमान में विराजल शुक्र ग्रह आपन तेज खोअत गइल । ऊ पहिले पीला पड़ल, फिर फीका पड़ल अउर अंततः अब लुप्त होखे जा रहल बा ।

सूरज देवता के शुभ दर्शन पाके कमल के फूल खिल के शोभित होखे लगलें । सुबह-सुबह संचारित होखे वाला हवा के परम सुख पा फूल भी पलक खोलके जाग उठल अउर खिले लागल ।

ओस के बूँदन से युक्त दूब पर भी एके क्षण में चारों तरफ रोशनी फैल गइल, जइसे बीतल रात आपन आँसू-बूँद रूपी मोती बिखेर देहले हो । आलोक के प्रभाव से सारा भूमि अब अलौकिक होत रहे, जइसे आसमान में बादल के ऊपर सुनहरा चमचम चढ़ावत जा रहल होखे ।

ताड़ के ऊँचा-ऊँचा सुनहला गाछ हर्षित होके आपन डंठल के बगल से लावण्यमयी किरण बिखेरले बा । सूरज के ज्योति अब ई जग के सब जीव-जंतु के जगा रहल बा । ओकर रोशनी सघन बन के झाड़ियन में घुस आइल बा अउर कहता, "अब दिन उग आइल ।" हिरणियन के आँख में चकाचौंध बा । जे पक्षी घोंसला में अभी भी आपन सिर गड़वले नींद में सुतल बाड़ें उनकरा पास जाके ई हिरणी कहत बाड़ी, "अरे! प्रभात के गीत गाव ।" अब जहाँ कहीं भी चलऽ उहें पक्षियन के कलरव सुनाई पड़त बा । कोयल के मीठा कूक अउर पपीहा के बँधल-बँधावल रट "पी कहाँ" सुनाई पड़ रहल बा । तीतर कहता, "उठ! देख!" अउर चंचल चुहिआ कहीं पर 'चुह-चुह' कर तारी । तोता टें-टें करत बाड़े तथा लाल-लाल रंग के चिड़िया अउर अन्य पक्षी भी सुरीला धुन में गावत बाड़े । दूसर पक्षी किलकारी मार के बोलऽ तारन अउर कउआ आपन कठोर कंठ से "काँव-काँव" बोलत जाता । कहीं मेंढक करारा 'टर-टर', त कहीं मोर आवाज निकाल रहल बा । सब परेवा पुलकित बाड़े अउर रस भरल परम प्रिय गाथा गा रहल बाड़े । उनकर गान पूर्णतः निर्बाध चल रहल बा जइसे जीवन के घड़ी कबो ना रुकेला ।

बुद्ध के परम विजय के अइसन पुनीत प्रभाव पड़ल कि घर-घर शाँति छा गइल अउर कौनो प्रकार के झगड़ा ना रहल । सब झगड़ा शांत हो गइल । हत्यारा हत्या खातिर ले जा रहल वस्तु तुरंत छोड़ देहलस अउर झट छूरी फेंक देलस । चोर चुरावल धन वापस छोड़ आइल अउर बनिया उधार दिहल पैसा पर ब्याज छोड़ देलस, क्रूर लोग कोमल हो गइल अउर कोमल हृदय वाला लोग अउर

कोमल । ऊ नया दिव्य प्रभाव से सब जगह अमृतमय जीवन के प्रवाह होत दिखल । तुरंत राजा आपस में होत झगड़ा के रोक देलन जेकरा कारण क्रोध अउर घृणा से आपस में लड़त रहलें । जे रोगी बहुत दिन से खाट पर लेटल रहलें उहो हँसत आपन खाट से उठ खड़ा हो गइलें । जे आदमी मृत्यु के नजदीक आ गइल रहे उहो सहसा प्रमोद से भर गईल । लागत रहे कि पूरा राज्य में चारों ओर अनेक सूरज उदित हो गइल ।

अपना घर के सेज पर जहाँ दीन-हीन यशोधरा बैठल रहत रहली उहाँ भी अउर उनकर हृदय में भी अचानक हर्ष के धारा बह चलल । उनका मन में अपने आप अइसन विचार उठ आइल, "प्रेम अगर सच्चा होला त ऊ कबो निष्फल ना जाला । अगर केहु पर घोर दुःख आ पड़ेला त अइसन घोर दुख के अंत सुख के अतिरिक्त हो ही ना सकेला अउर अइसन जे कुछ भी होइ ऊ ईश्वर के कृपा के बिना हो ही ना सकेला ।"

चारों ओर अपार आनंद छा गइल यद्यपि केहु ना जान सकल कि वस्तुतः भइल का बा, मानों सुनसान बंजर के बीच सुर भर गइल । तथागत के आगमन अउर उनकर बुद्धत्व के प्राप्ति देख भूत-प्रेत पिशाच के भी आपन मुक्ति के आशा बँध गइल । एहसे उहो हवा के संग खुश होके नाचे लगलें ।

ओही समय आसमान में ई देववाणी भइल, 'संसार के कार्य पूरा हो गइल ।' लोगन के बीच गलियन में अति चकित हो कई पंडित खड़ा होके ज्योति के प्रवाह के अनुभूति करत रहलें अउर यूँ कहत जात रहलें - "जरूर कौनो अलौकिक बात भइल बा ।" वन अउर गाँव -सब जगह सब जीव शत्रुता छोड़त चलत जात लउके लगलें । जहाँ बाधिन आपन बच्चा के दूध पिलावेली उहाँ पर सुन्दर-सुन्दर मृग खड़ा बाड़ें । भेड़िया अउर भेड़ एके साथ एके जगह चरतारें अउर गाय और शेर दूनों मिल एके घाट पर पानी

पीअत बाड़े । आपन विष छोड़ साँप आपन मणि के साथ फन लहरा रहल बाटे अउर ओकरा पास गरूड़, जे साँप के खाले, अपना चोंच से पंख खुजलावत बाटे । लवा बाज के सामने से बिना भय के निकल जाता काहेकि बाज ओकर शिकार नइखे करत । जहाँ बगुला ध्यान में बइठल बा उहाँ मछली खेलत बाड़ीं । कहीं डार पर बैठल गिलहरी पूँछ हिलावतिया अउर तितली पर तनिको झपट्टा नइखे मारत । तितली एह फूल से ओह फूल पर चपलता से जात बिया अउर पीला, नीला आदि रंग के पंख फड़फड़ावत चारों तरफ उड़ रहल बा । राजकुमार सिद्धार्थ बुद्धत्व के प्राप्त कर सूरज के समान दिव्य तेज धारण कइलें जेकरा से ऊ एह संसार के भवसागर के पार करइहें । सकल संसार के जीवन हित खातिर अमर्त्य विजय विभूति प्राप्त कइले बाड़े । ऊ बोधिवृक्ष के नीचे शाक्य-मुनि अभी भी ध्यान में बाड़े अउर उनकर आत्म-प्रभाव से मनुज, पशु, पक्षी अउर सब जीव अति प्रसन्न बाड़ें ।

बोधि वृक्ष के नीचे दिव्य तेज अउर अनंत शक्ति पा अउर हर्षित हो बुद्ध उठले अउर अति ऊँचा स्वर में ई गाथा बोललें जे सब देश-काल में हमेशा खातिर अमर हो गइलः

“अनेकजातिसंसारं सन्ध्याविस्सं अनिबिब्सं ।
गहकारकं गवेसन्तो दुक्खा जाति पुनप्पुनं ।।
गहकारक ! दिट्ठोसि पुन गेहं न काहसि ।
सब्बा ते फासुका भग्गा गहकुटं विसङ्खितं ।
विषङ्खारगतं चित्तं तण्हानं खयमज्झगा ।।”

अर्थः अनेक जनम ले संसार के बहुत सारा दुख भोगत चल अइनीं । जौन कारीगर हमार जनम के सृजन करत रहे ओकरा के खोजत रहनीं अउर हम ओकरा के आज ही खोज पइले बानीं । हे गृहकारक ! अब तूं फिर कबो हमार भवन के निर्माण ना कर पइब

काहेकि सारा साज अउर यंत्र के तोड़ देले बानीं अउर सारा सामग्री भी ढह गइल बा । अब हमार चित्त संपूर्ण रूप से संस्कार रहित हो गइल बा । हमार तृष्णा मर गइल बा अउर जनम-जनम के फेरा के भी अंत हो गइल बा ।

सातवाँ सर्ग
यशोधरा के सुसंवाद

राजकुमार सिद्धार्थ के वन गमन के कई बरस बितलो पर राजा शुद्धोदन पुत्र के वियोग में सिपहसालारन के बीच उदास मन से बइठल रहत रहलन अउर यशोधरो पति के वियोग में सब ठाट बाट छोड़ के शोक अउर दुःख में तड़पत दिन गिनत रहली । राजा के जब-जब काम खातिर एहर-ओहर घूमत बेघर बनजारा से कौनो घूमे वाला साधू भा वैरागी के बारे में पता चले त तुरन्त दूत के भेज उनकरा विषय में जानकारी लेत रहलन । बनजारा आ घुमक्कड़ वापस आके साधू, संन्यासी अउर गृहस्थ त्यागी वैरागी, यति, जीवन से बीहड़ में बसल योगी के विषय में बतावस बाकिर केहू कपिलवस्तु के राजवंश के उजियारा राजकुमार के विषय में कवनो प्रिय संदेश ना दे पावल । अथक प्रयास से भी उनकरा विषय में कुछु पता ना चल पावल । राजा के सारा उम्मीद जेकरा पर टिकल रहल, जे उनकर एक मात्र सहारा रहलन, जे यशोधरा के प्राण से भी जादे प्रिय रहलन, उनकर श्रृंगार, उनकर सबकुछ रहलन, ऊ आज ना जाने कहाँ-कहाँ भुलाइल-भटकल घूम रहल बाड़े ! कहाँ जे युवराज रहलन ऊ आज वैरागी बाड़न । ई सब का हो गइल, कइसे हो गइल, एकरा के केहु समझ ना पावत रहे ।

वसंत ऋतु आ गइल बा । आम के पेड़ पर मोजर लागल बा, जेके देखके अइसन लागत बा कि आम के पेड़ झूमत होखें । ऋतुराज वसंत के अइला से समूचे धरती सुशोभित हो रहल बा । पत्तन से घिरल फूल चिक्कन, हरल-भरल दिखाई देत बा जेसे सारा धरती सजल देखाई दे रहल बा । वाटिका में कुँवरी यशोधरा उदास पन से बइठल बाड़ी । नदी किनारे बइठ के ओकर सुन्दर गहिर धारा के बार-बार देखत जात रहली । विरह में आँख से आँसू निकलत रहे आ पलक आँसू से भारी हो गइल रहे, कोमल गाल पिचक गइल रहे । उनकर कमल जइसन सुन्दर होंठ पर विरह के पीड़ा

लउकत रहे । उनकर चिक्कन मुलायम केश के सुन्दर चमक फीका पड़ गइल रहल । उनकर केश के बीचे गूँथल चोटी लउकत ना रहे । शरीर पीयर पड़ गइल रहे । विरह में ऊ बिना गहना के रहली । उनकर पीयर देह पर उज्जर साड़ी बा, जे पर कहियों सोना के कन दिखाई ना देत रहल । जे कबो पिया के साथ पाके हंसन के भी आपन गति से हरा देत रहली, आज अति विरह में अइसन हो गइल रहली कि डेग राखे में भी काँप जास । पहिले स्नेहिल दिया के समान जौन आँख के काजर से सुन्दर प्रेम के चमक-दमक निकलत रहे, उहे आँख अब रात के सन्नाटा में जागत रहे ।

आज ऊ ज्योतिहीन, लक्ष्यहीन होके विरह में इहाँ-उहाँ घूमत बाड़ी । सुन्दर ऋतुराज के नयनाभिराम आभा के भी ना देख पावत रहली । ओमे उनकर कवनो रूचि ना रह गइल बा । उनकर पलक सिर्फ ढलत रहे, पूरा तरह खुलतो ना रहे । उनकर अध खुलल पुतली पर विरह के करिया छाया जइसन आ गइल रहे । उनकर एक हाथ में मोती जड़ल उहे कटिबंध रहे जेके छोड़के राजकुमार ओह काली रात में चल गइल रहलन । हाय! ऊ भयानक रात ना जाने केतना दुःख भरल दिन-रात के जनम देलस ? एकर वर्णन ना कइल जा सकेला । प्रगाढ़ प्रेम कबो एतना निष्ठुर ना रहल । बाकिर एहसे एगो बात स्पष्ट हो गइल, जीवन में एगो बात गांठ बांधलेली कि 'ई प्रेम के खेला हमरा खातिर ना रहे ।' दोसर हाथ आपन प्रिय स्नेहिल बेटा के थमले रहे । ओके कुमार अपना धरोहर के रूप मे छोड़के चल गइल रहलन । उनकरो ऊ तनिको ख्याल ना कइलन । बढ़के आज ऊ आठ बरिस के हो गइल बाड़न । उनकर स्वभाव चंचल बा अउर एही स्वभाव का चलते ऊ इहाँ-उहाँ घूमत रहे लन, जेसे माता के मुँह पर कबो-कबो खुशी छा जाला । अइसन लागेला जैसे बागीचा में पुष्पहास हो रहल बा । कमल के फूल के तड़ाग के किनारे माई-बेटा कुछ समय से बइठल रहलन । लड़िका मछली के ओर दाना फेंकत रहलन अउर दाना फेंकले जास । उनकर माई उड़त हंसन के ओर देखत रहली आ भींजत आँख से विनती करत कहली,

“हे आसमान में उड़े वाला चिरई–चुरुंग! हमार पिया जहाँ कहीं भी छिपल बाड़न, तू उहाँ जा, कृपा करके हमार संदेश सुना द कि यशोधरा उनकर दर्शन के बिना तड़प रहल बाड़ी, भीषण दुःख झेलऽ ताड़ी अउर अइसन दीन–हीन यशोधरा मृत्यु शैया के ओर जा तारी।”

गोपा शांत बइठल रहली । एतने में उनकर अनुचरी उतावली हो के कहली, “देवी ! अइसन संवाद अब तक कबो ना सुनल गइल ह । त्रपुष, भल्लिक नाम के दूगो सेठ माल लिहले नगर के दक्षिण द्वार पर आइल बाड़न । ई लोग देश–देश घूमे लन अउर सागर तट तक जाए लन । ई तरह–तरह के चीज–बतुस जइसे सोना के अनमोल रतन से जड़ल कटार, चित्र–विचित्र पात्र, कस्तूरी, अगर, रोली ओ दोसर–दोसर बेशकीमती सामान ले आइल बाड़न । बाकिर इ चीझ–बतुस जेकरा सामने कुछ नइखे ऊ दूनों उहो ले आइल बाड़न । ऊ राजकुमार के विषय में परम प्रिय संवाद ले आइल बाड़न । ई दूनो लोग देखले बाड़न कि तोहार प्राणेश्वर, हमनीं के देश के आधार, शाक्य कुमार चलल आवत बाड़न । ऊ बतवलें हँ कि उनकरा राजकुमार के साक्षात दरशन भइल बा आ ऊ दंडवत–प्रणाम करके, भेंट चढ़ाके उनकर पूजो कइले बाड़े । विद्वान लोग उनका प्रति पूरा समर्पित बा अउर ऊ ज्ञानीलोग के भी परम दुर्लभ, शुभ ज्ञान देके, उनकर उद्धार कर ताड़न । उनकर मधुर वाणी से मुखरित दया एवं प्रेम भाव के कउनो सीमा नइखे । दूनों सेठ बतवलें हँ कि उहाँ के एही तरफ चलल आवत बानी ।”

अइसन शुभ समाचार सुनके कुँवरी के हृदय ओही तरह उल्लास से भर गइल जे तरह गंगा हिमालय से उमंग के साथ उछलत, मचलत, इठलात, पहिल बेर पहाड़ से उतर के धरती से आ मिलेली । खुशी से अति उत्साह, आँसुवन के बरसात लिहले यशोधरा अचानक खड़ा हो गइली अउर बोल पड़ली, “ऊ सेठ लोगन के तुरन्ते हमरा पास बोलाव; ई शुभ समाचार सुने खातिर हमार कान तड़प रहल बा । अउर जाके उनकासे इहो कह द कि अगर ई समाचार

सच निकलल त हम उनकरा के थाली भर सोना अउर रतन देब आउर तोहरा के उनकरा साथे–साथे उपहार भेंट करब । सभे के कुछु ना कुछु उपहार जरूर देब ।”

आज्ञा मिलते दूनो व्यापारी दासियन का साथे शीश नववले राजकुमार का रंग–भवन में प्रवेश कइलन । ऊ सोना के सुन्दर पथ पर धीमा–धीमा पैर धरत चलत रहलन । राज–वैभव देखके उनकर आँख हैरान रहे । ऊ लोग सोना से चित्रित पर्दा के पास पहुँचल रहे कि एगो क्षीण, कँपकपाइल, मधुर आवाज उनकर कान में सुनाई देहलस, “सेठ! ई सब दासी कहत बाड़ी कि दूर से आवत रउरा हमार राजकुमार के कहीं देखले बानीं, उनकर प्रवचन सुनले बानी, अउर उनकर पूजो कइले बानीं । जे घर त्याग देहले बाड़न अब ऊ शुद्ध बुद्ध के रूप में त्रिलोक में पूजल जा तारन, सब के उद्धार कर तारन अउर ऊ एही ओर आ रहल बाड़न । राउर ई सब बात अगर साँच निकलल त रउरा दूनो लोग राजकुल के परम मित्र होखब ।”

तब ‘त्रपुष’ नामक सेठ शीश नवइले बोललन, “हे देवी! ऊ परम प्रिय बुद्ध के हमनीं का अपना आँख से देखनी हँ, पैरन पर शीश नवइनी हँ आउर जवना राजकुमार के हमनी के खो दिहनी जा, उनका के राजा लोग के भी राजा के रूप में पइले बानीं । उहाँ के शुद्ध आत्मा बन गइल बानीं । बोधिवृक्ष के नीचे फल्गु तट पर उहाँ के आसन लगइनीं अउर ओहींजा उहाँके जग–उद्धारक सिद्धि के दिव्य ज्ञान प्राप्त भइल । उहाँके सबकर सच्चा साथी, समस्त जीवन के प्रिय बन गइल बानीं । बाकिर ओह सब से भी बड़ हे देवि! उहाँ के अपने के बानीं । अपने के प्रिय के मूल्य राउर ई सच्चा आँसू ही बता रहल बा । सब प्राणियन के आज उहाँ के वचन से अनुपम सुख मिलत बा । ‘कुशल क्षेम से बाड़न’ इ कहल त विडम्बना होखी काहेकि उहाँके सब ताप से परे बानी, उहाँके कौनो दुःख छू भी ना सकेला । एह संसार के सब भवजालन के भेद के उहाँके देवन से भी ऊपर हो गइल बानीं । सारा संसार में आज सत्य अउर धरम

के ज्योति प्रकाशित हो रहल बा, जगमगा रहल बा । उहाँके नगर–नगर जा–जा के जौन भी उपदेश दे रहल बानीं, सब जीव ओकर अनुसरण करके शांति अउर सुख पावत बाड़न । 'गया' नाम के स्थान के सुन्दर, रमणीय क्षीरिका नामके वन में हमनीं दूनों लोग उहाँ के शीश नवा उपदेश सुननीं । चौमासा से पहिले उहाँके जरूर आइब अउर अपना मधुर उपदेश से सबके शोक दुःख हरलेब ।

ई सब सुनके यशोधरा खुशी के मारे गद्‌गद हो गइली अउर बहुत देर में सम्हरला पर एतना भर बोललीं–"हे सज्जन ! रउआ दूनों लोग के हमेशा कल्याण होखे जे अपने लोग हमरा के प्राण से भी प्यारा संदेश देहनीं हँ । अगर रउरा सब जानत होखीं त हमरा के विस्तार से बताई कि ई सब आखिर भइल कइसे ?" तब भल्लिक नाम के सेठ ओह भीषण रात के बारे में बतवलन जब धरती तक काँप गइल रहे अउर चारों ओर पानिये पानी फइल गइल रहे । एकरा बारे में 'गय' परवत के लोग–बाग पहिले से जानत रहलन । ओकरा बाद जब सूरज उगल, तब भव्य सबेरा भइल अउर जीव के कल्याण खातिर आशा के नया जोत के संचार हो उठल । ज्ञान पइला के बाद राजकुमार के मुँह पर अलौकिक आनन्द आ तेज जगमगात रहल रहे । बोधगया के बोधि वृक्ष के नीचे उहाँके बुद्धत्व के प्राप्ति भइल । उहाँ के खुदे संसार के बंधन तूड़ के मुक्त हो गइल बानीं आउर अब उहाँ के बुद्ध कहल जाला । उहाँके अन्दर एह विचार के भी उदय भइल कि दुःखी जगत के कइसे भला होखे अउर इहे विचार उनका हृदय पर बहुत दिन ले बोझा के जइसन पड़ल रहे । कुछ दिन ले उहाँके ओहीजां चिंतन करत रहनीं कि संसार के नर–नारी के ए विश्व के भव बंधन से कइसे मुक्त करावल जाव ? कइसे ऊ लोब के त्राण दिवावल जाव? ई विचार उहाँके हृदय में ठहर गइल कि कइसे ओह लोग के दुःख के निवारण कइल जाव ।

संसार के सब नर–नारी दिन–रात विषय–भोग के पाप में लिप्त रहे लन अउर सांसारिक वस्तुवन के पाके एह भ्रम में रहेलन

कि ऊ लोग सुखी बाड़न । ओह लोग के आँख पर परदा पड़ल रहेला जेके लोग टालेके ना चाहेला अउर खुद के इन्द्रियन के जाल में उलझइले रहेला । बुद्ध ई सोचत रहलन कि संसार के नर–नारी के उद्धार कइसे हो सकी, ऊ लोग जीवन–ज्ञान कइसे ग्रहण करी? कौना तरह संसार के नर–नारी इहाँ के दुःख, भव–बंधनन से मुक्ति के द्वार 'अष्ट मार्ग' आउर 'द्वादश निदान' अपनइहन? इहे त उद्धार–द्धार ह, बाकिर एगो अद्भुत स्थिति घटत बा कि पिंजरा में पंछी बा, पिंजरा के दुआर खुललो बा बाकिर पंछी पिंजरा से बाहर आवल नइखे चाहत, बाहर आवे खातिर ऊ सचेत नइखे । एही तरह से दुनिया के मर्द–औरत भी अपना मुक्ति खातिर सचेत नइखन । मुक्ति के राह खोजल कठिन बा बाकिर बुद्ध ओह राह पर अकेले चलत गइलन । ज्ञान प्राप्ति पर उहाँके लागल कि एह दुनिया में तत्व ज्ञान के केहू अधिकारी नइखे । अगर अइसन मान के उहाँ के दुनिया के नर–नारी के त्याग देतीं अउर उनकरा से दूर रहतीं त ओह लोगन के गति अर्थात–मुक्ति कइसे मिलित? बाकिर उहाँके हृदय में सब प्राणियन खातिर हमेशा समान दया भाव रहल बा । उहाँके सब जीव के उद्धार चाहत बानी काहेकि उहाँके सभे समान रूप से प्रिय बा । उहाँके मन के ई अन्तर्दशा के स्थिति में एगो भयंकर आर्तनाद भरल वाणी सुनाई दिहल अउर अइसन लागल जइसे कि धरती कराहके कह रहल होखे, 'तीनों लोकन के साथ हमहूँ नष्ट होखऽतानी ।' कुछ देर शान्ति रहल अउर फिर हवा उनकरा से एह तरह से प्रार्थना कइलस, "हे दयामय! प्रवचन सुनाई, धरम के प्रचार करीं ! सब जीव भव–ताप से जरत बाड़न । कृपा करके अब देर मत करीं, धरम के परचार करीं ।" करूणा से भरल एह पुकार सुन के तथागत तुरन्त सब प्राणियन पर आपन दिव्य दृष्टि डलनीं आउर सब जीउअन के देखनीं कि कौन लोग धरम के दिव्य ज्ञान पावे के अधिकारी बाड़न आ के एकरा लायक नइखे । उहाँके सब जीव के एह तरह से निहरनी जइसे सवेरा होते सूरज कमल से भरल तालाब पर सोना के समान आपन किरिन डालेलन अउर देखेलन कि कौन–कौन कली विकसित होखे जाता अउर कौन नाहीं ।

तब उहाँके बोलनी –"जे भी जहाँ–जहाँ पर बा, ऊ सब लोग सुन ले ! हम सबका के धरम जरूर सिखाइब, जे भी चाहे ऊ सीख ले याने जे भी सिखल चाहत बा उ सीख सकेला ।'

ओह समय बुद्ध के ध्यान में पंचवर्गी भिक्षु अइलन । उहाँ के तुरन्त वाराणसी के ओर चल दिहनीं । उहाँ सारनाथ में उहाँके ओह भिक्षुअन के ही आपन पहिला संदेश दिहनीं । एह तरह से उहाँ के धरमचक्र के प्रवर्तन कइनी अउर दिव्य ज्ञान प्रदान कइनीं । बुद्ध ओह लोग के मंगलमय 'मध्यम मार्ग' 'आर्य सत्य' आ 'अष्टांग मार्ग' के बारे में बतवलन । ऊ इहो बतवलन कि प्राणी जनम–मरण से कइसे छूट सकेला । ई सब बताके बुद्ध बोललन, "आदमी के गति ओकरा अपने हाथ में बा । पिछला कर्म के छोड़ के अउर कुछ भी भावी नइखे । हे भाई! एकरा अलावे अउर कउनो नरक नइखे जेकर निर्माण आदमी खुदे करेला । साथे कउनों अइसन स्वर्गो नइखे जहाँ ऊ ना जा सके । आदमी अगर अपना मन के विषय–वासना पर नियंत्रण रख सके अउर ओकर दमन कर सके त आदमी कहीं भी अउर कउनो स्वर्ग तक जा सकेला ।"

पाँच भिक्षुअन में सबसे पहिला "कौडिन्य" नामक भिक्षु 'चार सत्य', अष्टांग मार्ग' में ज्ञान पाके दीक्षित भइलन । उनकरा बाद 'महानाम', फिर 'भद्रक', 'वासव' आउर 'अश्वजित' नाम के भिक्षु धरम मार्ग में दीक्षित भइलन । ई सब लोग धरम मार्ग में प्रवेश पाके शांतचित्त हो गइल । एकरा बाद काशी के प्रसिद्ध सेठ जिनकर नाम 'यश' रहल, बुद्ध के शरण में आके दिक्षा लिहलन । ओकरा बाद चार गो दोसर मित्र ओह सेठ से दिव्य ज्ञान प्राप्त करके बुद्ध के शरण लिहलन अउर भिक्षु बनलन । फिर पचासगो दोसर–दोसर नगरवासी बुद्ध से दीक्षा पइलन । उहाँके वाणी लोग के कान में जहाँ–जहाँ पड़ल, उहाँ–उहाँ नया युग में शान्ति के संचार होखे लागल । जइसे वर्षा–ऋतु में वर्षा के बूँद पाके धरती पर नया–नया अंकुर

लहलहा उठेला, ओही तरह से उनकर अनोखा ज्ञान से सब जगह शांति अउर सद्भाव के संचार होखे लागल ।

ओकरा बाद बुद्ध साठगो भिक्षुगण के वैरागी अउर धीर चित्त वाला संयमी पाके धरम के प्रचार-प्रसार करे खातिर भेजलन । ऊ सारनाथ के ऋषिपत्तन'मृगदाव' में जाके आपन संघ बनइलन अउर राजगृह के निकट 'यष्टिवन' नामके वन के ओर चल गइलन । कुछ दिन तक उहाँ रहके धरम के उपदेश सुनवलें । उहाँ राजा बिंबिसार, उनकर पुरजन आउर सब परिजन अइलें आउर बुद्ध के शरण में आके आपन मोह समाप्त कइलें । ऊ लोग निरोध, शील, संयम आ धरम के तत्व सीखलें । तब राजा हाथ में कुश आ जल ले संकल्प लेहलन अउर सुन्दर, सुहाना, रम्य, 'वेणुवन' संघ के समर्पित कर देलन । ओह वन में स्थित सुन्दर सरिता, लता एवं गुहा मन के अत्यंत भावेला । राजा उहाँ शिला गड़वा के नीचे लिखल शिक्षा खुदववलन -

"ये धम्मा हेतुप्पभवा तेसं हेतुं तथागतो आह ।
तेसं च यो निरोधो एवं वादी महासमणो ।"

"हेतु से उपजल जौन धरम अउर दुःख समुदाय बा, ओह दुःख के कारण तथागत समझवले बाड़न । दुःखन के निरोध के ही महाश्रमण सबसे महत्वपूर्ण कार्य बता उहाँके डूबत जग के सहारा देके ओकरा के बचा लिहले बानीं ।"

ओही उपवन में एगो महान संघ बइठल जहाँ शाक्य-मुनि ओज से भरल दिव्य ज्ञान दिहलन । अइसन दिव्य, अपूर्व एवं प्रभावशाली ज्ञान सुनके नौ सौ लोग दीक्षा लेहलें अउर संघ के भिक्षु बन गइलें । ऊ सब भिक्षु लोग जा जा के धरम के प्रचार कइलें । बुद्ध ओ लोगन के ई शिक्ष-सार दे के विदा कइनीः

“सब्ब पापस्य अकरणं; कुशलस्स उप संपदा,
सचित्त परियसे दवनं एवं बुद्धानुसासनं ।”

“सब अकुशल कर्मन (पाप) के ना कइल, कुशल कर्म (पुण्य) के संचय कइल, आपन के रक्षा कइल इहे बुद्ध अनुशासन ह।”

एह तरह से दूनों सेठ सब कथा सुनवलन अउर यशोधरा ओह लोग के साभार विदाई देहली । कंचन अउर रतन से भरल थाल उपहार स्वरूप ओह लोगन के भेंट कइली । जब ऊ लोग जाए लागल तब यशोधरा उनका से फिर पूछली कि प्रियवर कौना राह से अउर केतना दिन में आएब? एह पर दूनो सेठ शीश नवाके कहलें, “हे देवी! एह पुर के प्राचीर से राजगृह करीब साठ योजन से कम दूर नइखे । पहाड़न के पार सुगम राह आवेला आउर सोन नदी का किनारे-किनारे कुछ कछार पड़ेला । गाड़ी के बैल रोज आठ कोस चलेलें । एह तरह से हमनीं के ओह जगह करीब एक महीना में पहुँचीला ।”

कपिलवस्तु आगमन

राजा के जब एह बात के पता चलल त अति प्रसन्न भइलन अउर घुड़सवारी के पारखी नौ सामंतन के बोला के उनकरे मार्फत कुमार के अलग अलग इ संदेश भेजलन, “हे कुमार! तोहरा बिना तड़पत हमरा सात बरस बीत गइल । रात-दिन तोहरा खोज में सब दिशा में दूत भेज चुकनी अउर अब चिता पर चढ़े के दिन नजदीकाइल बा । कबो हमार मृत्यु हो सकेला । एह खातिर हम तोहरा से बार-बार विनती करऽ तानी कि जहाँ तोहार सब कुछ बा तूं ओही जगह वापस लवट आवऽ । हम तोहरा इंतजारी में बानी । राजपाट अस्त-व्यस्त बा । सारा राज्य रोवत-तड़पत बा । तोहरा बिना

प्रजा तरसता अउर तोहर दरसन खातिर व्याकुल बा । हम त अब थोड़हीं दिन के मेहमान बानीं । एह से आ के दर्शन द ।" ऊ लोग यशोधरा के संदेश लिहलन, "यशोधरा, राजकुल के रानी, राहुल के माँ, तोहार मुँह देखे खातिर अकुलाइल, कमजोर, क्षीणकाय हो गइल बाड़ी । ऊ तोहार इन्तजारी ओही तरह करऽतारी जेह तरह दीन-हीन कुमुदनी चंद्रमा के इन्तजारी करत रहेली । त्याग कइला से अगर जो रउरा कउनो पदार्थ मिलल होखे त ओकरा में आज ऊ आपन अउर राहुल के भाग के विषय में याद दिला रहल बाड़ी ।"

संदेश लेहले शाक्य सामंत लोग मगध के ओर चल पड़लें । जब ऊ लोग वेणुवन पहुँचलें तब ओह समय बुद्ध धरम के उपदेश देत रहलन । ऊ सब लोग उहाँ जाके धरम के उपदेश सुने लागल । धरम के संदेश सुनते ऊ सब लोग सब संदेश भुला गइल । ओह लोग के मन में न त राजा के ध्यान रहल आउर ना कुँवर के रानी के सुध । ऊ गतिहीन जइसन हो गइलें एवं उनकरा मुँह से कउनों बकार ना फूटल । सब लोग बुद्ध के टकटकी लगा के देखे लागल अउर उनकर प्रवचन सुने लागल । उनकर ज्ञानदायी, ओजस्वी आउर दया से भरल बानी सुनके ओह सब सामन्त लोग के बुद्धि स्थिर हो गइल । ओह लोग के स्थिति अइसन हो गइल जइसे कवनो भौंरा घर खोजत बाहर निकलेला अउर कौनो बेल पर खिलल फूल देखके, हवा में सुगंध पाके, आँधी, पानी, अन्हार रात सब कुछ भुला जाला अउर ओह फूलन पर बइठ जाला आ सुख से मीठा-मीठा शहद पीअत रहेला । शाक्य सामंत भी ओही तरह बुद्ध के धरम उपदेश के अमृत पान करे लगलें आउर भिक्षु बनके संघ में जा मिलले, कुछु ना कह पइलें ।

कई महीना बीतला पर जब कवनो शाक्य सांमत वापस ना अइलें तब राजा सचिव के पुत्र काल उदायी के कुँवर के पास भेजलन । ऊ कुँवर के भरोसेमंद बालसखा रहलन आ राजा खुद उनकरा पर बहुत भरोसा करत रहलें । लेकिन उहो उहाँ जाके, सिर

मुँडवाके भिक्षु बन गइलन आउर घर-बार छोड़के संघ में रहे लगलें । एक बेर मनोहर एवं रमणीय ऋतु देखके ऊ तथागत के पास आके बोललन -"हे दयामय ! हमरा मन में एगो बात उठता कि भिक्षु के एक जगह पर अधिक समय तक ना रूके के चाहीं, उनकरा घूम-घूम के धरम के प्रचार करेके चाहीं । बड़ी कृपा होई अगर रउआ एक बेर कपिलवस्तु पधारीं । उहाँ राउर बाबूजी नरेश एवं राहुल के माता रउआ दर्शन खातिर व्याकुल बाड़ी ।" चारों ओर नजर डाल के तथागत हँस के प्रसन्न भाव से बोललन, "मित्र! धरम के प्रचार करे हम कपिलवस्तु जरूर आएब । ई हमार कर्तव्य बा अउर इच्छो बा । केहू का माता-पिता के प्रति आदर-सम्मान में कमी ना करे के चाहीं, अउर जब भी अवसर मिले उनकर सम्मान करे के चाहीं,उनकरा प्रति सरधा परगट करे के चाहीं, काहेकि उहे लोग आदमी के धरती पर लावेला, उनकरा के जीवन देवेला, जेसे अगर जतन करे त आदमी निर्वाण प्राप्त करके मुक्त हो सकेला । अगर आदमी धरम के अनुपालन में लगातर लागल रहे, सब नया बुरा करम के छोड़के अपना पहिले के बुरा करम से संबंध तोड़ ले, अपना मन में दया भाव राखे आउर दोसरा के हित में ही अपना के लगा दे त ओकरा निर्वाण रूपी परम आनन्द के प्राप्ति होई । तूँ महाराज के जाके हमार संदेश दे द कि उनकरा आदेश के शिरोधार्य करके हम कपिलवस्तु आवऽ तानी।"

कपिलवस्तु में राजकुमार के आवे के बात आग के तरह फइल गइल आ कुँवर के अगवानी खातिर सब नर-नारी बहुत उत्साह से तरह-तरह के आयोजन करे में जुट गइलें । कुँवर के अइला के समाचार से उनका एतना खुशी मिलल कि ऊ लोग आपन सब काम-धंधा, नींद अउर इहाँ तक कि भोजनो कइल भुला गइल । दक्षिण द्वार के पास अत्यंत विचित्र तम्बू तनाइल आ उहाँ बड़ा-बड़ा दरवाजा पर नया-नया सुन्दर फूल के हार लगावल गइल । चारों ओर अलग-अलग रंग के परदा लागल एवं ओपर सोना के तार जड़ावल गइल जहाँ शुभ, हरा-भरा बंदनवार सुशोभित होत रहल।

मंगलदायक द्रव्यन से भरल कलश राख दिहल गइल । पुर के सब रास्ता सजल तथा ओकरा पर चंदन जल छिड़काइल । ध्वजा के कतार अउर नया आम के पल्लव उहाँ स्वागत में लहराये लागल । नगरपाल के निर्देश सभे सुनलख कि पुर द्वार पर केतना हाथी रही। ओ हाथियन के सोनहुला हउदा से आउर ओकरा दाँत के एह तरह से सजा दिहल गइल जइसे बिजली चमकत होखे । ई तय भइल कि नगाड़ा कहाँ बाजी आउर कुमार के लेके कहाँ जाइल जाई अउर कहाँ उनकरा पर फूल बरसी । सब रास्ता फूलन से एह तरह भरल गइल कि जहवाँ भी कुमार के घोड़ के पैर पड़े ओकर पैर फूलन में धँस जाए, ओकर टाप फूल में समा जाए आउर सभे उनकर जयगान करे । सब नगरवासी के हृदय में कुँवर के दर्शन खातिर बहुते जादे उत्साह उमड़ पड़ल । सभे दिन निकलला पर दिन गिने लागल, अउर कुँवर के अइला के खुशी में नगाड़ा के आवाज सुने के इन्तजारी करे लागल ।

बुद्ध से सबसे पहिले मिलला के अभिलाषा से यशोधरो डोली चढ़के पुर का द्वार के ओर चल गइली जेमे ऊ सबसे पहिले उनकर दर्शन कर सकस । ओह द्वार के चारों ओर सजल, बरगद के पेड़न के झुण्ड बा जहाँ बहुत सारा पेड़, नया-नया प्रकार के बेल नजरन के ठहरा देवे वाला दृश्य प्रस्तुत करत बा । उहाँ के दृश्य लुभावना अउर मन का मोह लेवे वाला बा । पगडंडी का दूनों ओर हरियालीए हरियाली बा आ दूनों तरफ फल अउर फूल के डाली लहलहा रहल बा । उहाँ से राजमार्ग सीधा बगीचा के ओर जाला आउर दोसरा तरफ हरिजनन के बस्ती बा । ई दीन-हीन पुर के बाहर बसे लन जेकरा बाभन अउर उच्च वरण के लोग ना छुवे लन । बाकिर आज उनकरो में खुशी के लहर फूट रहल बा । ऊ लोग सूरज के पहिला किरन के साथे इहाँ-उहाँ डोले लागता । तथागत के एक झलक के चाह उनकरो में उत्साह के बिजली कौंधइले बा, जिनकरा के समाज दीन-हीन समझत रहल बा । जबो घंटा भा बाजा के धुन उनका कान में पड़ेला ऊ लोग सोच पड़ेलन कि बुद्ध आ

गइलें, अउर एह खुशी में ऊ लोग रास्ता का ओर देखे लागे लन भा पेड़न पर चढ़के सिर उठाके दूर-दूर तक देखते जालन कि कहीं केहू आवत त नइखे । बाकिर जब केहुओ आवत नइखे लउकत त ऊ दुबारा अपना झोंपड़ी के सँवारे में लाग जास । बुद्ध के दरसन के चाह में, उनकरा स्वागत में ऊ लोग हर दिन घर के झाड़-बहार, साफ करके, चौखट पोंछके, चबूतरा लीप के चौक सुधारत रहे । अशोक पेड़ के लहलहात कोमल डार से ऊ लोग बंदनवार बनइले बाटे अउर उहाँ से गुजरे वाला हर यात्री से ऊ पूछ लेवे लन कि कहीं राजकुमार के सवारी त नइखे आवत । यशोधरो पिया से मिलला के चाह में उहाँ खड़ा उत्सुकता से यात्रियन के जवाब सुनत रहली ।

तबे अचानक दूर से एगो भिक्षु आवत दिखाई देहलन । ऊ शरीर पर गेरूआ वस्त्र डलले दीन-हीनन के घर के सामने भिक्षा खातिर हाथ पसारत रहलन । उहाँ जौन कुछ मिले, ले लेत रहलन अउर नाहीं त अगिला दरवाजा पर चल जात रहलन । उनकरा पीछे-पीछे गेरूआ वस्त्र पहिरले अउर कमंडल लिहले दूगो आउर भिक्षु चलत रहलें । बाकिर जे आगे चलत रहलें उनकर मुद्रा गंभीर रहे । उनकरा चारों ओर एगो आभामण्डल घेरले रहे । उनकर चितवन कोमल आ पवित्र रहे । जेभी उनकरा के भिक्षा देवे आवे ऊ मोहित होके उनकरा ओर देखते रह जाय । जब ऊ दीन-हीनन के बस्ती से गुजरस तब केहू ना केहू दउड़ के उनकरा पैर पर गिर जाए अउर अपना सामर्थ्य से कुछ ना कुछ अर्पित कर देवे । बाकिर साथे-साथ कुछ आपन गरीबी पर पछतातो रहलन कि उनकरा के कउनों विशेष बतुस ना दे पइलें । धीरे-धीरे औरत, आदमी आउर लड़िका-लड़की सब उनकरा साथे साथे चले लगलें आ आश्चर्य से आपस में कानाफूसी करे लगलें, "इ ऋषि कौन हवन, मन में कुछो याद आवत बा? अइसन महान साधु पहिले कबो लउकल बाड़न का? हमनीं का त कहीं देखलीं नइखे?" चलत-चलत ऊ मंडप के लगे आ गइलन । यशोधरा उहाँ पहिले से आइल रहली अउर रस्ता में

चंदा जइसन मुखड़ा के उधार के खड़ा रहली । जइसहीं बुद्ध के देखली, ऊ पुकार उठली, "हे स्वामी! हे आर्य पुत्र!" आउर लोर भरल आँखिन का साथे रोवत, सिसकत दूनों हाथ जोड़के, अधीर होके उनकरा पैरन पर गिर पड़ली ।

राम-लक्ष्मी के कथा

समय के बितला का साथे जब ई राजवधू यशोधरा धरम में दीक्षित हो गइली तब एक दिन एगो शिष्य बुद्ध के सामने ई शंका प्रकट कइलन, "रउआ सब बंधन से मुक्त हो गइल बानीं, सब प्रकार के वासना के त्याग के, फूल जइसन यशोधरा के भी रउआ छोड़ दिहले बानीं; फिर भी यशोधरा के आपन आलिंगन काहे करे दिहनी ?"

ई वचन सुन बुद्ध प्रसन्न मन से बोललें, "महाप्रेम, लघु प्रेम के एही तरह सहारा देवेला आ ओकरा के प्यार करके पुचकार के सहज भाव से ऊँच किनारा तक ले जाला । ई ध्यान राखऽ कि अगर केहू भव-बंधन से मुक्त हो जाला त एह मुक्ति पर गर्व करके ऊ कौनो जीव के दिल ना दुखावे अउर हमेशा याद रखे के चाहीं कि ई मुक्ति केहु के एक जनम में प्राप्त ना होला । ई ज्ञानबल त जनम-जन्मान्तर के प्रयास से प्राप्त होला । एह तरह से जाके अंततः मुक्ति के फल मिल जाला । तीन कल्प तक लगातार, अनवरत प्रयास कइले से बोधिसत्व जगत के उद्धार खातिर मुक्त होखेलन । बोधिसत्व से परे विकास के तीन अवस्था बा । पहिला अवस्था में 'मन प्रणिधान' बलवती होला अउर मन में बुद्ध बने के लालसा जागृत होला । दूसरा अवस्था में बुद्ध बनला खातिर 'वाक प्रणिधान' के मनः स्थिति बनेला अउर 'हम बुद्ध बनब' ई संकल्प कइल जाला । तीसरा अवस्था में बुद्ध जइसन दृढ़ता आ जाला कि

‘हम जरूर बुद्ध हो जाएब* । पहिला अवस्था में हम शुभ मार्ग के विषय में खाली सोचत रहनीं अउर ओ समय हमरा आँख पर परदा पड़ल रहल ।” फिर उहाँके आपन पिछला जनम के कहानी कहनीः लाखन बरस पहिले समुद्र का किनारे हम ‘राम’ नाम के वैश्य के रूप में रहत रहनीं । ओकरा दक्षिण दिशा में स्वर्ण भूमि रहल जहाँ से सोना निकलत रहे अउर उहाँ पर सीपन से चमचमात अनमोल मोती निकलत रहे । यशोधरा एही प्रकार, ओ जनम में भी हमार पत्नी रहली अउर उनकर नाम ‘लक्ष्मी’ रहे । हम बहुत दरिद्र रहनीं अउर हमरा अच्छा से याद बा कि जब-जब हम धन कमइला खातिर परदेश जाये लागीं त लक्ष्मी अंखियन में आँसू भरके बोलस, “हमरा छोड़ के मत जाईं । रउआ त कहेनीं कि हम तोहरा के बहुत प्यार करेनीं । फिर हमरा के छोड़के काहे जात बानीं? घर छोड़के रउआ धरती अउर समुन्दर के खतरा काहे उठावे जा तानीं?” लेकिन हम साहस जुटा के सागर-पथ पर चल पड़नी । रस्ता के सब खतरा उठावत, जल-जन्तु से आपन जान बचावत अउर घोर धूप, करिया आ भयानक रात से लड़त-भिड़त, राह के अवरोध झेलत, अत्यन्त-कठिन मेहनत करत हम चलत गइनीं । उहाँ समुन्दर के अथाह गइराई में हमरा अत्यन्त निरमल, चन्द्रमा के जइसन बहुमूल्य चमक वाला एगो मोती मिलल । ऊ मोती एतना कीमती रहल कि एगो राजा आपन पूरा के पूरा राजकोष खलिया के ही ओकरा के खरीद सकत रहलन । तब हम राजी-खुशी गाँवे लौट अइनी । बाकिर ओही

---

* ‘मन प्रणिधान’ के उपरांत सर्वभद्रकल्प में जब गौतम धन्यदेशी सम्राट के पुत्र भइलन तब ऊ कहलन, “हम बुद्ध होखब ।” सारमंद नाम के तीसरा कल्प में उहाँके पुष्पवती के राजा सुनंद के पुत्र भइनीं । एही कल्प में उहाँ के तृष्णांकर बुद्ध द्धारा ‘अनियत विवरण’ (अर्थात् तू जरूर बुद्ध हो सकेलऽ) अउर दीपंकर बुद्ध द्धारा ‘नियत विवरण’ (अर्थात् तू जरूर बुद्ध हो जइब) प्राप्त भइल । कहीं-कहीं बुद्ध के तीन चरण के नाम ‘अभिनीहार’ – (बुद्धत्व के इच्छा), व्याकरण (कौनो तथागत के भविष्यवाणी कि तू बुद्ध होखब), अउर हलाहल (आनंद ध्वनि) भी मिल जाला ।

समय पूरा देश में भीषण अकाल पड़ल रहे । हमरो हालत ठीक ना रहे । रस्ता के संघर्ष अउर मेहनत से हमार अंग-अंग टूटत रहल । हमरा बेहद थकान हो गइल रहे । साथे भूख्रो-पियास सतावत रहे ।

कवनों तरह गिरत-पड़त हम अपना घरे पहुँचनीं । ओह अनमोल रतन के हम आपन फेंटा में बँधले रहनीं । बाकिर जेकरा खातिर हम ई सब परिश्रम कइले रहनीं ऊ हमरा चउकठ पर निश्चल, अचेत पड़ल मिलली । लक्ष्मी बड़ मुश्किल से आँख खोललली । उनका मुँह से आवाज ना निकलत रहे अउर अन्न के बिना उनकर प्राण निकलल जात रहल । तब गाँव-भर घूमके हम घोषणा कइनीं कि जे केहु आदमी के घरे कुछो अन्न होखे, ओह अन्न से एगो जीव के हित करे खातिर हम एगो पूरा राज्य के कीमत के बरोबर मोती देत बानीं । अगर केहू के लगे तनिको अन्न बाँचल होखे त ऊ हमरा के लक्ष्मी के मुँह के कवर खातिर दे दे अउर हमरा से चंदा के तरह चमकत रत्न खुशी-खुशी ले लेवे । ई सुनके एगो आदमी तीन सेर बाजरा लइलस अउर ऊ रतन हमरा से ले गइल । ओ अन्न से लक्ष्मी के देह में जान वापस आ गइल अउर साँस ले के ऊ कहली, "तोहार प्रेम सच्चा बा अउर हमरा अब तोहार त्याग देखाई पड़ रहल बा ।" एह तरह ऊ अनमोल रतन जे हमरा ओह जनम में मिलल रहे, ओकरा के हम तुरन्त एगो नेक काम में लगा देहनी । रतन देहला के अलावे दूसर कउनों तरह से लक्ष्मी के प्राण ना बचत देखके हम एगो जीव के जिनगी के रक्षा खातिर आपन अनमोल सम्पदा के त्याग देनी । ओह त्याग से हमरा मन में जे बुद्ध बने के लालसा रहे ऊ अउर बलवती हो गइल तथा आज अन्ततः हमरा मुक्ति के फल प्राप्त भइल बा । ई अनमोल सत्य धरम ह 'बारह उपचार' जे अनमोल रतन बा । ई कबो घटेला ना, अउर दोसरा के देहला से बढ़ते जाला । मेरू परबत के सामने जइसे चीउँटी के बनावल रेत के ढेर होला, अउर समुन्दर के सामने गाय के खुर बराबर जेतना जल होला, एह जनम के हमार दान ओ जनम के

तुलना में ओतना बा । हमार एह जनम के प्रेम ओही प्रकार महान बा अउर ई इन्द्रियन सब के बंधन से मुक्त बा तथा सब विधि से न्यारा बा । अइसन दान से सब जीव के मंगल होला अउर सब भरम टूट जाला । हमेशा कमजोर, निरबल जीव के सहारा बनऽ। एकर सबसे जादे महातम बा । एकरा में कउनो संदेह नइखे । एह तरह से यशोधरा पवित्र मृदुल प्रेम के सहारा पाके, सुख के राह पर बढ़ गइली आउर उनकर सब संदेह के निवारण हो गइल ।

राजा जब सुनलन कि राजकुमार सिद्धार्थ कइसे राजद्वार पर आइल बाड़े, बाल पूरा तरह कटल, सिर मुंडाइल, संन्यासी के उदासीन भेस में, आउर ऊ मलेच्छन के दुआर पर भीख खातिर हाथ फइलावत बाड़न, तब राजा क्रोध से भर उठलन । उनकरा हृदय से सब प्रेमभाव जात रहल । क्रोध में सफेद मूंछन के अईठत ऊ बेर-बेर दाँत पीसत रहलन । राजा अपना सामंतन के लेहले काँपत निकल गइलें अउर क्रोध में देखते-देखते तमक के तुरन्त अपना तीखा, तेज, तर्रार घोड़ा पर चढ़के तेजी से ओह नर-नारी के बीच से निकल गइलन । जवना रास्ता से राजा गइलन, लोग-बाग उनकरा के अचरज से भरल देखत रहल आउर राज दल भी उहाँ से तेजी से धम धम करत गुजर गइल । लोग के एतनो समय ना मिलल कि केहू से केहू कउनों बात कह सके ।

मंदिर के लगे मुड़ते राजा के पुर-दुआर देखाई पड़ल अउर उहाँ पर लउकल कि एगो भारी भीड़ उनकरा तरफ आवत रहल आउर ओह भीड़ में चारों ओर से लोग आके मिलत रहे अउर भीड़ बढ़त जात रहे । रस्तो देखाई ना पड़त रहल । सब जगह लोगे-लोग देखाई देत रहल । एगो विशाल जनसमूह इकट्ठा होत रहे । तब राजा एगो भिक्षु जइसन आदमी के देखलन जेकरा सगें एतना भीड़ रहे कि उनका पर नजर पड़ते राजा के गुस्सा शांत हो गइल । बुद्ध के दयावान आँख राजा के बेयाकुल मुँह के टकटकी नजर से देखके विनम्रता से झुक गइल । राजा के अपना कुँवर के भाव बहुत प्रिय

लागल । राजा उनकर पूरा स्वरूप के पहचान के मने मन अनुमान लगइलन कि उनकर वैभव आ प्रताप सब चीजन से बढ़ के बा, जे वजह से सब आदमी श्रद्धामय, भयमुक्त आ शांतचित होके उनकरा पीछे चलत रहलें । तेहू पर राजा चुप्पी तोड़ले अउर बोललन –"हाय! होनी के इहे होखल मंजूर रहल कि अपने राज्य में राजकुमार दबल गोड़े एह तरह से अइहन । जिनकर जिनगी देवतो के एह संसार में दुर्लभ रहल ऊहे आज गेरूआ वस्त्र धारण कइले सबका दुआर पर भीख माँगत फिरत बाड़न! हमार बेटा! एह विशाल साम्राज्य के उत्तराधिकारी! ई समूचा वैभव तोहरे ह! तोहार जनम ओह राजा के वंश में भइल बा जिनका खाली इशारा–भर से एह धरती पर सब कुछ मिल जाला । उनका हुकूम के पालन में कउनों चूक ना होला । तोहरा त अपना पद के मोताबिक परिधान पहिर के पूरा ठाट–बाट का साथे चमचमात भाला आ घुड़सवारन का साथे लेके आवे के चाहत रहल ह । इ देखऽ! हमार सारा सिपाही रास्ता पर डेरा डलले बाड़न । पूरा नगर तोहरा स्वागत में आज राजद्वार पर खड़ा बा । राजकुमार ! तूँ एतना दिन ले कहाँ घूमत रहलऽ? हम दिन–रात रो–रो के एह मुकुट के भार ढोवत बानी । तोहार घरवाली विधवा–जइसने दशा बनाके बइठल बाड़ी । तोहरा विरह में ऊ दीन–हीन अउर मलीन होके सब ठाट–बाट, सुख अउर ऐश्वर्य के त्याग देले बाड़ी । ऊ तोहरा वियोग में ना त कउनों गीत–संगीत सुने ली अउर ना एको बेर सुन्दर कपड़ा पहिरले बाड़ी । आज तोहरा अइला के खबर पाके ऊ स्वर्ण वस्त्र धारण कइली ह अउर गेरूआ वस्त्र धारी आपन भिखारी पति से मिले खातिर अउर उनकर स्वागत के लेल आतुर बाड़ी । हे बेटा! हमरा के बतावऽ कि ई सब का ह?" बुद्ध उत्तर देहलन, "हे तात! ई हमार वंश के परम्परा ह!" राजा बोललन, "तोहरा वंश में सैकड़न राजा भइलन बाकिर अइसन काम केहु आज ले ना कइल । फिर तूँ कौना वंश के बात कर रहल बाड़ऽ?" बुद्ध जवाब देहलन, "कुल परम्परा मरणशीलन के ना होला, बलुक बुद्ध अवतारन के होला, अउर ई युग–युग तक चलेला । हमरा से पहिलहूँ बुद्ध भइल बाड़न, आगहूँ होइहन । हम ओही में से एगो

बार्नी । बस एतनें कह सकऽ तार्नी । ऊ लोग जौन कइले बाड़न उहे हम करऽ तार्नी । जे कुछु होता ऊ पहिलहूँ हो चुकल बा कि एगो राजा योद्धा के पोशाक में, अपना नगर द्वार पर आपन पुत्र के भिक्षु भेष में स्वागत कइलें ।"

"सत्य, प्रेम अउर आत्म-संयम का चलते सब से शक्तिमान होखल परम प्रतापी राजा से भी अधिक बड़ अउर श्रेष्ठ बा । कर्णधार, उद्धारक आउर सकल जगत के तथागत पहिलहूँ शीश नवइलन, जइसे आज हम नतमस्तक बार्नी । ऊ लोग पितृ-ऋण आउर अलौकिक प्रेम अपना के, उनका जे अमूल्य निधि मिलल, ओकर पहिला फल ले आके आपन पिता के अति प्रसन्न मन से अर्पित कइलें । हे तात! हमहूँ ओही तरह से रउआ के अर्पित कइल चाहऽ तानी ।" राजा चकरा के पूछलन, "कौन निधि?" तब बुद्ध राजा के अंगुली पकड़लन अउर गलियन के बीच शांति आउर धरम के शिक्षा आउर 'आर्य सत्य' के उपदेश देत चललें, जेकरा में सारा के सारा ज्ञान निहित बा। एही बीचे, उनका के अष्टांगो मार्ग समझवलन जे पर चलके जे केहू चाहे, राजा-भिखारी, उच्च जाति या मलेच्छ-नीच केहू चल सकेला । फिर ऊ मोक्ष खातिर आठ उदार सोपान बतइलन, जेकरा के संसार में जे भी नर-नारी चाहे ग्रहण कर सकेला । एह तरह से ई अमिट निर्वाण के अपना के मूर्ख, बुद्धिमान, छोटा-बड़ा, जवान, बूढ़ सब समान रूप से ज्ञान ग्रहण करके संसार के एह भव-चक्र से निकल के अमर निर्वाण के पा सकेला । ऊ सब लोग चलत-चलत महल के दुआर तक जा पहुँचलें । राजा बुद्ध के बार-बार देखत रहलन अउर तृप्त ना होत रहलें । अमृत से भी ज्यादा प्रिय वचन सुनके राजा बड़ा रोमांचित भइलें तथा अत्यधिक भक्ति भाव से उनकर भिक्षा पात्र आपन हाथ में ले लेलन । यशोधरा के आँख अब खुल गइल रहे । उनकरा ज्ञान के नया जोत मिल गइल रहे । अब उनकर तड़प खतम हो चुकल रहे । उनकर आँसू सूख गइल आउर उनका मुँह पर एगो नया कोमल चमक आ गइल । एह तरह से ओह शुभ रात में राजकुल बुद्ध के

जय-जयकार कइलस आउर मंगलमय शांत मार्ग पर चले खातिर प्रविष्ट भइल ।

आठवाँ सर्ग
धर्म-प्रवचन

आजो एगो दूर तक फइलल खण्डहर रोहिणी नदी के किनार पर मौजूद बा । ओह रम्य स्थल के नाम बा 'नागरा'! इहाँ दूर-दूर ले दूब से तोपाइल हरियर मैदान लउकेला । अगर वाराणसी के मंदिर से चलके ईशान दिशा में जाइल जाए त पाँच दिन चलला के बाद अपने के ई सुन्दर जगह मिली जहाँ से हिमालय पर्वत के उज्जर चोटी देखाई देला । ई क्षेत्र पूरा साल फूल आउर धुंध से तोपाइल रहेला । बहत नदी के चमकत स्वच्छ जल से एह क्षेत्र के खेत-बगीचा हरियर लउकेला । इहाँ जमीन के ढलाँव सुगम बा अउर पेड़न के छाया ठंढई देवेला । सदियन से आज तक एह क्षेत्र के आत्मा पवित्र रहल बा । रउरा अगर आजो इहाँ जाएब त पुनीत भाव बरसत दिखलाई दी । ई इलाका बारहो मास सिंचित बागन से भरल-पूरल तथा हरा-भरा रहेला । सांझ के शीतकालीन हवा मानों श्वाँस रूप में उलझल झुरमुट्न पर तेजी से आवत बा आ नक्काशी कइल लाल पत्थर के ऊँचा ढेर पर पड़त बा, जेसे अंजीर के लता के जड़ आउर तना आलंगित बा, अउर लहलहात पत्ता आउर घास के घूँघट से ढँकल बा । साँप धीरे-धीरे लाह के टूटल नक्काशीवाला देवदार के शहतीर पर रेंग के आवत बा जेमें घुंडी बना के गइराई में पड़ल पत्थर पर अपना आप के विराजित कर सके । रंगीन फर्श पर छिपकली घूमत रहे बा उछलकूद मचावत रहे । पीपल के जड़ एह पत्थर के ढेर के बीच से निकल के जाल जैसन फइलल बा आउर चारों ओर पीपर के पत्ता पानी जइसन बिछल बा । जौना आंगन में कबो राजा-महाराजा टहलत रहलन उहाँ अब गिरगिट घूमत बा । जौना जगह राजा के सिंहासन सजत रहे उहाँ अब सियारन के बास बा । टूटल सिंहासन पर भूरा रंग के लोमड़ी निर्भय होके आपन बच्चा जनत बा । सब कुछ बदल चुकल बा । सिर्फ चोटी, जल-प्रवाह, ढलाँवदार मैदान आउर हवा में कौनो बदलाव नइखे

आइल । बाकी सब कुछ, जीवन के सुन्दर दृश्य जइसन बदल चुकल बा ।

ई उहे पहाड़ी ह जहाँ बुद्ध एगो सुन्दर, स्वर्णिम नीला सांझ के समय, जब सूरज अस्त होत रहलें, आपन नियम के शिक्षा देहलन । देखीं! आप एके पवित्र पुस्तकन में पढ़ब कि ऊ आनन्दमय स्थान पर केह प्रकार सभा भइल रहे जहाँ प्राचीन समय में एगो अति सुन्दर उद्यान रहल, जहाँ घूमे खातिर पगडंडी होत रहे, झरना अउर तालाब आ गुलाब के सीढ़ीदार कियारी सुन्दर मण्डप से घेरावल रहत रहे । आज उहाँ खाली पर्वत के चोटी, नदी, खेत अउर हवा ही समय के मार से बचल बा । जहाँ कबो जीवन के भरल पूरल दृश्य विद्यमान रहल आज उहाँ के शोभा नष्ट हो गइल बा । ई उहे जगह ह जहाँ शाक्य वंशी राजा शुद्धोदन राज करत रहलन । पुराना समय में ई स्थान बहुत सुन्दर रहे । एकरा चारों ओर मनोहर विश्राम गृह होत रहे । बीचे बीच रास्ता कटल रहे । नाला पर बाँध बनल रहे । फव्वारा लगातार चलत रहे आउर सरोवर लोग के मन लोभावत रहे । कमल के फूलन के घेरा के भीतर चमकत चउतरा अइसन दिखाई देवे जइसे बहुत बड़ा आंगन मौजूद होखे आउर ओमे बहुत सुन्दर खम्भा खड़ा होखे । राजभवन के एह ओर तोरण लागल रहल, जेकर कलश दूरे से सूरूज के जइसन चमकत लउके । एही जगह पर एक दिन बुद्ध खुदे विराजल रहलन अउर लोग उनकरा के भक्ति भाव से घेरले एकटक दृष्टि डलले देखत रहे । ऊ सब लोग उनकर मुखारविंद से ज्ञान भरल बाणी सुने खातिर उत्सुक रहे, जेके सुनला पर संसार शांति के ओर उन्मुख हो जाला आउर इंसान क्रूर बुद्धि त्याग देवेला।

संसारिक बँधन काटे के आशा में आज करोड़ों जन बुद्ध के अनुयायी बन के धरम मार्ग पर चलत बुद्ध के तीन रतन : बुद्ध, धरम अउर संघ में अनुरक्त हो गइल बाड़न । ओह सांझबेला के सभा में बुद्ध विराजल रहलन । उनकरा बगल में राजा शुद्धोदन बइठल रहलन । अउर सब सामन्त धीरज धरके उनकरा चारों ओर

विराजल रहलें । देवदत्त, आनन्द वगैरह सभे सभा में हाजिर रहे । एह जगह पर धरम दीक्षा दीहल गइल आउर लोगन के संघ में शामिलो कइल गइल । बौद्ध संघ के सब श्रेष्ठ शिष्य –महामोग्गलान, सारिपुत्त आदि विराजमान रहलन । बुद्ध के सुपुत्र राहुल भी उनकर वस्त्र के किनारा पकड़ के आश्चर्यचकित आँखिन से उनकर भव्य मुखमण्डल निहारत रहलन ।

तथागत के चरण कमल के पास यशोधरा आज आपन तन–मन के समस्त पीड़ा भुला के विराजमान रहली । उनका हृदय में आज अइसन शाश्वत प्रेम के आभास होत रहे कि ओके सामने क्षणिक, इन्द्रिय जन्य आनन्द के कुछुओ भी महत्व ना रहे । आज उनकरा एगो अइसन नवजीवन के आभास भइल जेके ना त बुढ़ापा परास्त कर सकत रहे आ नाहीं मृत्यु अपना दंश से ओकर नाश कर पाइत । आज उहो शाक्य–मुनि के संगे इ अपूर्व विजय के भागीदार बनली अउर अपना के धन्य मान के खुशी से फुला ना समात रहली । उनकर गेरूआ वस्त्र के छोर अपना सिर पर डाल के उनकर पवित्र बायाँ हाथ सादरपूर्वक एह प्रकार पकड़ले रहली जैसे कि ऊ उनकर आपने हाथ होखे । एह तरह से ऊ जगदाराध्य के बिल्कुल नजदीक रहली जिनका निकट आवे खातिर तीनों लोक के प्राणी भी अति व्याकुल रहेलन ।

बुद्ध के मुखारविंद से जौन अति प्रभावशाली नव ज्ञान प्रवाहित भइल, हम बुद्धिहीन ओकर सौवाँ अंश रउरा के ना बता सकेनी । वर्तमान समय में जन्म लेके हम ओह दिव्य ज्ञान के बारे में कइसे जान सकेनी ? अगर हम उनकर प्रेम के पहचान के उनकर भक्ति के हृदयंगम करीं त शायद कुछ जान पाईं । विद्वान आचार्यवृंद जे प्राचीन ग्रंथन में लिख गइल बाड़न, उनका से बढ़ के हम कुछुओ भी कह सकीं एतना सामर्थ्य हमरा में नइखे । तथागत जीवन के बहुमूल्य उपदेश देहले बाड़न । हम, ओकर बहुत तनी–सा सार जानत बानीं अउर ओके आपन बुद्धि अनुसार प्रस्तुत करे के

धृष्टता करऽतानी । तथागत के उपदेश अनगिनत लोग मौन रहके आपन कर्ण बिन्दु के सुवासित करत, सुनत रहलन । अउर जेतना लोग सशरीर उहाँ विद्यमान रहल ओसे अधिक लाख-करोड़ के संख्या में अदृश्य श्रोता भी ध्यान लगइले सुनत रहलन । देवता अउर पितृजन सभे उनकर सभा में अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित रहे । ओ समय सब दिव्य लोक जीव-रहित एक दम सूना हो गइल रहे, काहेकि सब प्राणी मृत्युलोक में बुद्ध के प्रवचन सुने खातिर कूच कर गइल रहलन । सूरज देवता के ज्योति मद्धिम ना पड़के, तेज अउर लाली विखेरत रहे और बड़ा लंबा समय से सबका के लुभावत रहल । ऊ ज्योति पर्वत शिखर के नेपथ्य से अनुराग लेहले झाँकत रहे और सब के प्रिय लागत रहे । अइसन लागत रहल मानों रात घाटियन में और दिन पहाड़ पर रूक के तथागत के वाणी सुने खातिर उत्सुक रहे । लागत रहल जइसे स्वर्ग के थकल कौनो साँवर अप्सरा आपन सुध-बुध गँवाके, मोहित खड़ा होखे आउर ओकर घन काला केश के लट चारों तरफ फइल गइल होखे । तारा सब कतार में मोती के माला जइसन पूरा अम्बर में बिखरल रहल । आकाश रूपी नारी के सुन्दर ललाट पर आधा चन्दा मानों बिन्दी जइसन शोभायमान होत रहल । लागत रहल जइसे प्रकृति करिआ रंग के साड़ी पहिरले होखे । उहाँ मंद-मंद सुगंधित हवा अइसे बहत रहल जइसे कउनो विरहनी बाला प्रियतम के विरह में रूक-रूक के श्वाँस छोड़ रहल होखे । एह तरह से उत्तम काल अउर दशा में, बुद्ध अति पवित्र, कल्याणदायी, हृदय के छूवे वाला आउर उदार उपदेश अपना मुखारविंद से निसरित कइलन । चाहे ऊँच कुल के होखे भा नीच, आर्य होखे भा मलेच्छ, कोल होखे, भील भा किरात, जे भी ई अनमोल बचन सुनलस, हालाँकि ऊ लोग अइसन उपदेश पहिला बार सुनत रहे, ओह लोगन के बुद्ध के ज्ञान भरल बात में आपन कल्याण लउकत रहे । उनकर प्रवचन के विशेषता ई रहल कि सभे उनकर उपदेश अपना-अपना मातृभाषा में आसानी से सुनत रहलन । एह प्रकार लोगन के भीड़ में उहाँ खाली देवता एवं पित्तर ही एकत्र ना रहलन । अइसन लागत रहल कि कीट-पतंगा, पशु-पक्षी में भी

ज्ञान के ज्योति जल रहल होखे । जौन अलौकिक प्रेम से बुद्ध के हृदय परिपूर्ण रहल ऊ प्रेम के अनुभूति सभे के होखे लागल रहे आउर उनकर वचन से ओह लोग के आपन मोक्ष के आशा देखाई देवे लागल रहे । भेड़िया, बाघ, बन्दर, भालू, सियार, कुत्ता, हिरण, गीदड़ अउर मानों कई प्रकार के रत्न से शोभित मयूर, मोती के जइसन आँख वाला कबूतर, सफेद चोंच वाला पक्षी, काला कौवा अउर निरामिष–सामिष दूनो प्रकार के पक्षी, इहाँ तक कि जुगनुओं भी उनकर उपदेश के ध्यानपूर्वक सूने खातिर व्याकुल रहे । अत्यधिक पलावनपटु मेढक, गिरगिट, गोह, चितकबरा साँप अउर चंचल रंगीन मछरी, जौन उठत तरंग के साथ उछल जाये, उहो सब ओह समय मानव से जुड़ गइल रहलन, जेकर मन ओह पशु–पक्षियन के जइसन निरमल आ निष्कपट नइखे । अब सब प्राणी के प्रसन्नचित्त मन एह भवसागर के बन्धन से मुक्ति पावे के चाहत रहे । राजा के धरम के मरम सार बतावे खातिर तथागत जौन उपदेश दिहलन ऊ एह तरह से रहे :

ऊँ अमितायु!

जेके मापल ना जा सके ओके अपना बुद्धि से शब्द के सीमा में नापे के अउर बाँधे के कोशिश ना करे के चाहीं । जे अनन्त बा अर्थात् जेकर कौनो सीमा नइखे ओके मानव मन अउर बुद्धि कइसे नाप पाई, कइसे छू सकी? एह से ओकरा नापे के धृष्टता ना करे के चाहीं । बुद्धि का स्तर पर जिज्ञासु होके अगर केहू आपन बौद्धिक कौतूहल शान्त करे खातिर प्रश्न करी त भारी भूल करी । ओही तरह से तुच्छ ज्ञान वाला मानव मस्तिष्क अगर ओह प्रश्न के उत्तर देवे के दुस्साहस करी त ऊहो भूल होई । प्रश्नकर्तो भूल करी, अउर उत्तरो देवे वाला भी भूल करी । एह से ए प्रसंग पर निरर्थक वाद–विवाद में ना पड़े के चाहीं । शास्त्र सब बतावेलन कि मानव जीवन के आरम्भ के समय सब जगह घनघोर अंधेरा फइलल रहल अउर ओ अखण्ड महारात्रि में खाली ब्रह्मे विराजमान

रहलन । अरे मूरख आदमी! न त आदि के फेरा में पड़, अउर ना हीं ओह अस्तित्व के सत्य जानऽ, काहेकि ऊ अनंत के ना त हमार भौतिक आँख देख सकेला अउर नाही बुद्धि से परखल जा सकेला । मानव के आँख से खाली ओकर अवलोकन भर हो सकेला । मानव मन के घोड़ा केतनो उड़ा ले, ऊ ओकर भेद ना खोज पाई । अगर एगो परदा उठ जाई त दृश्य स्पष्ट ना दीखी काहेकि ओकरा पीछे दूसर परदा और फिर ओकरा पीछे अनेक परदा मौजूद होई । एक परदा उठी बाकिर अनेक विद्यमान रही, अउर ए परदन के कउनो अंत ना दिखाई दी । समय के समाप्त भइला पर, जइसे तारा बिना केहू से कुछ पूछले टूट के अपना मंजिल के ओर चल जाला; ई जीवन यात्रा भी एही प्रकार से चलत रहेला । संसार में जीवन-मरण, सुख-दुख, शोक-उल्लास के चक्कर समय के अंतराल के साथ बिना रुकल चलेला, कबो ना रुकेला । ई नदी रूपी जीवन बिना कउनो विश्राम के चलत रहेला । नदी आपन उद्गम स्थान से निकलके, उछलत, कूदत, मचलत, निरंतर अविरल, बिना कौनो विश्राम के बहत सागर में मिल जाली । नदी में एक के बाद एक लहर उठते रहेला । ई सब तरंग देखे में त एक समान, समरूप नजर आवेला । बाकिर का ऊ सब लहर एके ह? कदापि नाहीं । जीवन चक्र भी ठीक अइसने बा । नदी के जल समुद्र से मिलला पर सूरज के किरन पड़ला से भाप में परिणत हो जाला अउर हल्का होके ऊ भाप बूँद आसमान में बादल के घनघोर घटा रूप में घिर आवेला । इहे वर्षा के बूँद में परिणत होके परबत शिखर पर बरस के फिर से धारा के रूप धारण कर लेली । एह तरह से ऊ धारा फेर नदी के रूप में अनंत यात्रा पर निकल जाली । समुद्र-मिलन खातिर नदी फेरू पहाड़ से दउड़ पड़ेली अउर बहत-बहत समुद्र में आपन अस्तित्व के खो देली । नदी के ई चक्र अन्तहीन बनके चलत रहेला । ई जीवन-चक्र भी नदीए के जइसन चलत रहेला । जनम, बालपन, जवानी, बुढ़ापा अउर फिर मौत! मौत के बाद पुनः जीवन के उत्पत्ति अउर फेरू उहे प्रक्रिया । मात्र एतना समझ लेहल पर्याप्त होई कि इ धरा, स्वर्ग और सब धाम मायावी दृश्य ह अउर ई सब परिणाम रूप

बा । दुःखदायी जीवनमरण के ई चक्र घूमते रही जेकरा के केहू कौनो प्रकार से रोक ना सकेला । केहू से प्रार्थना मत करऽ, काहेकि प्रार्थना कइला मात्र से ना त ई अंधेरा समाप्त भइल बा, अउर ना कबहुओ होई । शून्य से याचना मत करऽ, काहेकि ऊ सुन ना पाई, अउर तोहरा दुःख होई । बेकारे हमनी के आपन शरीर के भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्ट देत बानीं । अउर सभे व्यर्थ तप करत रहेला । नाना प्रकार के जतन से केहू के जनम-मरण के चक्कर से मुक्ति नइखे मिले के ।

असमर्थ देवी-देवता के भेंट आदि चढ़ा के कौनो चीज के कामना जन करऽ । अनेक प्रकार से स्तुति करके अउर बलि दे के, रक्त बहा के कउनो चीज मत मांगऽ । तोहरा के मुक्ति के मार्ग अपना भीतर स्वयं ढूँढ़े के पड़ी, काहे कि सब मनुष्य खुद, अपनहीं-अपनहीं भाग्य अउर कारागार के निर्माता बा । मनुष्य के हाथ में देवता से कउनो प्रकार कम सामर्थ आ शक्ति नइखें । देवता, आदमी अउर पशु इत्यादि जेतना भी जीव एह लोक में बा ऊ सभ अपना करम के अनुसार ही सांसारिक कष्ट के भार उठा रहल बा; यथा कर्म सुख-दुःख भोगत बा । मनुष्य के वर्तमान के सृजन ओकर पूरब जनम से होला । वर्तमान से ही ज्ञान होला कि ओकर भूतकाल सही रहल बा कि ना । स्वर्ग लोक में जे देवतागण आनन्द लेत विराजत बाड़े उहो अपना पूर्व जनम के पुण्य कर्म भोग रहल बाड़े ।

सद्कर्मे के प्रताप से हमनीं का स्वर्ग में आनन्दपूर्वक विचरण करीला । अपना द्वारा अर्जित दुष्कर्म के क्षय करके आदमी आपन सृजित दुःख कम करत जाला । कुछो शाश्वत नइखे, सब वस्तु क्षणभंगुर, नाशवान बा । पुण्य करम के प्रभाव भी अंततः समाप्त हो जाये के बा । अउर भोगला से पाप करम के फल प्रभावो नष्ट होत रहेला ।

जौन मनुष्य दास के रूप में जनम लेके अति दयनीय दशा में आपन जीवन अर्जन करत रहे, ऊहो आपन पुण्य के प्रताप से राजा बनके नाना प्रकार के भोग भोग सकेला । दूसर ओर अगर एगो चक्रवर्ती सम्राट अपना खातिर पुण्य कर्म के सृजन नइखन कइले त ऊ फटा चिथड़ा में भिखारी बनके गली में दर-दर ठोकर खात देखल जा सकेला । एह तरह से आदमी सदकर्म करके अपना आप के इन्द्र आदि देवता से भी ऊपर उठा सकेला अउर बुरा कर्म करके कीड़ा-मकोड़ा के योनि से भी नीचे जा सकेला । जीवन के अंत एह दूनो तरह से हो सकेला ।

हे प्रियवर भाई! ई अदृश्य जीवन चक्र अंतहीन रूप से बिना रूकले, अविरल चलत रहेला । ए यात्रा में ना कौनो स्थायित्व बा, न कौनो पड़ाव, ना मन के शांति अउर ना कहीं विश्राम! चक्र के भाँति जे एक समय ऊँचाई के छुवत होला ऊ अगिले छन नीचे गिर सकेला । एह तरह से जीवन के चक्र हमेशे घूमते रहेला, एको छन खातिर रूकेला ना ।

जीवन-मरण के चक्कर से मत बन्हाइल रहऽ, काहेकि हम हमेशे ओह बँधन से बन्हाइल रहीं अउर विमुक्त होखे के कवनो युक्ति ना होखे, अइसन ना हो सकेला । ई बंधन शाश्वत, सनातन सत्य नइखे । प्रियवर! ई ना आखिरी सत्य बा ना अइसन होखे के चाहीं । हे भाई! अगर तूँ एकरा के आपन नियति समझत बाड़ त हमरा कहना के साँच मान कि सब दुखन से शक्तिशाली बा तोहार संकल्प अउर दुःख से मुक्ति पावे के इच्छाशक्ति । अगर तूँ दृढ़ निश्चय करके सत्य के मारग पर अग्रसर हो सकऽ तार त निश्चय ही तोहार कल्याण होई अउर क्रम दर क्रम तोहार कल्याण बढ़त जाई । हमहुँ तोहरा तरह सभे के दुःख से दुःखी, आँसू बहावत रहनी अउर रोवत रहनी । ओह दुखन के देख के हमरो हृदय फाट जात रहल । बाकिर हमरा के आज देखऽ! हम सब बंधन तूड़ के, बुद्धत्व प्राप्त करके आनन्दपूर्वक हँसत बानी काहेकि हम मुक्ति के मार्ग खोज लेले बानी

। ऊ सब लोग सुनऽ अउर समझऽ जे अब तक दुःख के मार से मरत रहल बाड़ऽ । एकरा के साफ-साफ जान ल कि मुक्ति के मार्ग एगो शाश्वत सत्य बा । तूँ लोग अपना स्वार्थ खातिर दुःख के संचय कइले बाड़ और दुःख के वृद्धि कर रहल बाड़ । केहू दूसर तोहरा के एह जीवन-मरण रूपी चक्कर में नइखे बँधले और न अपना इशारा पर तोहरा के नचावत बा । केहूओ तोहरा के मजबूर नइखे करत कि तूँ जीवन-मरण के चक्कर से चिपकल रहऽ और ओह चक्कर के साथे साथे ऊपर-नीचे आवत-जात रह, चिपक कर के आलिंगन करऽ । अउर ओकरा के चूम-चूम के झूठे-झूठे प्रसन्न होखऽ, एह प्रक्रिया में खुने-खून हो जा; तेहू पर एह चक्कर से मुक्त होखे के चेष्टा ना कर । एह चक्कर के पहिआ से तोहरा आँसू के अलावे कुछु अउर नइखे मिले वाला । तूँ ओकरा नाभि से मोहित हो गइल बाड़ऽ । ओकरो में आकर्षण जइसन त कुछ नइखे । तूँ केहू के आदेश से कष्टदायी, अश्रुपूर्ण, सांसारिक वस्तुअन के भोग-विलास से बँधल जीवन नइख जीयत बलुक तूँ स्वतंत्रतापूर्वक एकरा के अपने आप चुनले बाड़ अउर फेरू बार-बार दुष्चक्र में फँसल कष्ट भोगत बाड़ ।

आवऽ! आज हम तोहरा के अत्यधिक सुन्दर, शाश्वत सत्य मार्ग के दर्शन कराईं। स्वर्ग-नरक से परे, आसमान के सब ग्रह एवं तारा से भी ऊपर, ब्रह्मलोक से भी दूर एगो सनातन शक्ति विराजल बा, जेके एह संसार में 'धरम' के नाम से जानल जाला । ऊ शक्ति सिर्फ नियम के अनुपालन करे ले अउर सबके कल्याण खातिर हितकारी बा । ओह शक्ति के न कौनो आदि बा और न कौनो अंत । ओकर नियामक अपरिवर्तनीय बा । सत्योन्मुखी होके ऊ सृष्टि के गति प्रदान करे ले । ओकर स्पर्श खिलल गुलाब पर स्पष्ट दिखाई देला । ओकर हाथ के सुन्दर कलाकारी के चमत्कार से कमल के फूलन के दल खिल उठेला । ए धरा के गरभ में ऊ शांत बीज के रूप में समाहित होके नव वसंत ऋतु के सिरिजन करे ला । अपना कला से आकाश के छाती पर बादल जइसन तस्वीर अंकित करेला । मोर के सिर पर बनल चन्द्रमुकुट भी ओही कला के प्रदर्शन करेला ।

नक्षत्र आ ग्रह ओही के हुकुम पर घूमे लन । बादल में बिजली के चमकल आ वर्षा होखल, पवन के चलल ई सब ओही के विधि के विधान बा । ऊ मानव हृदय के अति घोर अन्हार से बाहर निकाल के ओकरा जगह अति श्रेष्ठ हृदय के निर्माण करे ला । ओही तरह से ऊ छोट-छोट अंडा से पक्षी के गरदन बाहर निकाले के प्रबंध करेला । ऊ शक्ति हर घड़ी, हर छन अपना काम में हमेसे लागल बा । ऊ काल-कालवित हो रहल पदार्थ के भी सुन्दर विनियोजित करे ला । ओही के विधान से मधुमक्खियन द्वारा शहद के छत्ता बनावल जाला । ओही के शक्ति से चींटी हमेशा आपन मार्ग पहचान के आगे चले ले । सफेद कबूतर ओही के परताप से आसमान में उड़े लन । ओकरे से मिलल शक्ति से गरूड़ आपन पाँख पसारेला अउर तेज गति से उड़के आपन शिकार करेला । उहे शक्ति मादा भेड़िया के अपना बच्चा के पास भोजन देवे खातिर भेजेले । जेकर केहू भला करे वाला नइखे ओकरो भला ऊ शक्ति करे ली । ऊहे शक्ति केहूओ के कुंठित ना होखे देले आउर जे जइसन बा ओकरा खातिर ओकरे रूचि के हिसाब से प्रबन्धो कर देले । उहे शक्ति माता के स्तन में अमृतमय दूध के उतारेले अउर ऊहे साँप के जीभ पर भी दूध जइसन जहर पहुँचावेले । आसमान रूपी मंडप के तारा अउर ग्रह-नक्षत्र के भी उहे सजावेले । संसार में सब ताल आ सुर के निर्माण करके सबका के अपना धुन पर नचावेले । उहे धरती के भीतर सोना, चाँदी, मणि, मोती रूपी अनमोल धरोहर के छुपा संजोवत रखेली । हरा-भरा मनोहर वन के बीच आदमी खातिर ऊ दिन-रात तरह-तरह के वनस्पति रूपी खजाना खोलले रहेले । शाल के पेड़ के नीचे पड़ल बीया के पोसेले अउर फिर अंकुर के फाड़के आपन युक्ति से धीरे-धीरे कोमल कुसुम सृजित कर लेले । उहे खा जाले, उहे बचावेले, उहे वध करेले । ऊ फल के विधान मात्र छोड़ कुछो ना करे ले ।

जीवन रूपी करघा पर प्रेम रूपी सूत तानेले । ओही से जीवन–मृत्यु के करघा बनेला । उहे बनावेले, उहे बिगाड़ेले या फिर बिगड़ला पर उहे सुधारो करेले । ओकर कर्त्तव्य परायण हाथ काल दर काल चलत रहेला तब जाके कहीं कौनो मनोरम वस्तु के

अपना करम के प्रतिफल आज नाहीं त कल जरूर पाई । एही नियम के मोताबिक केहू के हत्या करे वाला के खुद हत्या होई काहेकि ओकरा कर्म के फल भोगहीं के बा । उहे नियम से बँधल अत्याचारी शासक आखिरकार आपन समस्त साम्राज्य गवाँ देवेला । अमृतवाणी बोले वाली जीभ एकरा सामने जड़ जइसन हो जाली । चोर अउर ठग जेतना धन-दौलत एह संसार से चोरावे लन, ओकर दुगुना भरे लन । ई शक्ति सत्य मार्ग के स्थापना में हमेशे लागल रहेलें । एह शक्ति के केहुओ एकरा राह से ना भटका पाई आउर ना केहू रोक पाई । मानव-जीवन में प्रेम के प्रसार करके जीवन में पूर्णता अउर शांति प्रदान कइल ही एह शक्ति के लक्ष्य बा । एह से हे बंधु! एह नियम के हिसाब से चलल सबका खातिर श्रेयस्कर बा ।

सब नीति अउर शास्त्र में एके गो सत्य एवं खरा बात कहल गइल बा कि जौन कुछ भी एह जनम में हमार साथ घटत बा, हमार पूर्व जनम में कइल करम के फल बा । पूर्व जनम में होखल पाप करम से शोक अउर दुःख के निर्माण होला जबकि पूर्व जनम के पुण्यन के प्रसाद स्वरूप आदमी सब सुख भोगेला । खेत-खरिहान हमनीं के साफ-साफ ई बात समझा देला कि जइसन बोवब, ओइसने काटब । इहाँ अन्न से अन्न अउर तिलहन से तेल उपजेला । अगर हम बबूल के पेड़ बोवब त ओकरा से काँटा, झाड़ी अउर विष लता ही काटब । आम कहाँ से प्राप्त होई? एह तरह से ई शून्य एह संसार में कइल कर्म के लगातार परखत रहेला अउर एही के प्रतिफल में आदमी के भाग्य लगातार बनत रहल बा । हमनीं के पिछला जनम में जौन अन्न, तेल बोवनी ओही के काटे खातिर हमनीं के जनम भइल बा अर्थात पिछला जनम के पाप-पुण्य से अर्जित सुख-दुःख भोगे खातिर हमनीं के ई जनम भइल बा । बेर, बबूल, काँटादार झाड़ी, विष के बेल, जौनो कुछ उग रहल बा ओह सब के फल मानव के खाहीं के होई, अर्थात् हर कष्ट झेले के पड़ी अउर फिर ऊ दुःख झेल के फिर मर जाएके पड़ी । बाकिर जे उचित उपाय कर एह सब घास-पतवार के जड़ से उखाड़ देला अउर

ओकरा जगह धरती पर श्रेष्ठ बीज बोअत जाला, ओकरा खातिर ई धरती साफ, सुन्दर फसल से लहलहा जाली अउर प्रचुर मात्रा में फसल के पैदावार से धरती भी प्रसन्न हो जाली । जे केहू व्यक्ति जिनगी पाके देखेला कि दुःख के सिरिजन कहाँ से होता, अउर शरीर के ऊपर जौन बोझा पड़ेला ओके धीरज से सहत जाला, जौन भी पाप पूर्व जनम में कइल गइल रहे ओके फल सत्य के सामने प्रस्तुत होके स्वीकार कर लेला अउर पूरा दण्ड भर देला, अहंकार के त्याग के स्वच्छ अउर निरमल मन के निर्माण करेला, स्वार्थ सिद्धि में ओकर रत्ती भर भी रूचि ना रहेला, ऊ सब मनुष्य के प्रति पुण्य करम के संचय कर लेला । अगर केहू नम्र बनके अपना साथ भइल अपकार सह लेला अउर ओकरा बदला में अवसर पाके जेतना बने ओतना सबका प्रति उपकार करत जाला अउर यदि ऊ दिन-प्रतिदिन सहृदय, पवित्र, धैर्यवान, न्यायप्रिय, सुशील, सच्चा, मृदुभाषी अउर गंभीर हो जाला अउर यदि प्रतिक्षण जड़ समेत तृष्णा के उखाड़ फेंके में तल्लीन रहेला त ऊ अवश्य जीवन में एक दिन वासना के नाश कर लेला । जीवन-लीला के अंत भइला पर अशुभ अर्थात् बुरा कर्म के कौनो भाग शेष ना रही अउर पूर्व जनम के लेखा पूरा तरह से पाई-पाई चुक जाई । फिर खाली शुभे कर्म के प्रभाव शेष रही आउर ऊ पुण्य कर्म के प्रभाव से मंगल कार्य में ही तल्लीन रही, ओके फिर ऊ ना मिली जेके हमनीं के जीवन कहीले । जौन ओकरा के जन्म जन्म में घेरत रहल ह ऊ समाप्त हो जाला । ओकरा ऊ गंभीर लक्ष्य प्राप्त हो जाला जेकरा खातिर बार-बार मानव ई शरीर धारण करे ला । ऊ जीवन के जनम-मरण के चक्कर से मुक्त हो जाला अउर जौन कष्ट भोगला खातिर ई मानव शरीर मिलल बा ओ सबके भुगतान हो जाला; मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य पूरा हो जाला । फिर ओके वासना के ई जाल ना सताई आउर ना मानव के मत्था पर फिर से तनको कलंक लागी । संसार के सुख-दुःख ओकर चिर शांति के भंग ना कर पाई । जीवन-मरण के चक्कर ओकरा के फिर से फँसा ना सकी । ऊ परम पद पूर्ण निर्वाण के प्राप्त कर लेला । ई जीवन चक्र के पार करके ऊ नित्य परम शांत

जीवन में विलीन हो जाला । एमे कउनों भ्रम नइखे कि ऊ धन्य-धन्य होके बिना कउनों करम के परम शक्ति में अइसे मिल जाला मानों ओस के एगो बूँद अन्ततोगत्वा सागर में जाके समा गइल होखे ।

ओं मणिप्दमे हुं

कर्म के इहे सिद्धान्त ह अउर ओके जान लेवेके चाहीं । जब पाप करम के फल अर्थात कष्ट भोगल खतम हो जाला तब जीवन के प्रकाश पुंज के अंत ओही तरह से हो जाला जइसे दीया के लौ आपन तेल के खतम भइला पर, बुता जाला । तब इह लीला के पूरा भइला के साथे-साथ मृत्यु रूपी काल भी समाप्त हो जाला।

हे जीवन यात्रा के पथिक! हमनीं के कबो ई बात नाहीं कहे के चाहीं कि 'हम रहनी', 'हम बानी', या 'हम होखब।' पथिकन के समान एक घर से चल दूसरा घर में वास के चिंता मत करऽ कि एगो घर छोड़ब अउर दूसरा घर में वास करब, पुरान समय के कौनों घर के सुखद भा दुखद वास के याद मत कर ।* जे समय प्राणी मरी ओ समय कुछ शेष ना बाँची खाली करम फल के छोड़ के । जौनो कुछ चैतन्य बा ओकरो नाश हो जाला । आत्मा एगो शरीर छोड़के दूसरा शरीर में वास ना करेली, खाली प्राणी के करम फल ही अनेक तरह से ओकरा पास रह जाला । जौन समय प्राणी के मउअत होला ओही समय आत्मा और चेतना भी ज्वाला में जल के भसम हो जाली अउर प्राणी के करम फल के अतिरिक्त कुछु शेष ना

---

* बौद्ध लोग आत्मा के नश्वर माने ला; ओकरा के अमर ना कहेला । ऊ लोग एह कर्मवाद के विलक्षण प्रकार से अपना मत के अनुकूल कइले बाड़न । प्राणी के मृत्यु भइला पर ओकर सब खंड-आत्मा आदि नष्ट हो जाला, खाली कर्म शेष रह जाला जेसे फिर नया खण्ड के रचना होला अउर एगो नया प्राणी उत्पन्न होला । पिछला प्राणी के साथ एह नया प्राणी के कर्मसूत्र संबंध बँध जाला अउर एह तरह दूनो के एक प्राणी कहल जा सकेला ।

बाँचेला । एही कर्म फल से फिर नया खण्ड के रचना होला अउर एगो नया प्राणी उत्पन्न होला । एह प्रकार जौन नया प्राणी जनम लेला ऊ अपना खातिर नया घरौंदा बनावे में अइसे तल्लीन हो जाला जइसे कि एगो रेशम के कीड़ा अपना खातिर सूत कात के फिर नया कोष बना लेला । ऊ प्राणी अपना खातिर सांसारिक तत्व अउर गुण के ओइसहीं रचना करेला जइसे एगो साँप अपना केचुल के छोड़ के नया विष के दाँत के सिरिजन करेला । समय के साथे ई नया जीवन विभिन्न शुभ-अशुभ दिशा के ओर अग्रसर हो जाला अउर जीवन लीला पूरा भइला पर एक बेर फिर काल के क्रूर चक्र एकरा के समाप्त कर देला । ई जीवन के समाप्ति पर फिर खाली शुद्ध-अशुद्ध कर्म शेष रह जाला अउर फिर प्राणी के फिर से उहे झंझावत आउर नया कष्ट भोगे के पड़ेला । जब कौनों पुण्यात्मा एह संसार से प्रस्थान करे ला तब एह संसार के संपदा में कुछ बढ़ोतरी हो जाला अउर मंद-मंद सुगन्धित पवन बहे लागेला जैसे मरूस्थल से कौनो नदी बालू के बीच में लुप्त हो के कवनों दोसरा जगह में परिशुद्ध हो के निकल जाली । एही तरह से शुभ-कर्म से पुण्य अर्जित कइल जाला जेमे पाप ओकर निर्बाध प्रगति में बाधक ना बन सके । एह संसार में धरमे हमेशे सबका ऊपरू रहल बा । कल्प के अंत तकले ओकर अचूक विधि चलत रहेला अउर ऊ कबो ना ओराला। अज्ञानता ही तोहरा के एह भवसागर के भँवर में फँसावेला अउर तूं मिथ्या दृश्यन के साँच मान के ओकरा जाल में फँसते चल जालऽ । तूँ कुछ पावे के इच्छा राखेलऽ अउर फिर नाना प्रकार के छदम् रूप पाके ओही में उलझ जालऽ जे तोहरा से छल करेला, धोखा करेला और तोहरा पर प्रहार करेला । जे एक तरफ कामसुख आदि विषयन के सेवन अउर दूसर तरफ शरीर के क्लेश देवे के प्रक्रिया एह दूनों के त्याग कर मध्यम मार्ग* के ग्रहण करी, ऊ एह

* कामसुख आदि विषयन के सेवन अउर शरीर के क्लेश देहल, इ दूनु दो छोर के त्याग के, बीच के मार्ग के मध्यम मार्ग कहल जाला ।

भवसागर से पार हो जाई । ओकर बुद्धि उ शांति के मार्ग खोज ली । जे ध्यानस्थ हो के निर्वाण प्राप्ति के राह पर बढ़े के चाहत बा ऊ ध्यानलगा के सुने, काहेकि अब हम चार 'आर्य सत्य' के बारे में बतलावे जात बानीं ।

आर्य सत्य

पहिला आर्य सत्य ह – 'ई जींवन त दुःखमय बा ।' ई जीवन जौन तोहरा के बहुते प्रिय लागत बा एकरा में खाली दुखे दुख बा । एह जीवन में दुःखे दुःख मिलेला, सुख कबो ना आवेला । अगर कभी एह जीवन में सुख आइयो जाला त ऊ एक पल खातिर ओइसहीं आवेला जइसे आकाश में उड़त पंछी एक पल खातिर आपन झलक देखा के उड़ जाला । आखिर में खाली दुःख अउर दुःख रह जाला । जनम के समय अपार दुःख आवेला । शैशवावस्था के असहाय दिन के समय के दुःख बहुते जादे कठोर होला । फिर वृद्धावस्था के दर्द आउर साँस बंद कर देवे वाली पीड़ा, मृत्यु के दुःख अत्यन्त विकराल होला अउर एह तरह से पूरा जिनगी दुःख के सहते-सहते बीत जाला । प्रेम के आग बहुत मिठास भरल होखेला, बाकिर ऊ होठ जौन चुंबन कइला में ना अघाला, उहो, और जे पयोधर जे अति आनन्द देवे वाला बा, सब एक दिन आग के लपट में भस्म हो जाला । संग्राम में वीरता अउर शौर्य के प्रदर्शन निश्चये भव्य बा । बाकिर ओह वीर सम्राट के बलवान भुजा के अन्ततः चील व गिद्ध नोंचे लन । सौंदर्य से भरल ई वसुन्धरा सुन्दर लउकेला बाकिर ध्यान से देखऽ! इहाँ के हर चीझ घात लगवते दूसरा के हनन करके फिर खुद हनन के प्राप्त हो जाली । ई नीला आसमान नीलम के समान चमकत बा बाकिर अन्न के बिना जब व्याकुल लोग त्राहि-त्राहि करके मरे ला त एको बूँद पानी भी ना देवे ला । कौनो दुःखी भा शोकग्रस्त इंसान जे आपन प्रिय परिजन के खो देले बा भा जे लाठी टेकत चल रहल बा, ओकरा से जा के पूछऽ, "ई जीवन तोहरा कइसन लागत बा?" ओकर उत्तर इहे

होइ–"हमरा से ढेर ज्यादा बुद्धिमान त जनमल शिशु बा जे जनम लेहते रोवेला काहे कि ओकरा पता होला कि जौना जीवन–यात्रा के ऊ शुरू कर रहल बा ऊ दुःख के अंतहीन सागर बा ।"

दूसर सत्य ह –'जीवन के दुःख के कारण बा, अउर ऊ कारण ह – तृष्णा, इच्छा ।' कौन अइसन दुःख बा जौन तृष्णा से ना जन्मेला ? आयतन* अउर स्पर्श जब बहुत तरह से इन्द्रिय वस्तु से संबंध बना लेवेला तब कामरूप ज्वाला पैदा होला । जब एह तरह से कामरूपी ज्वाला जरेला तब आदमी सब कुछ भुला के सपना के दुनियाँ में विचरन करे लागेला । हम अपना आस–पास अहम् भाव के मूर्ति अउर ऊ काल्पनिक मूर्ति के चारो ओर आपन संसार बसा लेवेनीं जेकरा आगे ना कुछ सुनाई देला आउर ना देखाई देला । कल्याणकारी मधुर संदेश कि "हे मानव ! आसक्ति के त्याग के सत्य मार्ग पर चलऽ" तोहार कर्ण बिन्दु तक कबो पहुँचिये ना पावेला । गहरी तृष्णा अउर वैभव के कामना ई धरती पर कलह के प्रसार करे ली जेकरा कारन भोग–विलास अउर ऐश्वर्य में डूबल आदमी अतृप्ति के भाव में एवं संतुष्टि से वंचित दीन–हीन होके लोर ढरकावत रहेला अउर रोवत–बिलखत रहेला । काम–क्रोध से आदमी के मन में ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा, धोखा आदि कटुभाव आवेला । ई कटु भाव दिने–दिन विकराल होत जाला । एकरा कुप्रभाव से जीवन वर्ष दर वर्ष रक्त–रंजित होत जाला । जहाँ कबो अच्छा धन–धान्य उपजत रहे उहाँ आज विष वृक्ष आपन जड़ फइला देले बा जेकर नतीजा ई होला कि बड़ा वीभत्स, क्रूर एवं कटुता से भरल फल–फूल ही चारों ओर दिखलाई पड़ता अउर ऊ जगह जहाँ उत्तम बीज अंकुरित हो सकी, लउकते नइखे । जीवन के एह तृष्णा से जनमल विष से पराजित प्राणी आपन प्राण त्याग देवेला । कर्म

---

* बौद्ध शास्त्रन में मन सहित पाँच इंन्द्रियन के समूह के 'षडायतन' अउर विषय के स्पर्श कहल गइल बा ।

सिद्धान्त के मोताबिक सांसारिक योग से आतुर ऊ दुबारा फिर जनम लेवेला । इन्द्रिय के साथ कर्म बंधन के अनुसार संपर्क स्थापित भइला पर ओकरा फिर से नया माया मिलेली अउर ऊ फिर से अहम के संसार के सिरिजना कर लेला, अउर फिर एगो नया कहानी शुरू हो जाला ।

बंधु! तीसर आर्य सत्य ह – 'दुःख के निवारण संभव बा ।' दुःख निवारण से अपार आनन्द के अनुभूति होला । ई अनुभूति तब होखेला जब प्राणी आपन सब तृष्णा, अनुराग अउर आसक्ति पर विजय पाके, मन से वासना रूपी विष वृक्ष के जड़ से उखाड़ फेंक के आपन अंतस में जा के कलह के धैर्यपूर्वक शांत कर देला । इहे सच्चा प्रेम आदमी के तन-मन में नया ऊर्जा के संचार करेला अउर एकरा प्रताप से आदमी आपन 'स्व' पर नियंत्रण पा लेला, स्वयं के जीत लेला अउर तब ऊ अलौकिक आनन्द के अनुभूति करेला जौन देवी-देवता के पहुँच से भी आगे बा । ई अनमोल निधि हमनीं के संजो के रखे के चाहीं काहेकि इहे हमनी के सच्चा संपत्ति बा ।

दया, उपकार, दान, मधुर वाणी आ सात्विक व्यवहार से ई स्थायी कोष लगातार बढ़त रहेला । मनुष्य के हमेशा एह अनश्वर धन के संचय करेके चाहीं काहेकि इहे एगो सम्पत्ति बा जौन कौनो लोक में गइला पर नष्ट ना होला अर्थात अच्छे कर्म मनुष्य के मरणोपरान्त साथ जाला । सोचऽ! साथ का जाई? – अपने कइल गइल अच्छा बुरा-कर्म! जीवन-मरण के ई झंझावात से मुक्ति मिल जाई, अगर कर्म के लेखा-जोखा समाप्त कर दिहल जाये, जइसे तेल के समाप्ति पर लौ ना उठ सकेला । तब ई शरीर रूपी घर से बेघर होला के औपचारिकते ही बाकी रह जाला अर्थात् शरीर-मुक्त होखल मात्र बाकी रह जाला । एह प्रकार इंसान के अपार शान्ति के अनुभव होला ।

चौथा आर्य सत्य ह – 'मध्यम मार्ग' । इहे पथ सर्वश्रेष्ठ अउर सुरक्षित बा । ई मार्ग एतना सुगम अउर सुहावना बा कि एकरा पर केहू चल सकेला । असल में इहे मार्ग मात्र सच्चा मार्ग बा । एह मार्ग के आठ सोपान बा । इहे अति सुन्दर मार्ग प्राणी के सीधा शांति के ओर लगातार बढ़ावत रहेला । बर्फ से ढँकल पर्वत शिखर, जेकरा चारों ओर सोना से जड़ल मेघ छाइल रहेला, उहाँ पहुँचे के बहुत सारा रास्ता बा । कुछ मार्ग अति सुढाल या सुगम अउर कुछ अति कुढाल भा दुर्गम बा । बाकिर ई सब मार्ग पथिक के शान्ति-धाम तक पहुँचावे ला । जे समर्थ बा ऊ ए दुर्गम पर्वत शिखर पर कूदत-फानत अउर अटपटा राह से जल्दी पहुँच जाला । जे असमर्थ, असहाय, कमजोर बा ऊ सुगम्य मार्ग पकड़ संभलत चलत, बीच-बीच में रूकत, बहुत सारा चक्कर लगा के पहुँचेला । अइसन बा ई अष्टांग मार्ग, अति प्रकाशमान जे अन्ततः पथिक के ओकरा लक्ष्य, शांति-धाम तक पहुँचाइए देला । दृढ़संयमी अउर दृढ़संकल्पी प्राणी एह मार्ग के कठिन चढ़ाई के भी आसानी से पार कर लेला । निर्बल-जन आशा से भर आहिस्ता-आहिस्ता एह मार्ग पर चलत जाला अउर ऊहो आखिरकार कबो ना कबो अपना लक्ष्य तक पहुँचिए जाला ।

एह मार्ग के पहिला सोपान बा 'सम्यक दृष्टि' । एह मार्ग पर पाप के त्याग के धरम के मोताबिक चलत रहेके चाहीं । कर्म के सार ही भाग्य के निर्माता ह । एह खातिर इन्द्रियन पर नियंत्रण करके विषय-वासना से निवृत हो जा । ई कबहुओ मत भुला कि जइसन बीज होई, ओइसने फल मिली । अगर हम बबूरे ही बोवब त काँटे काटब । आम के बीज लगाएब त आम के मीठा फल खाएब । गन्ना बोअब त जौनो कुछ प्राप्त होई ओकरा रेशा-रेशा से मिठास निकली । ई कुदरत के शाश्वत नियम ह अउर एकरा में कौनो भेद-भाव भा बदलाव के राह नइखे । 'सम्यक संकल्प' ई मार्ग के दूसरा सोपान ह । सम्यक संकल्प होला से मनुष्य के हृदय में सब जीवन के प्रति हित के भावना बन जाला, सच्चा मार्ग से

चित्त कबो विचलित ना होला । क्रोध अउर लोभ के दमन करके सब निर्दयता त्याग द, जेकरा से जीवन गति खुशबू से भरल हवा के समान हो जाए । दूसरा के प्रति सही सोच से, मन के दूषित ना कइला से, मन के पवित्र अउर कल्याणमय रखके हमनीं का आपने कल्याण करेनीं । 'सम्यक वाणी' एकर तीसरा अंग ह । शब्दन के उच्चारण एह प्रकार करे के चाहीं मानों मुँह के भीतर राजा विराजल होखे अर्थात जइसे एगो राजा सोच-समझ के संयमित, संतुलित वाणी के उच्चारण करेलन ओही तरह से हमनीं के नपल-तुलल शब्दन के व्यवहार करे के चाहीं । अपना मुँह से साचिए-समझ के कुछ उच्चारण करे के चाहीं । तू जौन शब्द बोलऽ, ऊ शांत, मीठा अउर सबका मन के भला लागे वाला होए के चाहीं । ई मार्ग के चउथा अंग 'सम्यक कर्म' ह । शुभ कर्म कइला से पुण्य के सृजन होला अउर पाप कर्मन के नाश होला । ई संसार में तू जेतना भी सद्कर्म करबऽ ऊ तोहार अच्छाई बढ़ाई अउर बुराई के नाश करी । शुभ कर्मन में तोहार प्रेम अइसे झलके जइसे कि सफेद चाँदी के धागा पारदर्शी मोतियन के माला में लउक जाला । 'सम्यक आजीविका' एकर पाँचवाँ अंग ह । आदमी के आजीविका अइसन होखे के चाहीं जौन दूसरा के कष्ट से उपजल ना होखे । समाज में वर्जित कर्मन से जीविका ना चलावे के चाहीं । मांस बेचल, मदिरा अथवा दूसर नशीला पदार्थ के खरीद-बिक्री से जीवन चलावल बुरा कर्म अर्जित करेला । एह से एकरा से बचल जरूरी बा । 'सम्यक व्यायाम' से आलस अउर शिथिलता दूर करे के चाहीं । मनुष्य के उचित परिश्रम करके तन अउर मन के अशुद्धि हटावे के चाहीं । 'सम्यक स्मृति' से मनुष्य के ज्ञान स्थायी होला अउर इहे स्थायी ज्ञान हमेशे साथ रहेला । ऊपर कहल सात अंग के साथ मनुष्य आठवाँ अंग 'सम्यक समाधि' पर आ जाला । इहाँ पहुँचके सुख-दुःख सब में मनुष्य समभाव हो जाला । अपना हृदय के सत्य से विचलित मत होवे द । एह तरह से जौन आदमी समान भाव से चित्त के एकाग्र कर ली ऊ मनुष्य मुक्ति के उपाय खोज ली ।

जइसे एगो पक्षी आपन सामर्थ्य से आसमान में एगो ऊँचाई तक ही जाला ओही तरह से शक्ति ना भइला से ऊपर जाके आकाश में मत उड़ऽ। नीचे के जमीन पर सुकर्म करत चलत रहऽ। पथ के शुरूआत से ही सद्कर्म द्वारा शक्ति जुटावत चलऽ । ओही मार्ग के पहिले पकड़, जौन तोहार जानल-पहचानल बा । उहाँ मार्ग में रूक के तब फिर आगे बढ़ऽ । ग्रहस्थ जीवन में पत्नी तोहरा के अति प्रिय लगिहन बाकिर तोहरा के इहो विचार करे के चाहीं कि तोहार खान-पान, दोस्त-यार सुखी कइसे होखस, काहेकि बिना सद्कर्म के सच्चा सुख ना मिली । दान देहल अउर दयावान बनल सुन्दर कर्म के सृजन करेला जबकि झूठ भय के जनम देला । ओह जीवन के अपनावऽ जौन मंगलमय होखे। पाप के खत्म करके सुख के नया सीढ़ी बनावऽ । संसारिक मोह-माया के बीच से आपन मार्ग निकाल के सही, सुन्दर अउर कल्याणकारी मार्ग पर हमेशा बढ़त रहऽ । एह तरह से तू ऊँच जमीन के तरफ बढ़त चल जइबऽ अउर पाप कर्म के भार हल्का करके आसानी से विकास कर लेबऽ । एह तरह तोहार संकल्प मजबूत होत जाई अउर धीरे-धीरे सारा मायावी बन्धन क्रमशः टूटत जाई, अउर तोहरा दिव्य प्रकाश के मार्ग प्राप्त हो जाई।

मुक्ति मार्ग के पहिला स्थिति जे प्राप्त कर ली ऊ मनुष्य 'श्रोतापन्न' कहलाला । ऊ आपन समस्त डर त्याग के हमेशा पुण्यकर्म में तल्लीन रही अउर आखिर में मंगलमय निर्वाण धाम प्राप्त कर ली । दूसर अवस्था 'सकृदागामी' के ह जेमे तीनों वर्जना हट जाला । ओकर बुद्धि अउर कर्म नेक हो जाला । हिंसा, आलस आउर काम भावना से ऊ दूर हो जाला अउर ओकरा के खाली एक जनम अउर लेवे के पड़ेला । एकरा बाद 'अनागामी' के तीसर अवस्था प्राप्त होला । आलस, हिंसा, काम, विचिकित्सा आउर मोह के त्याग 'पंच प्रतिबंध'* से मुक्त हो जाला । अब उनकर एह

---

* पंच प्रतिबंध - आलस्य, हिंसा, काम, विचिकित्सा, मोह

पृथ्वीलोक में जनम ना होई अउर एह संसार के त्याग के ऊ दिव्यलोक में स्थान पा ली । 'अर्हत' के अवस्था ई सब अवस्था में सर्वोपरि बा, जब जनम-मरण व सांसारिक बंधन तृण मात्र भी शेष ना रही । सब दुःख से परे, सारा मोह-माया से मुक्त होके ऊ ओह पद पर आसीन हो जइहन जेकर सिर्फ बुद्धगण ही अधिकारी बाड़न । अर्हत्व पइला पर मनुष्य के स्थिति अइसन हो जाला जइसे कि ऊ हिमालय के सबसे ऊँच चोटी पर विराजल होखे अउर ओकरा ऊपर नीला आसमान के अलावा और कुछु ना होखे । सारा देवता गण उनकरा नीचे रह जालन । तीनों लोक में अगर प्रलय भी आ जाई तब भी ऊ आपन स्थान से ना डिगिहें । सृष्टि के समस्त जीव अब उनकर हो जाला अउर उनकरा हित में मृत्यु के भी मृत्यु हो जाला । उनकर जीवन सब रूप में विद्यमान हो जाला । उनकरा खातिर अब क्षुद्रकर्म बंधन ना बनी अउर ना उनकरा खातिर रोज नया आबन्धन के निर्माण होई । ऊ सब कुछ पावे में समर्थ हो गइलन, बाकिर अब उनकर सब कामना, इच्छा मर जाला । ऊ अहं भाव छोड़के एह पूरा संसार के पूर्ण रूप से आत्मीय भाव से विभोर हो निहारे लन । अगर तोहरा के केहू बतावेला कि 'नष्ट हो गइल ही निर्वाण कहाला' त निश्चय ही तू ओकरा के कह द -'तू झूठ बोलऽ ताड़ऽ। तोहरा ई रहस्य पता नइखे ।' यदि केहू कहता कि 'जीयल ही निर्वाण कहल जाला त तू कह -'व्यर्थ भ्रम पैदा करऽ ताड़ऽ।' निर्वाण के त केहू अभी तक सुन अउर कह, समझ ना सकल बा। एह से व्यर्थ में विवाद काहे बढ़ावल जाव? हमार टिमटिम करत जीवन-दिया से जौन उजियारा फइल रहल बा ओकरा आगे कौन प्रकाश बा ओके जाने वाला केहू नइखे?

एह मार्ग पर बढ़ चलऽ! द्वेष से बड़ा जग में कउनो दुःख नइखे । राग से बड़ क्लेश अउर इन्द्रियन के भोग से बड़ा कउनो कष्ट नइखे । जे पाप के मर्दन करत जाला ऊ पवित्र नर मुक्ति के पथ पर आगे बढ़त जाई । एह मार्ग पर प्रवेश कर! एही में ओह सुधा के स्त्रोत बा जेकरा से सकल प्यास बुझेला अउर भरम दूर हो

जाला । एकरे में ऊ अमर, मनोहर फूल खिलेला जौन पथ पर पाँव के तले फूले-फूल बिछ जाला । भाई ! एही में ऊ सुख के घड़ी प्राप्त होई जौन परम मधुर लागे ला । ई शिक्षमाण धर्मरत्नन के सबसे बढ़ के मानऽ! अउर एकरा के अमृत से भी ज्यादा मधुर जानऽ ।

जेतना तोहार सामर्थ्य हो ओतना एह संसार में लेन-देन करऽ। बाकिर लालच में आके छलपूर्वक कुछु मत ल । झूठा साक्षी मत बनऽ अर्थात झूठा गवाही मत द । जान-बूझ के केहु के व्यर्थ निन्दा मत करऽ। हमेशा साँच बोलऽ काहेकि साँच शुद्धता के खान होला । विष समान मदिरा के पान मत कर काहे कि मदिरा पान मनुष्य के बुद्धि भ्रष्ट करके ओकर समस्त ज्ञान हर लेला । जेकर अन्तःकरण शुद्ध बा ओकरा भला सोमरस के पान के का आवश्यकता? भुलाके भी पराई स्त्री पर बुरा नजर मत डालऽ । अपना इन्द्रियन के पाप करम में मत लगाव । हे भाई! ई सब कर के तू आपन पंथ के सुधार के ऊपर के तरफ बढ़त जइबऽ ।

दया के नाते कबो हे भाई ! जीव हिंसा मत कर । क्षुद्र से क्षुद्र जीव भी आपन जीवन ना गँवावे के चाहेला । सब प्राणी आपन करम के भोग भोगत ऊँचा पंथ के ओर आगे बढ़े के चाहेला अउर होखे लन । उनकरा के बीचे में मार के उनकर प्रगति में बाधक मत बनऽ ।

ऊ सारी रात बुद्ध कपिलवस्तु में विराजल पुरजन, परिजन, तथा समस्त समाज पर अखंड उपदेश के वर्षा करत गइलन । ओह रात केहुओ आपन पलक तक ना झपकावल । नींद अँखियन से कोसों दूर रहल मानों ई वसुन्धरा भी ईश वचन में डूब गइल रहे ।

जब बुद्ध के उपदेश समाप्त हो गइल तब राजा शुद्धोदन आगे अइलन अउर बुद्ध के चीवर माथा लगा के श्रद्धा से भरके शीश

झुका के बोललन, "हे बेटा!" फिर तनिक संभल के कहलन "हे दयामय ! हमरा के एगो क्षुद्र जन समझ आपन बौद्ध संघ में ले ल" अउर फिर यशोधरा आनन्द से भरल प्रभु से कहली, "हे मंगलमय! कृपा करके राहुल पर भी दया करके ओकरा के आपन उत्तरधिकार प्राप्ति खातिर 'उपसंपदा'* दीं, धर्म के दीक्षा देके इनकरो जीवन सुखमय बना दीं ।" एह तरह 'शाक्य' राजकुल के तीनों सदस्य राजा शुद्धोदन, यशोधरा अउर राहुल शांत-चित्त होके धर्म मार्ग पर अग्रसर हो गइलन ।

फिर तथागत बौद्ध धरम के सब अंग के विषय में, माई-बाप, बंधु, प्रियजन अउर इष्ट मित्र-सबका प्रति कर्त्तव्य के विस्तार से बतइलन । दैनिक व्यवहार कइसन होखे के चाहीं इहो समझा के बतइलन आउर गृहस्थ उपासक के धरम के सार तत्व समझा देहलन । अगर कउनों व्यक्ति तुरन्त इंद्रियन के बंधन ना काट सके, यदि ओकर पैर अशक्त हो अउर ऊ धीमा चाल से चलत होखे त ऊ संयम, नियम से दयापूर्वक धरम के निरवाह करत कल्मषहीन जीवन बितावे जेसे ओकरा पर पाप के आँच ना लागे । जे एह तरह से शुद्ध अउर गंभीर होके चली, दयावान, सुजान, श्रद्धावान, अउर धीर मत होके, अहंकार छोड़ के, सकल जीवन पर ध्यान दी, ऊ 'अष्टांग मार्ग' पर आपन पहिला पाँव राखी । जीव के जगत में जौन भी सुख-दुःख प्राप्त होला, ऊ ओकरा शुभ भा अशुभ के करम फल होला । जीवन में अउर कुछ नइखे । स्वर्ग त्याग के गृहस्थ जग में जेतना उपकार प्राप्त करेला, जब ऊ दूसर बार जीवन धारण करे ला तब ओतने सुख प्राप्त करेला ।

एक दिन जब बुद्ध वेणुवन के ओर जात रहलन तब उनकरा एगो निरमल गृहस्थ सुबहे-सुबह स्नान करत लउकल । ऊ बार-बार आसमान का ओर हाथ जोड़, शीश नवइले धरती के वंदना करत रहल । मुँह से कुछ बोलत रहे और फिर हाथ से कुछ अक्षत उठा

* बौद्ध लोग श्रमण या भिक्षु धरम के दीक्षा के उपसंपदा कहेला ।

के छितरा देत रहे । सब दिशा में अक्षत फेंक शीश नवावत जात रहे । तब बुद्ध ओकरा लगे जाके ओकरा से ई बात पूछलन, “हे भाई! तूं एह तरह से शीश काहे नवाँवत बाड़ऽ?” गृहस्थ उत्तर देलस, “करूणामय! हम रोज उठला पर पूजन करेनी । देवता लोग अउर आपन पितृजन के प्रति श्रद्धा अर्पण करके आपन कल्याण माँगेनी ।” तब जगदाराध्य कहलन, “तूं ए तरह से अक्षत काहे बिखेर देत बाड़? सब जीव के प्रति दया अउर प्रेम के प्रसार काहे नइखे करत? माई-बाप के पूरब दिशा मानऽ, जहाँ से ज्योति के उदय होला । गुरू के दक्षिण दिशा मानऽ, जहाँ से निधि प्राप्त होला । पुत्र अउर पत्नी के पश्चिम मानऽ, जहाँ शाँति विद्यमान रहेला अउर जहाँ से अनुराग रंजित दिवस के अवसान होला । बंधु, बाँधव और इष्ट मित्रन के उदीची मान के उनकरा पर भक्ति, श्रद्धा अउर प्रेम के विस्तार करऽ । क्षुद्र जीव के प्रति मन में दया भाव राखऽ । धरती माता एही तरह के पूजन चाहेली, जीवन से अउर कुछु इच्छा ना रखेली । स्वर्ग में जे देवता अउर पितृजन बसेलन उनकरा में भक्ति रखऽ । एकरा अलावें अउर कउनो विधान के जरूरत नइखे । अगर तूँ एह रीति से गृहस्थ जीवन में चलबऽ, त तोहार रक्षा होत रही अउर तोहरा मन में भय घर ना करी ।”

गृहस्थ जीवन के जइसन बुद्ध बौद्ध भिक्षुगण के कल्याण खातिर ‘सघं’ में भी धर्म-व्यवस्था के स्थापना कइलन । बौद्ध भिक्षु के तथागत आकाश में विचरण करे वाला पक्षी के भाँति जीवन जीये के सीख देहलन । जे तरह पक्षी आपन घोंसला छोड़ के अलग-अलग स्थान पर विहार करेला ओही तरह बौद्ध भिक्षु के भी विचरे के चाहीं ।

बुद्ध हिंसा, सत्य, व्यभिचार, मिथ्या भाषण, प्रमाद, अपराह्न-भोजन, नृत्यगीतादि, मालागंधादि, उच्चासन शय्या अउर द्रव्यसंग्रह के त्याग इत्यादि दशशील1 अउर स्मृति, धरम प्रविचय (पुण्य), वीर्य, प्रीत, पश्राब्धि, समाधि अउर अपेक्षा आदि सात

बोध्यंग2 सब के सिखवलन । असामान्य ऋद्धिपाद3 क्षमता के पावे खातिर ऊ श्रद्धाबल, समाधिबल, वीर्यबल, स्मृतिबल अउर प्रज्ञाबल रूपी पंचबल4 के भी समझवलन । ऊ मोक्ष प्राप्ति के आठ सुन्दर विमोक्ष5 सीढ़ी के बारे में भी बतइलन । ऊ चतुर्विद ध्यान6 के विस्तार से व्याख्या कइलन ।

1 दशशील–हिंसा, स्त्येन, व्यभिचार, मिथ्या भाषण, प्रमाद, अपराह्नन–भोजन, नृत्यगीतादि, मालागंधादि, उच्चासन शय्या अउर द्रव्यसंग्रह के त्याग ।

2 बोध्यंयग–स्मृति, धर्मप्रविचय (पुण्य), वीर्य्य प्रीति, पश्राब्धि, समाधि अउर अपेक्षा ।

3 ऋद्धिपाद–अर्थात् असामान्य क्षमता के प्राप्ति ।

4 पंचबल–श्रद्धाबल, समाधिबल, वीर्य्यबल स्मृतिबल अउर प्रज्ञाबल ।

5 अष्ट विमोक्षसोपान –

(i) रूपभावना के कारण बाहरी जगत् में रूप दिखाई पड़ेला ।

(ii) मन में रूपभावना ना रहेला तेहू पर बाह्य जगत् में रूप दिखाई पड़ेला ।

(iii) ना मन में रूपभावना रहेला ना बाह्य जगत् में दिखाई पड़ेला ।

(iv) रूपलोक अतिक्रमण करके अनंत आसमान के भावना करत 'आकाशनंत्यायतन' में विहार ।

(v) 'आकाशानंत्यायतन' के अतिक्रमण कर अनंत विज्ञान के भावना रखत 'विज्ञानानंत्यायतन' में विहार ।

(vi) 'विज्ञानांत्यायतन' के अतिक्रमण कर 'अकिंचन' (कुछ नाहीं) के भावना करत अकिंचन्यायतन में विहार ।

(vii) अकिंचन्यायतन के अतिक्रमण कर नैवसंज्ञानैवासंज्ञायतन (ज्ञान अउर अज्ञान दूनू के नाहीं) के भावना करत नैवसांनैवासंज्ञायतन में विहार ।

(viii) अंत में ज्ञान अउर ज्ञाता दूनो के निरोध कर 'संशावेदयितृ' उपल्बध–करावल ।

6. आठ विमोक्ष सोपानन में से तीसरा से साँतवाँ तक के चतुर्विध ध्यान कहल जाला ।

जे प्राणी इ क्षारसम भवसागर से पार हो पावेला ऊ अमृतो से बढ़ के मीठा फल पा लेला । मैत्री, दया-भावना, उपेक्षा, अउर मुदिता* अंग के भावपूर्वक धारण करऽ । आखिर में भिक्षुगण के शिक्षमाण** सारा रतन देके जगदाराध्य बोललन कि भिक्षु हमेशा बौद्ध धरम के त्रिरतन (बुद्ध, धम्म अउर संघ के शरण में जाइल) के धारण करके मध्यम मारग पर अग्रसर रहे । भिक्षुगण खातिर आचार-व्यवहार के सब नियम निर्धारित कइलन अउर उनका के बतइलन कि केह प्रकार ऊ राग अउर भोग-विलास से दूर रह पइहन । भिक्षुगण खातिर रहन-सहन, खान-पान अउर परिधान निश्चित कइलें । भिक्षु खाली तीन चीवर धारण कर सकेलें जेमे पहिला अन्तः वस्त्र, फिर ओकर ऊपर 'उतरासंग' अउर फिर 'संघाती' पहन सके लन । भिक्षु हमेशा आपन भिक्षा-पात्र अउर बिछौना साथ रखिहन अउर ओसे ज्यादा सामग्री के संग्रहण ना करिहन । एह प्रकार श्री तथागत बौद्ध संघ बनावत गइलन अउर संसार के कल्याण करत कइलन ।

परिनिर्वाण

बुद्ध कबो राजगृह त कबो वैशाली में घूम घूम के, त कबो श्रावस्ती अउर त कबो कौशाम्बी में कुछ दिन रह के लोगन के शिक्षा देत गइलन अउर संघ में शामिल करत गइलन । वर्षाकाल में एके जगह रहके लोग के उपदेश देहस अउर भूलल-भटकल लोग के

* मुदिता - संतोष

** मार्ग, ऋषि, बल आदि सब मिल सप्तत्रिंशच्छिक्षणमाण धर्म कहाला

मध्यम मार्ग देखा के उचित मार्ग पर ले अइलन । ऊ आपन अधिकतर समय श्रावस्ती स्थित जेतवन में बितवलन और उहाँ लोग के धरम के सार समझइलन । पैंतालीस चौमासा* (वर्षो) पर्यन्त अनवरत रूप से ऊ लोगन के एह वसुन्धरा पर धरम तत्व बतावत गइलन । उनकर दिव्य प्रकाश से एह संसार में अइसन उजियारा फइलल कि ऊ सब देशन के कल्याणकारी मारग देखा गइल । एह संसार के आधा मनुष्य आपन हृदय में आजो उनकर ध्यान करेलन अउर उनकर आभा से ई सारा जगत अलौकिक बा । जब उनकर आपन अंतकाल नजदीक लउकल त बुद्ध एक दिन आपन सब शिष्यन के साथे लेके पावापुरी पहुँच गइलन । चुंद नाम के कारीगर के घर कृपा करके ऊ भोजन ग्रहण कइलन । उहाँ से रोग ग्रस्त भइला पर कुशीनगर अइलन अउर उहाँ दूगो शाल वृक्ष के बीच में शय्या डाल के लेटल रहलें । घोषणा कइल गइल कि बुद्ध शरीर त्यागे वाला बाड़न । एह से दूर-दूर से शिष्यगण, भिक्षु आ गृहस्थ उनकर दर्शन खातिर आवे लगलें । एगो गृहस्थ आखिरी शिष्य के रूप में प्रश्न कइलें अउर आपन प्रश्न के उत्तर पाके भिक्षु बनलें । सब भक्त दर्शन पाके शांत चित्त हो गइलें । तब तथागत महापरिनिर्वाण में लीन हो गइलें अउर एह संसार के त्याग दिहलें । ऊ मनुष्यन में मनुष्य के समान रहलें अउर सबके सही मार्ग देखावत गइलें । आखिर में ऊ परम शून्य में सहज रूप में समा गइलें ।

एह प्रकार जगदाराध्य तथागत के ई चरित्र-गान, जेकर हम अब तक गुणगान कर तानी, पूरा भइल । हमरा उनका विषय में अल्पमात्र भी ज्ञान नइखे, अउर कथा कइसे कहल जाला ईहो नइखीं जानत । फिर भी, भक्तिवश हम ई कथा कहे के साहस कइले बानीं । हम एमें आपन गलती के सहज भाव से स्वीकार करत बानीं ।

* बौद्ध भिक्षु वर्षा या चौमासा भर एके स्थान पर रहे लन

हमार एह अल्पबुद्धि के त्रुटियन के सामने तथागत के चरित्र अवर्णनीय बा । एह से हम आपन त्रुटि खातिर क्षमाप्रार्थी बानीं । हम उनकर दया पर आश्रित बानीं ।

बुद्ध शरणं गच्छामि, हम बुद्ध के शरण में जा तानी !
धम्मं शरणं गच्छामि, हम धरम के शरण में जा तानी !
संघं शरणं गच्छामि, हम संघ के शरण में जा तानी !

बूँद कमल के पत्ता पर पड़ल बा । हे सूर्य देव ! आपन तेज से ओ पर्ण के उठा दीं, ओके लहर से मिला दीं ।

ऊँ मणिपदमे हुं ! सूर्योदय भइल ! ओस के बूँद चमचमात महासागर में समाहित हो गइल ।

हृषीकेश शरण

जन्म बेतिया, पश्चिम चंपारण, बिहार । पटना विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त कइलें । 1975 में भारतीय राजस्व सेवा (केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क) में प्रवेश कइलें । कलकत्ता विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. के डिग्री हासिल कइलें अउर ऑपरेशनल रिसर्च सोसाइटी ऑफ इण्डिया से ऑपरेशनल रिसर्च में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा प्राप्त कइलें ।

1994 में कैलास मानसरोवर यात्रा के यात्री दल के नेतृत्व कइलें । इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से हिन्दी में सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा प्राप्त कइलें । विभिन्न पदन पर आसीन रहला के बाद महानिदेशक, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क के पद से सेवानिवृत हो गइलें । अब मुम्बई में लोकपाल के पद पर आसीन बाड़े ।

पिछला 34 वर्षो से बुद्ध के शिक्षा से जुड़ल बाड़े । कालेज के दिन से ही थियोसोफिकल सोसाइटी के सदस्य बाड़ें । बुद्ध के जीवन एवं शिक्षा, होलिस्टिक मैनेजमेन्ट एवं अन्य विषयन पर संपूर्ण भारत में व्याख्यान देला के अलावा युगाण्डा, केन्या, तंजानिया, जाम्बिया, निदरलैण्ड, आस्ट्रेलिया, सिंगापुर अउरी भूटान में भी व्याख्यान दे चुकल बाड़ें । 2007 में सर एडविन ऑरनाल्ड के किताब "लाइट ऑफ एशिया" के हिन्दी पद्यानुवाद "जगदाराध्य तथागत" के रूप में कइलें । 'एशिया की ज्योति' किताब दिसंबर, 2009 में प्रकाशित भइल जे 'लाइट ऑफ एशिया' के गद्यानुवाद ह । संपूर्ण सचित्र धम्मपद : गाथा अउर कथा के विमोचन महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया के तत्वाधान में 2010 के बुद्ध पूर्णिमा के दिन कोलकाता में कइल जा चुकल बा । कैलास मानसरोवर यात्रा पर संस्मरण भी लिखले बाड़ें । दिसंबर, 2010 से 'हमार टी.वी.' (भोजपुरी चैनल) पर 'बुद्धं शरणं गच्छामि' नाम से बुद्ध के शिक्षा और संदेश जनमानस तक बाँटे खातिर प्रयत्नशील रहलें । प्रस्तुत पुस्तक "लाइट ऑफ एशिया" के भोजपुरी अनुवाद ह ।

“Wherever the Buddha`s teachings have flourished,
either in cities or countrysides,
people would gain inconceivable benefits.
The land and people would be enveloped in peace.
The sun and moon will shine clear and bright.
Wind and rain would appear accordingly,
and there will be no disasters.
Nations would be prosperous
and there would be no use for soldiers or weapons.
People would abide by morality and accord with laws.
They would be courteous and humble,
And everyone would be content without injustices.
There would be no thefts or violence.
The strong would not dominate the weak
And everyone would get their fair share.”

THE BUDDHA SPEAKS OF
THE INFINITE LIFE SUTRA OF
ADORNMENT, PURITY, EQUALITY
AND ENLIGHTENMENT OF
THE MAHAYANA SCHOOL